रामभरोस कापड़ि ‘‘भ्रमर’’क

किछु नाटक

# महिषासुर मूर्दाबाद

**(एकल नाटक)**

पाश्वमे जीवनक सहजता देखाओल जा सकैछ। सभतरि लोक काज मे लागल अछि, मुदा समाजक दुश्मन मौकक ताकमे रहैत अछि आ अपहरण, बलात्कार, कालावाजारी करैत अछि। ताहीवीच एकटा खून भ जाइछ। ई ओहने समाजक दुश्मनक खून भेल रहैछ। पाश्वमे हतया, खूनक शोर होवलगैछ। मंचपर पर्दा हटैत अछि, प्रकाश युवक - १ के हात पर पहिने परैत अछि, तत्पश्चात, प्रकाश युवकक सम्पूर्ण देहपर परैत देखल जाइछ। युवक - १ दुनु हाथमे लागल सोनितके निहारैत अछि। विस्फारित नेत्र सँ देखैत मुहक आकृति वनवैत विगाडैत अछि।

युवक - १ : (स्वगत हाथके देखैत) खून सँ डुवल ई हमरो हाथ थिक ?
पार्श्वस : ककर लगैछौ ?
युवक - १: (आश्वस्त होइत) ह, हमरे हाथ थिक। मुदा इ खून सँ भरल ?
पार्श्वस : ह, सोनित सँ भरल अछि। एकर परिणाम जनै छिही ?
युवक - १ : तैयो अहा हमर पछोड किए घएने छी ?
पार्श्वस : किएक त हम तोरा सँ अलग नै छी।
युवक - १ : अलग नै छी....(विस्फारित नेत्र सँ) माने, अहां कतौ पलिसके आदमी त नै ?
पार्श्वस : नै रे मुरख। हम पुलिस रहितहु त तो हवालातमे वन्न रहिते।
युवक-१ : हवालात ! (कनेकचुप्पी) नहि....सत्य-सत्य वाजू अहां छी के ?
पार्श्वस : हम.....?
युवक-१ : ह, अहां ....?
पार्श्वस : हम तोहर आत्मा छियौ, आतम पुरुष।
युवक-१ : (आश्वस्त होइत)। (कनेक चुप्पीक सँग एक ठामवैसि रहैछ। मुदा ई जिज्ञाशाक अर्थ ?
पार्श्वस : मात्र तोरा सचेत कराएव।
युवक-१ : ओह........।
पार्श्वस : तए नै पुछलहु अछि, परिणाम वुझ छौक ?
युवक-१ : नहि, हमरा किछनै वुझल अछि। हमरा जे करवाक छल कऽ देलिऐ।
पार्श्वक : एकर माने छौ तो ककरो हत्या कयने छहीक।
युवक-१ : (पुनः चौकिकऽ) हत्या। (किछु विचलित भ') ह, हम हत्या कयलहु अछि।..... एखने टटके।
पार्श्वस : आव की हयत से वूझल अछि ?
युवक-१ : हम मरनिहार दे नै, तोरा दे कहै छियो।
युवक-१ : (विस्मयसं) हमरा दे। आव हमरा की हयवाक अछि।
पार्श्वस : (जोरसं ठहक्का) आव तोरे होयवाक छौ।
(कातर नजरिसं चकुआइत) नहि, आव हमरा किछुओ नै भऽ सकैए।
पार्श्वस : आव तोरा फांसी हयतौ।

(पृष्टभूमिमे फांसी शब्दक इक्को गुज लगैछ।)

युवक-१ : (ठामे वैसैत) नई। हम मरऽ नहि चाहै छी।
पार्श्वस : (पुनः ठहक्का) ह, एहिना लोकके खून करैत रह, आ जीबाक सपना-देखैत रह।
युवक-१ : नई, नई। हम फासीपर लटकऽ नहि चाहैछी। एखन हम जीअ चाहैछी।
पार्श्वस : (गम्भीर स्वर) कीन्नहु नहि। केओ ककरो हत्या कक जीवि नहि पौलक अछि।

युवक-   : तखन ?
पार्श्वस   : तखन तोरो मरऽ पडतौ। फासी पर तडपि तडपि।
युवक-१  : (शान्त स्वरमे) हमरा मरलासँ एहितरहक अराजकता जे किछु काल पूर्व देखल से वन्न भऽ जाएत ? नई। ते हमरा कहुना बाचऽ पडत।
पार्श्वस   : वाह, वाह, एहिना मारैत रहु आ जीवाक इच्छा जगौने रहु। खूव, वहुत खूव।
युवक-१  : (सशंकित भ') तखन ? (पाश्वमे पुनः फांसी शव्दक पुनरावृति किछु कालधरि)
युवक-१  : वस करु। हम कीन्नहु मरऽ नहि चाहै छी।
पार्श्वसं   : जखन मरवासँ एतेक डर छलौ त हत्ये किए कैले ?
युवक-१  : (रोषसँ) के कहैत अछि, हमरा मरवास डर अछि ?
पार्श्वस   : (आश्चर्य मिश्रित स्वर) आहिरे। तोही वजै छै ?
युवक-१  : हम ? नई, की हम कहलहु अछि जे हमरा मरवास डर......।
पार्श्वस   : (वातके लोकैत) तो तँ बजै छे हम फाँसी चढ नहि चाहै छी। एकर की माने भेलै ?
युवक-१  : एकर माने ई त नहिए भेलै जे हम फाँसीसँ डेराइत छी।
पार्श्वस   : तखन ?
युवक-१  : हम एखन किछु दिन मर नहि चाहैछी।
पार्श्वस   : किए ?
युवक-१  : (शांत स्वरमे) जाहि कारणसं हम ई पहिल हत्या कयलहु अछि ओ पूर्ण नहि भैल अछि। एकटाके मारिते बहुतो जनमि कऽ ठाढ भऽ जाईत अछि।
पार्श्वस   : की माने ?
युवक-१  : माने साफ अछि। एहि समाजमे कुण्डली मारने वैसल विषय साप सभक फनके थकुचवाक हमर अभियानक ई पहिल शिकार थिक। एखन त सयौं एहन विषधर खुशफैलसं घुमि रहल अछि।
पर्श्वस   : त तोहर माने एखन तनोसभक आओर हत्या करवही ?
युवक-१  : (प्रशन्न होइत) ह, आब अहा बुझलिऐ।
पार्श्वस   : मुदा सिपाही, कानून तोरा छोडतौ ?
युवक-१  : (ठहक्का लगा हसैत) सिपाही, कानून !
पार्श्वस   : डर नहि लगैछौ ?
युवक-१  : ककरा सँ ? कानून सँ ?
पार्श्वस   : हँ कानूनस। आइ नै काल्हि त पकडवे करतौ।
युवक-१  : नहि, किन्नहु नै पकडि सकत। हमरा अपन अभियानके जारी रखवाक अछि। तए कानूनो सँब च पडत।
पार्श्वस   : कतेक दिन धरि........?
युवक-१  : ता धरि जा धरि समाजक समस्त महिषासुरके छाती चीरि कऽ सोनित हम पीवि नै लेवै।
पाशर्वस  : (चट द) तावत त हाहाकार मचि जएतै।
युवक-१  : मचिजाउ ! पापक घैल भरि गेने ओकरा फुटव नीयति छै। केओ त ओहि घैलके फोडवाला आगा आओत। (पार्श्वमे चुप्पी)

आनक वहु बेटीके इज्जत लुटनिहार, पाँचसय टकाक मूरिके पाँच हजार बना घराडी समेत छिनि लेनिहार, जुआन बेटीक पीडा भोगैत बापक नोरपर हँसनिहार, गरिवीक दर्दके महज मजाकक बस्तु बना अपन शानोशौकत देखौनिहार नरपिशाच सबके आव सुत पडतै।

पार्श्वमे (चुप्पी) हमरो बापके एहि दुवारे मरि जाए पडलै जे ओ महाजनक टका सधा नहि पौलक आ बोखारोमे खेतमे काम करवापार वाध्य कएलगेल, भुखले पिआसले बोखारस थर थर कपैत हमर बाप.....की एहि दुआरे दायाक पत्र नहि छल जे ओ जानिक चमार रहय....अछूत नीच ।

पार्श्वमे (चुप्पी) आब मुह किए बन्न गेल । बाजू नै । की अपराध रहै हमर पिता बटोही रविदासके जे जेवीमे धयल गोटीयो नै खा सकल पानिक अभावमे । हमर छोडि नै सकैत छल आ केओ पानि आनि क दतै नै । ठामे अररा कऽ खेतमे खसि पडल रहै ..... बाजू छै ओहन दुराचारी शोषकके जीवाक अधिकार...?

पार्श्वस : मुद्दा तैयो कानून त कानून होइछै ।

युवक-१ : (रोषस) कानून कानून कानून । एही कानूनक आडमे त ओ चण्डलवा सभ अपन कुकर्म करैत अछि । केहनो अपराधमे सवूतक अभावमे साफ वचि निकलि जाइत अछि । एहन के लेल आव एहने निसाफक जरुरति छै ।

पार्श्वस : जे काज कानून करैत ओ तो कऽ कऽ अनेरे फँसी पर लटकि रहल छे ।

युवक-१ (पुनः उतेजित भऽ) नहि, हम फासी पर नहि लटकि रहलछी आ लटकवो नै करव । पहिने समाजमे छिडिआएल एहि महिषासुर सभके सुडाह कऽ देवै, तकरा वाद देखल जएतै ।

पार्श्वस : से कानून कर देतौ तखन नै ।

युवक-१ : कर किए नै देत । अन्याय, अत्याचार, शोषणक विरुद्ध हमर लडाईसँ हमरा अहाके कानून रोकिनै सकत आव ।

पार्श्वस : कतेक अत्याचारकिे तो सुडाह करबही । ई त रक्तवीच सभ अछि । एक्के कटिते फेर दोसरो जीविकऽ ठाढ भऽ जाएत । कतेकके गरदनि छोपबही ? कतेकके....कतेककके ('कतेकके' शब्दक प्रतिध्वनि कनेक काल गुँजैत अछि ।)

युवक-१ : (आश्वस्त भऽ) हँ, त अहाँ बुझलहुँ नै जे अत्याचारी शोषक, विघर्मी सभ रक्तवीजक जनमल अछि । कटिते जनमि उठैत अछि महिषासुर जका, तएने हमरा अहाँसँ सहयोग चाही ।

पार्श्वस : सहयोग ? हमरासँ । कोन तरहक ?

युवक-१ : वस, अहाँ सभ हाथ वढा कटोरी जका गोल कैने जाउ आ हम महिषासुरक गरदनि छकरैत छी, अहाँ सभ ओकर सोनित अपन हाथक कटोरीमे लोकी लिअ । (पार्श्वमे चुप्पी) कीएक त जौं रक्त स पुनः जनमि ठाढ हयवाक भय नहि रहत त वहुतो हमरासन लोक तरुआरिकलऽ आगा कूदि पडत । लेहुलेहुआन भऽ जएतै महिषासुर सभ ।

पार्श्वम : (चुप्पी)

युवक-१ : बुझल नहि अछि, अत्याचारी महिषासुरक दमन करवाकलेल देवता सभक संयुक्त शक्तिक रुपमे माँ दुर्गाक उदय भेल रहे । आ वन्धु सभ ! अहाँ सभक संयुक्त शक्तिसँ उदय हतैक आत्म बलक दुर्गा आ सहारकऽ देत महिषासुर सवके ।

पार्श्वस : बात त ठीके छै ।

युवक-१ : तखन चलू हमरा सँग । वरु हम चहरि जाएव फाँसी पर हमरा कोनो दुखो नहि हयत । ह कम सँ कम एकटा वाट जे वनि जएतैक ताहिसं प्रत्येक महिषासुर पुनः जनमबाक चेप्टो नै करत । आउ हमरा सभक कालवनि महिषासुर छाती पर ठाढ भऽ जाइ । (युवक-१ क पाछासं समान पहिरन ओढने दुनुकातसँ तलवारक सँ क्रमशः एक एक कऽ दू युवक वहराइत अछि । एहि वीच पार्श्वसं त्राहिमाम त्राहिमामक स्वर अनुगुँजित होइत रहैछ ।)

युवक-१ : (अनेक कालक चुप्पी) लगाउ हमरा सँग नारा....।

दुनुआकृतिः ठकि छै । लगाउ नारा.....।

युवक-१ : महिषासुर........।

आकृति : मुर्दावाद ॥

एकरा कनेक काल दोहराओल जाइछ । प्रतिछाया आकृति पुनः पूर्ववत् एक्केमे समाजाइछ । प्रकाश क्रमवद्ध वन्द होइत अन्हार भऽ जाइछ ।

# सुरुज उगबासं पहिने

**दृश्य-१**

एकटा निम्न आयवर्गक घरक अंगनाई । फुसस छारल ओसारा पर दहिनकात घैलची । जाहिमे सम्भवतः भरल पानिक घैल । वामकातक ओसारा पर गौनैर गुरियाकऽ धयल । घरक वाम दिश एकटा आर फूसक घर देखि पडैछ, जकरा पाछाक अतिरिक्त कोनो टाट लागल नहि । घरमे दूटा बकरी आ तीनटा छोटछीन बच्चा, यिकछु घास-फूस । घरक दहिनकात टाटक घेरा जे आंगनके घेरवा लेल लगाओल गेल रहैछ । ताहिमे आंगन प्रवेशक एकटा दरबज्जा खूजल ।

एकटा अघेर पुरुषक प्रवेश । जेना थाकल-भमारल हो ।

पुरुष-१ : (जोरसँ हाक पाडैत) ऐ, कत गेली ?

दुनू हाथमे माटि लगौने महिला घरमेस वहार अबैछ ।

महिला-१ की बात है ? एना कैला हबे ?

पूरुष-१ : अहाँके हाथमे ई माटि !

महिला-१ : हँ, कनी वीछनके धान रहै, तकरे कोठीमे धऽकऽ लेबैत रहिऐ । सब नीक नाहित है ने ।

पूरुष-१ : (बकरी घर दिश राखल टुटलहा बाँहिबला खुरसीके घीचि आगनमे लऽ अबैछ । तावत महिला घैलचीसँ एकटा लोटामे पानि ढारि हाथ धोव लगैत अछि ।)

पुरुष-१ : (खुरसीपर बैसैत) : आब त गाममे चलव कठिन भऽ गेल ।

महिला-१ : (हाथ धोयत) से कैला ?

पुरुष-१ : अही रछसबाके खातिर ।

महिला-१ : (धोएनाई छोडि) कनी फरछाउने ।

पुरुष-१ : अहाँके सुपुतर आब नाक कान कटाकऽ छोडत ।

महिला-१ : (पुनः हाथ धोइत, मुस्कियाकऽ) धुत ! कहु अशोकबाक मौगी है से नाक कान कटौत । हमरा त बेटो तेहने आफत भऽ गेल है ।

महिला हाथ धोकऽ नूवामे हाथ पोछैत ओसारापरक गौनैर खुरसीक बगलमे धऽ ओहि पर बैसि रहैत अछि ।

हम ठीके कहैछी, अशोकबा माय । ई छौडा त बड मुश्किल करत ।

महिला-१ : (साकांक्ष भऽ) आखिर बात भेलै की ?

पुरुष-१ : (दीर्घ निसांस छोडैत) की कहु ! आइयो कहादुत गौछलीमे दारु पीवि कऽ औघरायल छल ।

महिला-१ : गे माई गे माई ! एना नै होतै ! हमर बेटा एना नै कैने होत ।

पुरुष-१ : (कनेक खिसिया कऽ) त जे देखलकै से झूठ भऽ गेलै ?

महिला-१ : (फेर डपटि) चुपु ! अहीके दुलार ओकरा बीगाडि देलकै । जहिया कहियो डपटैत रही त चिचिआ उठी-एकेटा बेटा है, कर दियौ जे करै है । आ आई........।

महिला-१ : हमरा नै लगैए, अशोक दारु पीब कऽ औघरायत । उ त दारु नै पीवैअ ।

पुरुष-१ : अहाँ केना जनै छिए जे ओ नै पीबैए ?

महिला-१ : माइ त बेटाके मुँह देखक' ओकर सबकुछ बुझ्फ सकै हैने ।

पुरुष-१ : तखन अहाँ फेल भ गेली । अहाँके बेटा दारु नै गजो-भाग पीवैअ ।

महिला-१ : (चिहुकिकऽ) चुपु ! अही जखन आगि उठबै छिऐ त आनलोक कथी कहैत होतै ।
पुरुष-१ : हम बुझै छली अहाँ हमरो बात नै मानब । तैसने, एतेक दिन स बात पेटमे धएने रही । आइ नै रहल गेल त बाजही पडल ।
महिला-१ : (आविश्वासस) नै, हमरा त मन नै मानैए । अशोक ऐतेक नीचा खसि पडत । लोक चुगली लगाब चाहैत होतै ।
पुरुष-१ : लोकके चुगली लगौने फायता ?
महिला-१ : हमर बेटा कविल है । लोक बीगार' चाहैय ।
पुरुष-१ : (दीर्घ निसांस छोडैत) हुँ, काविल ।
कुरसी सँ उठि आंगनमे टहल लगैछ । एक चक्कर लगाकऽ रुकि जाइछ । आइ बी.ए. पास भेला आठ वर्ष भऽ गेल । पाँच पाइके नोकरी ने कऽ भेलैए । आ काविल है कहाँदुन ।
महिला-१ : (उठैत) त की नोकरी अपना वसके बात है । की-की फीरशानी ने उठौलक । की वैसल है छौरा ?
पुरुष-१ : भेटल नै रहै ? केहन चिक्कन नोकरी भेटल रहै । दुइओ मास टीक सकल ?
महिला-१ : (रोषस) फेर ओइ नोकरी के बात उठैली । अहाँ जनै नै छिए, ऊ कैला छोरलक उ नोकरी ?
पुरुष-१ : जनै छिऐ । लेकिन हम पुछैछी आब दोसर उपायो की छै पेट भरके ।
महिला-१ : (आँखिमे नोर भरि अबैछ) हे, भगवान, ई की सुनबैछा । जिनगी भरि दू हजार रुपैया मे घीघरी काटीयो कऽ उपरका आमदनी के आशा नै करबलाक मुहसं की सुनवैछा ।
पुरुष-१ : (भावुक भऽ) अशोकवा के माय, हमर बात दोसर रहै । पेटो काटिकऽ बाल-बच्चाके पालि लेलिऐ । आब से नै भऽ सकतै ।
महिला-१ : होतै कैला नै । हमर बेटा भुखे मरि जायत, हम सभ भुखे रहिलेब, लेकिन बेटा के हम नै कहबै सरकारके आखिमे गरदा झोक्किऽ समान के एमहर सं उमहर हटाब ला ।
पुरुष-१ : कनीक धीरज स सोचियौ, सरकार के के नै चोर है । देखू इमान्दारीके इनाम । एकटा फूसघर स दोसर नै बना सकल छी तै पर महाजनी के तगेदा । घरो घडारी बेचला पर सधत ?
महिला-१ : तैसकी ? हमर बेटा मालिक के खातिर अपन इमान बेचो ! असली के नाम पर नकली दवाई वेचो । गाजा-हफीम-चरस बेचो । नै-नै-नै ।
महिला थच्च दऽ गौनेर पर बैसि रहैत अछि । दुनु हाथे माथ पकडि हाफ लगैत अछि । पुरुष-१ सेहो गोनैर पर वैसि रहैछ आ महिलाक पीठ पर हाथ धऽ ठाढस वन्हव लगैछ ।
पुरुष-१ : अशोकक माय ! अहाँ मे वैस कऽ सतयुग के बात करैछी ।
महिला-१ : मुदा से सतयुग मे रहके लेल के सिखौने है हमरा सभके ?
पुरष-१ : (गुम्म भऽ जाइछ जेना शून्य आकाशमे दृष्टि गडादैछ ।)
महिला-१ : बाजू, अशोक के बाबू । हम सभ आइयो सतयुग के सपना कैला देखै छी ? की हम नै देखै छी, काल्हि पीउन-मुखिया के नोकरी धयलक आ आइ वगला पीटि लेलक । हम सभ आन्हर छी, संगे नाकेरी कैने जलील मिया दुनू बेटाके डाक्टर आ इन्जिनियर बना लेलक । अही के गोधिया रहे नै राजीन्दर, बेटी के विवाह केहन कैलके-पाँच लाख स उपर के खर्चा रहै । (चुप्पी)
पुरुष-१ : (ओहिना निर्विकल्प आकाशमे देखैत रहि जाइछ ।)
महिला-१ : हम इहो भोगैछी अशोकक बाबू । अहाके पेन्सन पर घरो चलायब जखन कठिन है तखन महाजनके कर्जा कत सं देबै । आ तैस वेर-कुवेर बेइज्जत होइ छी । सब सहै छी ।
पुरुष-१ : (गुम्म भेल बैसल अछि ।)
महिला-१ : मुदा तैयो हम सभ दुखी नै छी । एहनो मे हसिकऽ जीवाके हम सभ अहीसं सीखने छी मुखिया साहेब । (हिचुकऽ लगैछ)
पुरुष-१ : विचलित भ उठि जाइछ । टहल लगैछ ।)

महिला-१ : (आँखि सं नोर खसैत) आइ जं हमर बेटा दारु पिविकऽ कतौ ओघरायल अछि त तकर कारण अहा हमरा सं किए पुछै छी । अहां अपना स नै पुछि सकै छी ?

पुरुष-१ : (चिचिआकऽ) वस करु अशोकक माय, वस करु । आब नै सुनल जाइए एक्कोटा बात ।

पुरुष-१ : (धरफराकऽ खुरसी पर बैस चाहैछ, मुदा निचा खस' लगैछ ।)

महिला-१ : (उठैत पतिके पकडैत-सम्हारैत) अहाँ ठकि सं वैसू । (कनेक कालक चुप्पीक वाद) आबो त कलमुहे । हम दारु पीब कऽ ओघरैनाई छोडा दै छिऐ ।

**अन्हार**

**दृश्य-२**

दृश्य पूर्ववत् । आंगन मे चारिगोट यूवकक प्रवेश । युवक-१ किछु आगा बढि हल्ला करैछ - माय गे माय । कोनो उत्तर नहि सूनि निराश भऽ जाइछ ।

युवक-१ : (आन संगी स) भाइ, लगै छौ, माय नै हो । देख, आइ एतेक दिनपर हमरा घरेअयबो कयले त हम चाहो ने पिआ सकलियौ ।

युवक-२ : छोड-छोड, चाह-ताह । आ, काकी नै छथुन्ह तावत एक-दू हाथ भऽ जाए । युवक-३,४ जल्दी सँ ओसारा परक गोनैर उठा कऽ आंगनमे वीछा दैत अछि । तिनु जल्दी सँ ओइ पर बैसि जाइछ । युवक-१ एखनो आंगनमे एककात चुप चाप खडा अछि ।

युवक-२ : आ न यार । कका-काकी जावत नै छथुन्ह, एक दू हाथ भ जाएमे कोन अन्हेर भ' जएतै ?

युवक-३ : की होतै, गोलखाडी कि पपलु ।

युवक-४ : हे, गोलखाडीए चल दही । वड मजा अबै छी ।

युवक-२ तास नीकालि वाट' लगैछ । युवक-१ एखनो ओहिना ठाड अछि ।

युवक-३ : भाइ अशोक, हद भ गेलै । हम सभ तासो बाटि चुकल छी आ तो माटिक मुरत जका ठाडे छे । आ, जल्दी बैस ।

युवक-१ : (मना करैत) नै भाइ, हम नै खेलबो । तो सभ जनै छे हम टवेन्टी अइट छोइडकऽ आर किछु नै खेलै छी ।

युवक-२ आ ओइ दिन ?

युवक-१ : एही शर्त पर जे पाइके खेल नै होतै, तखन खेलने रही हम ।

युवक-२ : दुत् । तब त मजे किरकिरा भ' जएतै । आइ त हमर हाथ हौआइए । पता नै की होतै ।

युवक-१ : भाइ, समेट ई सभ । आयल छे त बरु कनेक काल आरो वैस । माय अविते होतै । चाह पीव कऽ जो ।

युवक-२ : नै, हम त एक हाथ खेल आयल छली ।

युवक-१ : एहने जीद कऽ कऽ काल्हि किछु वेसी चहरि गेल छल । गौछलीमे आंखि झपा गेल । कोइ देखने होत की कहने होतै । किछु सोचलही ?

युवक-२ : यार बाबाजी । नै तो जुवा खेल' सकैछे, नै दारु पीव' सकैछे, नै ककरो देह मे सटि सकैछे, तखन छे किएक ।

युवक-१ : भाइ, जहिया ई बात बूझि जएबही, तोहू हमरो सन भ जएबे ।

युवक-३ : नहि, एहन श्राप नै दे । तोरा जकाँ आदर्शवादी बनिकऽ भीक्खड बन स नीक समय के साथ चलब आ खुब मौज करब ।

युवक-२ : ठीके कहै छौ भाई । आठ वर्ष सँ वौआइत छे, किए नै भेटै छौ कोनो काज ?

युवक-१ : (सहटि कऽ गोनैर पर वैसैत) जखन तालिम छै त आइ नै काल्हि भेटवे करते की ।

युवक-२ : तालिम । रौ बूडिबक !! तालिम के धो धो क' चटैत रह । तोहर पाछाके लोक आइ कतेक आगा बढि गेल छौ, पता छौ ?

युवक-१ : सभ पता है ।

युवक-२ : खाक पता छौ। किसुनमा के कोन तालिम छै। आइ मोटर साइकल चढै है। एक साझ मे सय-दू सय फूकि दै छै। कत स अबै है ?
युवक-१ : त से हमरा नै चाही जहिया होतै नोकरी , तहिया तक रस्ता देखबै।
युवक-२ : हम सभ जनै छी । तोरा पर दोसर रंग नै चढतौ । काकाक रंग जे एक बेर चहरि गलछौ ओ जल्दी नै छुटतौ।
युवक-१ : तो सभ जे कही । (एम्हर ओम्हर तकैत) लगैए, माय कतौ आन ठाम चलि गेल छै। युवक सभ उठैत अछि।
युवक-२ : अच्छा भाई। वेरियामे आइ भागके भोज छै। दलाने पर चलि अबिहे। हम सभ एखन जाइ छी, गौछली मे इन्तजार होइत होएतौ

युवक-१ सेहो उठिक' जाइछ। युवक सभ के वहार होइत एकटक्क देखैत रहैछ। तखने महिला-१क प्रवेश। मायके देखिते युवक-१ चौकि उठैछ।

युवक-१ : से त अएबे कयले। सब चलि गेलै तब।
महिला-१ : तोरा स त बाजके मन नै करैअ।
युवक-२ : (दुलार स) कैला माय। की अपराध हम कैलियौ गे।

महिला हाथ महक कोनो वस्तु घर मे ध' अबैत अछि। फेर निचैन स आंगन मे राखल खटीया पर बैस जाइत अछि।

महिला-१ : बौआ, की अही दिनला तोरा पर आशा कैने छली ?
युवक-१ : (जेना किछु ज्ञात नहि हो) माय, एना कैला वजै छे। की भेलैए ?
महिला-१ : बाप कहै छलौ-तो कहादुन गौछली मे ओघरायल रही

युवक-१ क चेहरा पर डर देखि पडैछ।

मारे डटैत रहे हमरा।

युवक-१ : माय।
महिला-१ : (बात के लोकैत) पहिने ई कह, ठकि तो दारु पीब कऽ ओघरायल रही ?
युवक-१ : ओघरायल त रही, मुदा दारु पी कऽ नै।
महिला-१ : (तनिक रोष सँ) झूठ बजै छे। तो आब दारु पीब लागल छे।
युवक-१ : माय, हम तोरा स झूठ नै बजि सकैछी। हमरा पर विश्वास कर।
महिला-१ : (कनेक चुप्पी) त तो भांगो किया पिले ?

युवक-१ किछु ने बजैछ।

पता छौ, तोरा बापके कतेक दुख भेल छौ। ओकरा त लोक दारु के नाम कहिदेने छै।

युवक-१ : ई हमर संगतिके कारणे भेल होतै।
महिला-१ : संगत के कारणे ?
युवक-१ : हं माय। हमर संगी सभ दारु पीबै छै, गाजा पीबै छै। चरस-हफीम सब खाइ है।
महिला-१ : तोहुँ खाइते हयबे ?
युवक-१ : सेहे त कहै छियौ। लोक ओकरा संगे बैसल-उठल देखै है त एहिना बुझि लैहै।
महिला-१ : तखन ओकरा सभके स.गत छोडि दे।

युवक-१चुप्प अछि।

जै संगतमे रहने नीकके बेजाय होए तकरा तेज देबके चाही।

युवक-१ : तखन जाउ कत्त ? सभ त काम-धाम करैए। जेना तेना पाइ कमाइए। ओकरा सभके बीचमे वैसलास त आओर दुख होइअ।
महिला १ : तैयो।
युवक-१ : तैयो की। हम संगते मे छी त की ओकर लत सभ पोसने छी। उ अपना लऽ कऽ हम अपना लऽ कऽ

महिला : (अविूवास स) त ठीके तो एम्हर ओम्हर.......।
युवक-१ : हमरा पर विश्वास कर माय । हम कोनो लत नै पोसने छी । (चुप्पी) आइ आठ वरीस स अफिसे-अफिसे आ दोकाने-गदीए घुमैत घुमैत थाकि जरुर गेल छी ।
महिला-१ : वौआ ।
युवक-१ : ह, माय । हम थाकि गेल छी । बूढ बापक पेन्सन पर इ घून लागल जुवान देह पालबा पर विवश छी ।
खटिया सँ उठि जाइछ ।
आदर्श, इमान आ धर्मक पालन करबाक गुण हमरा विरासत मे मिलल अछि ने । त सहबाक क्षमतो ओत्तहि सँ भेटल अछि ।
आकाशमे नजरि टिका ।
हम बहुत किछु सहि सकैछी माय, मुदा घुन लागन जुवानीक पीडा नै सहल जाइए ।
महिला-१ : (उठैत आ युवक १ के सम्हारैत) ई की बजैत छे वौआ । आइ नै काल्हि त काज भेटवे करतै । निराशक कोन बात छै । (चुप्पी) चल कलौ खाले ।
तावत घरक पछौत सँ पुरुष-२ क आवाज सुनि पडैछ ।
पुरुष-२ : (पार्श्वस) गणेश छै रौ । गणेशी ?
महिला-१ सम्हरिकऽ माथ पर नुआ धऽ लैछ ।
महिला-१ : (युवक-१सँ) लगैछै-फेर महाजन आबि गेलै ।
युवक-१ : ई एना बेर-बेर कैला अबै है ?
महिला-१ : कहै है, तमसुक बदलि देबले । महाँदन समय पुरि गेल है । नै रुपैया देव ला ।
युवाक-१ : तखन ?
महिला-१ : आब जे तमसुक बदल कहै है ओइमे मुर-सुद लगाकऽ चारि पाँच दोबर भ' जएतै । कहाँ स देतै तोहर बाप ।
युवक-१ : ओह ।
पुरुष-२ आगनके मुहथरि पर आबि जाइछ । संगमे मुँह लग्गु नोकर पुरुष-३ सेहो रहैछ ।
पुरुष-३ : (हाथक लाठी के चमकबैत) की रे अशोकवा । बाप कत गेलौ ?
युवक-१ गुम्हरिकऽ पुरुष-३ दिश तकैछ । पुरुष-३ कनेक नर्मस भ जाइछ । मालिक ददिश पलटि अबैछ ।
पुरुष -३ : मालिक, लगैए गणेशी की नामस नै है ।
पुरुष-२ : (नोकरके टारैत) की रे अशोकवा । गणेशी कत गेलौ ?
युवक-२ : कत्त' गेलौ ?
युवक-१ : हमरा नै बूझल है ।
पुरुष-३ : (कनेक जोरसँ) त तोहर की नामस माइके बूझल होतौ ?
युवक-१ फेर ओकरा दिश गुम्हरिकऽ तकैछ । ओ मुँह चमकवैत मालिकके पाछा चलि जाइछ ।
पुरुष-२ : देख, तमसुक बदलाब के अगिलका रविके अन्तिम दिन है । एहि बीचमे रुपैया देब कहि कि तमसुक बदलाब कही ।
पुरुष-३ : (फेर आगा बढि) नहि त की नाम स घर घराडी स हाथ धोव कहि दही । (मालिक दिश ताकि) की नामस नै औ मालिक ?
युवक-१ किछु नै बजैछ ।
पुरुष-२ : (जाइत-जाइत) एखन त हम जाइछी । फेर सुगवा अबैत रहतौ ।
पुरुष-३ : (पलटि कऽ) हम भकमच्छर की नामस छोरा देबै मालिक, देखियो ने केना नै देअ । की नामसँ ।

दुनूक प्रस्थान । युवक-१ आंगन मे टहलऽ लगैछ । महिला-१ घर सँ बहार होइत अछि आ एकटक्क युवक-१ क अनुहार देखैत रहैछ ।

**अन्हार**

*****

**दृश्य-३**

दृश्य पूर्ववत् आंगनमे खुरसी पर पुरुष १ बैसल चिन्तामग्न । निचामे महिला १ सेहो चिन्ताग्रस्त वैसल । लगैछ जेना कोनो बात होइत गम्भीर विनदु पर अटकि गेल हो ।

महिला-१ : आब त कोनो तरहे महाजन के ऋण फरिछा देब पडतै ।

पुरुष-१ : सेहे त अहुँ बुझिते छिऐ । कहुने, कत स फरिछएबै ?

महिला-१ : बेच लिअ धूर धूरक जमीन । कहुना सधा दिवौ करजा ।

पुरुष-१ : हमरा त लगए, धुर-धुर कऽ बेचियो कऽ सधा पएबै कि नै तै मे शके है ।

महिला-१ : जएह सधै । बाद मे कोनो जोगार करबै ।

पुरुष-१ : (उठिकऽ) कह मे बड सहज लगैछै अशोकक माय, जुटब' पडैछै तखन बुझ मे अबै है ।

महिला-१ : काल्हि धमकी द कऽ महाजन चलि गेलै । साफ कहै जे घर-घराडी सं हाथ धोब पडतै ।

पुरुष-१ : सभ लिखल है । उ चाहे त कऽ सकैअ ।

महिला : आ रहबै कत ? धीआ पूजा ?

पुरुष-१ चुप्प भ जाइछ ।

वेर-वेर कर्जा चुकब ला धमकी द कऽ जायब, लगै है बौआ के आब नीक नै लगै है । पता नै ओ की कऽ बैसत ।

पुरुष-१ : (अगुताकऽ) की कऽ लेतै ? ऋण सधा दैते ?

महिला-१ : ऋण त नहि सधाओत मुदा किछु अनर्थ धरि अवश्य कऽ लेत ।

पुरुष-१ : माने ?

महिला-१ : माने त साफ ओकर आखिमे झलकैत हम देखलिऐ ।

पुरुष-१ : कनि फरिछाउ नै ।

महाील-१ : महाजन संगे कतौ झगडा नै कऽ बैसय ।

पुरुष-१ : ओह । ई भ सकैछै ।

महिला-१ : तखन केना हयत ? और मुश्किल कऽ दैत चण्डलवा ।

पुरुष-१ : ई बात त अहाँ अपन दुलरुवाके समझवियौ । जकर धारने रहै है तकर बातो त सही परै है ।

महिला-१ : आ अपने बुझेबै से नै होतै ?

पुरुष-१ : पहिने अहाँ बुझवियौ नै ।

महिला-१ : ठीक छै । मुदा ऋण त चुकाबही पडत नै ।

पुरुष-१ : से त कोनो जोगाड लगाबही पडत । (चुप्पी) अच्छा हम कनेक शहर भेने अबैछी । आब मे देरियो भ सकैछ ।

पुरुष-१ क प्रसथिान । ताब पुरुष-३ क प्रवेश । ओहिना लाठी चमकबैत सरासर आंगनमे प्रवेश करैत अछि ।

पुरुष-३ : की हो गणेशी, हमरा देखिते घरमे नुका रहला की ?

महिला-१ : एह, की वाजल जाइ छै । ओ त एखने शहर दिश गेला ।

पुरुष-३ : नै, ई नै भ सकैछै । अपन चसम स हम अंगनामे ढुकैत देखने छली ।

महिला-१ : से हम कहाँ कहैछी, नै आयल छल । एखने वहराएल ग ।

पुरुष-३ : त की भेलै कर्जा के । देबै कि तमसुक बदलेबै ।

महिला-१ : बुझाइए तहीला शहर गेल । देखू कुछो त सोचबे करतै ।

पुरुष-३ : आब सोचला तोचलास काम नै चलतै । एक हाथ लेना, एक हाथ देना ।
महिला-१ : हम की द सकैछी । घर त सुन्ने है । अन्नो पानी नहिए है ।
पुरुष-३ : (एम्हर ओम्हर चकुआइत) अशोको नै है ?
महिला-१ : अशोक त खा-पीकऽ बाद दिश निकलल छै । सांझ स पहिने की आओत ।
पुरुष-३ कनेक सहटि क आगनमे महिला-१ लग खाट पर जा बैसि रहैछ ।
पुरुष-३ : देखू, मालिक बड चण्डाल है । ऊ नै छोडत । कहलकैअ, आइ जेना होतै, जे होइ ल कऽ अइहे ।
महिला-१ : (खुशामद करैत) हे, मालिकके चीत नै बुझा सकै छिऐ । हमर दुख त देखिते छी ।
पुरुष-३ : (पुनः चकुआइत) बाप रे बाप । मालिक के चित्र के बुझौत । उत त सौंसे जीते खा लेतै ।
महिला-१ : हे, अहुँ त हमरे सन लोक छी किनै । गरीबक दुख नै बुझवै ?
पुरुष-३ : बुझवै । जरुर बुझवै । पहिने अहुँके हमर दुख बुझ पडत ।
महिला-१ : हे भगवान । हमरा सन नीच अधमसँ अहाँ के कोन दुख दुर होत गोराइत साहेव ।
पुरुष-३ : ककरा स नै ककर दुख दुर होइ छै अशोकक माय । अहुँ चाही त.....।
महिला-१ : से कहु ने, हम की करु । हमरा स होत करबे करब की ?
पुरुष-३ : (कनेक आर लगमे सहटि) अहाँ चाही तँ हम मालिक के नीचा-उपर कहि समय बढवा सकैछी ।
महिला-१ : (उत्सुकता सँ) केना ?
पुरष-३ : (महिला-१ क हाथ पकडि उठबैत) सुनु, कनी बकरी घर दिश चलु नै ।
महिला-१ : तानि कऽ हाथ छोडबैत) किएक ?
पुरुष-३ : बड भोला छी अहाँ । आउ नै एहि एकान्त मेह मरा संग एक रती..... ।
महिला-१ : (उतेजित भ') चुप्प गुण्डा । तो हमरा बजारु बुझि लेने छे ।
पुरुष-३ : एक्के रतीके बात छै । फेर ऋणो जल्दी नहि चुकब पडत नै ।
महिला-१ : चाहे हमरा तीनू माय पूतेक हड्डी विका जाइक, हम ओइ चण्डलबाके पाइ-पाइक' चुकादेबै । मुदा तोरा सन पापीके देहमे भीडब ?
पुरुष-३ : बेसी हल्लो नै करु । बदनामी अहीक होत । आउ चलु जल्दी ।

पुरुष-३ महिला-१ के जवरदस्ती भरि पांजकऽ पकडि बकरी घर दिश लऽ जाए चाहैत अछि, किछु डेग बढैछै कि युवक-१ क आगमन आगनमे होइछै आ पछेसं पकडि पुरुष-३ के अपना दिश घीचि एक मुक्का मुँह पर मारैत छैक । ओ सोझे उनटि क आंगनमे खसि पडैछ । तकरा बाद, किछु काल खूब धुनाई करैछ । कहुना अपन जान बचा पुरुष-३-भागि जाइछ । युवक-१ खुरसीपर बैसि रहैछ । महिला-१ ओसारपर जा वैसकऽ कान लगैछ । कनेक काल एहने स्थिति रहैत छैक ।

युवक-१ : (अपन स्थान सँ उठैत) माय चुप रह । आब ई राक्षस सभ अइ अवस्था तक बढि गेल अछि ।

महिला-१ एखनो हिचकैत रहैछ ।

अन्याय, अत्याचारक एकटा समिा होयछै । हमसभ ऋण खएने छी, वहिया त नहि लिखने छीऐ । आब देखही की होतै ।

महिला-१ अश्रुपरित आँखिसँ बेटा दिश तकैछ ।

साचे कहै छियौ माय, बड महग पडतै महजनमा के ई नोर ।

महिला-१ : वौआ ।
युवक-१ : आब हम ककरो नै सुनवौ । इमान, धर्म बचाकऽ रहके माने ई नै होइछै जे अत्याचारो के चुपचाप सहैत रही ।

महिला-१ : वो सम्पन्न लोक है । तौ एक्को रती ओकरा आगा मे टीक नै सकबही । राता रात गुण्डा ल जएतौ आ मारिक ऽ फके देतो ।
युवक-१ : त जानके डरस हम अपन माय के इज्जत लुटैत देखैत रही, अपन बाप के अपमान होयत देखैत रही । नहि माय आब हम नहि देखबौ ई सभ ।

युवक-१ तेजीसँ आंगनसँ वहरा जाइछ । महिला-१ वौआ वौआ चिचिआइत रहि जाइत छैक । महिला-१ हारिक ऽ गोनैर पर वैसि कानय लगैछ । तावत पुरुष-१ क आगमन । महिला -१ के कनैत देखि झटकारिक ऽ लग मे जाइछ ।

पुरुष-१ : की भेल, कनै किएक छी ?
महिला-१ चुप्प अछि ।
बाजू नै की बात भ गेल ? अशोकवा किछु कहलक की ?
महिला-१ : पहिने अशोकवा के रोकु ।
पुरुष-१ : की भेलै अशोकवा के ?
महिला-१ : ओ पीते थर थर कपैत महाजनके घर दिश गेल ग । किछु अनर्थ आइ कइए लेत ।
पुरुष-१ : बात त किछ बताउ ।
महिला-१ : नै, एखन बात सुनके समय नै है । पहिने ओकरा शांत करु तखन कोनो बात हयतै ।
पुरुष-१ : झटकारिक ऽ आगन सँ वहरा जाइछ ।

**अन्हार**

****

**दृश्य-४**

स्थान पूर्ववत् । सांझक समय । ओसरा परक दीयठि पर दीआ राखल । आंगनमे राखल खाटपर पुरुष-१ आ महिला-१ वैसल । बातचितक क्रम चलैत सन ।

महिला-२ : केना रुकल त ।
पुरुष-१ : ठकिें बड बेजाय भ जइतै । रामेसर कहैत रहे, कतबो रोकलिऐ त नै रुकल, सन सनाईत डयोढी दिश चढैत चलि गेल ।
महिला-१ : फेर ?
पुरुष-१ : फेर की ! डयोढी दिश स कहादन महाजन के छोटकी बेटी लक्षमी अवैत रहै सेहो रोकि लेलकै ।
महिला-१ : (उत्सुकतासँ) लक्षमी रोकि लेलकै । बात बुझलिऐ नै ।
पुरुष-१ : हँ, गोरैतबा कहादन डयोढीम जाक मालिक्के उनटा सुनटा बात पढबैत रहै से बात' लक्षमी सुनलकै । सेहे बात कह अशोकके तकैत अबैत रहै ।
महिला-१ : अशोकक बाबू । हमरा त कुछो नै घुसैअ माथा मे ।
पुरुष-१ : वास्तवमे अहा के घुसहु वला बात नै है । हमरा अहा के वेरमे एना होइतो कहा छलै ।
महिला-१ : ठीके, लक्षमी अशोक के कैला तकतै, कैला कहतै अपन बापके बात ।
पुरुष-१ : (किछु मुस्किआ क ऽ) एकरो पाछामे कोनो बात छै ।
महिला-१ : हे, आब हमरा माथा फटि जायत । जल्दी कहुने ।
पुरुष-१ : अहाँ पतिअएबै ?
महिला-१ : एहन कौन बात छै जे हम नै पतिअएबै ?
पुरुष-१ : छै, तेहने बात ।
महिला-१ : पहेली नै बुझाउ, बाजु झट द ।
पुरुष-१ : किछ दिनस सुनै छी, कहादुन अहाँ के दुलरवा लक्षमी सँगे फँसल हबे ।
महिला-१ : फेर झूठ । बाप रे । हमरा सभके अइ गामके लोक जीअ नै देत ।
पुरुष-१ : कहली नै । अहाँ पतिअएबे नै करबै ।

महिला-१ : पतिआए बला बात रहै तब नै पतिआउ ।
पुरुष-१ : त नै पतिआउ ।
महिला-१ : (चुप्पी) लेकिन ई उडौलक के ?
पुरुष : के उराओत । बात साँच छै ।
महिला-१ : अहाँ केना वुझलिऐ ।
पुरुष-१ : अही घटनासँ ।
महिला-१ : कोन घटना सँ ।
पुरुष-१ : रे ओहे रोक बला घटना सं । एक त अपन बाप के बात कहला अशोकबा लग कैला अइतै दोमस अएबो कैले त ओतेक पितायल अशोक वाटेमे सं घुरि केना जइतै ।
महिला-१ : हे अशोक के बाबू ।
पुरुष-१ : बाजू ने ।
महिला-१ : बात कुछो वुझाइ है ।
पुरुष-१ : कुछो नै सोलहो आना साँच है ।
महिला-१ : तखन त ई आरो आफत भ जएतै । ठीके कहै छल गोरैतबा ।
पुरुष-१ : की कहैत छल ?
महिला-१ : कहै छल जे एगो वात एहन जनै है जे मालिक के कहि दौक त अइ घरमे आगि लागा देतै ।
पुरुष-१ : ठीके इहो बात होतै ।
महिला-१ : हम की कहु । वेटे-कुवेटा भऽ गेल है । नीक-वेजाय किछु ने सोचै है ।
महिला-१ : एहनमे नीक वेजायके खिआल रहबो नै करै है किनै ।
पुरुष-१ : अहाँ केना जनलिऐ से ?
महिला-१ : की हम गाम-समाजमे नै रहै छी से ।

दुनुक सम्मिलित हँसी ।

नै, बजलिऐ । आब की होतै ?

पुरुष-१ : की होतै । जे आगि लगौलकैअ सेहे बुझएतै ।
महिला-१ : गे दाई गे दाई । हमर बेटा नाहक मे मारल जाएत ।
पुरुष-१ : है सुतु ग जाउ । नाहक माथ खराब नै करु । जे उमेर नीक वेजाय सोच के दिमाग नै दै छै सेहो तकर परिणाम भोग के शक्तियौ देतै की ।

महिला-१ उठैत अछि ।

महिला-१ : अहाँ के वीछौना गोठ घरमे कऽ देने छी । खाटपर आइ वौआ सुततै । कहने छल अँगने मे सुतब ।
पुरुष-१ : (उठैत) ठीक छै । हम जाइ छी ओतहि ।

दुनु गोटेके दुनु दिश प्रस्थान । महिला-१ घरमे चल जाइछ । तकरा वाद युवक-१ के आगमन । आँगनमे राखल खाटपर चादर ओढि सुति रहैछ । कनेक काल मद्धिम लाल्टेनक रोशनी मे रातुक वातावरण । एकटा महिला आकृति आँगनमे प्रवेश करैछ । हाथ मे एकटा पोटरी धयने । युवक-१ क लग जाकऽ ठाढ भ' जाइछ । आकृति चकुआइत अछि । फेर आश्वस्त भ' जाइछ ।

आकृति : (युवक-१ के गर जातिक' उठवैत) अशोक ।

युवक-१ चुप्प । फोफ कटैत ।

(कनेक जोरसँ) अशोक जी ।

युवक-१ धरफराकऽ उठि वैसैत अछि के छी 'कहबा' जोर सँ बाज' चाहैत अछि कि आकृति अपन वाम हाथ युवक-१ क मुँहपर ध दैछ । चुप्प रहबाक सँकेत करैछ । युवक-१ आकृति के चिन्ह लैत छैक ।

युवक-१ : (आश्‍चर्य सँ) अरे, लक्ष्मी ।
महिला-१ : (गर जाँति) हँ हम ।
युवक-१ : (सम्हरिकऽ बैसैत) वाप रे, एतेक रातिकऽ । लोक देखत त की कहत ?
महिला-२ : लोक देखत तखन ने किछु कहत ।
युवक-१ : अच्छा, कहु अहाँ किए अएलहुँ । सब ठीक अछि ने ।
महिला-२ : हँ, सब ठकि अछि ।
युवक-१ : एतेक रातिकऽ एना अएवाक की मतलव ?
महिला-२ चुप्प अछि ।
बाजु ने, कैला अइलीग एतेक राति कऽ ।
महिला-२ : अशोक ।
युवक-१ : कहु ।
महिला-२ : आइ जाहि उतेजनामे अहाँ हमर घर दिश जाइत छलहु । जँब ाबू सँ मुठभेड भ जाइत तँ ओकर परिणाम बुझल अछि, की होइत ?
युवक-१ : मुठभेर कयनिहार परिणामके डर नै करैअ ।
महिला-२ : तैओ ।
युवक-१ : हँ, दुनुमेस कोइ एक गोटेक जान अवस्से जाइत ।
महिला-२ : तखन कहु एहिसँ अहाँके न्याय भेटैत ?
युवक-१ : मनमे सँतोष त होइत ।
महिला-२ : नहि, अशोक नहि । अन्याय, अत्याचारक विरुद्ध लडबाक जे उर्जा अहाँ मे अछि । तकरा एना वर्वाद अहाँ नै कऽ सकैछी ।
युवक-१ : माने ?
महिला-२ : माने साफ अछि । जे लडाइ अहाँ लड चाहैछी, ताहि लेल अहाँक नेतृत्वके जरुरति छै समाज के । एक्के मुठभेडमे अपन सभ किछु समाप्त कऽ देबाक अहाँक कोनो अधिकार नहि अछि ।
युवक-१ : लक्ष्मी ई अहाँ की कहैछी ?
महिला-२ : हम ठीके कहैछी अशोक । अहाँके सँगठित भ लड पडत ।
युवक-१ : के आओत एहि लडाईमे हमरा सँग ?
महिला-२ चुप्प अछि
बाब्रू रणधीर सिंह सन अत्याचारी शोषकक विरुद्ध आवाज उठैबाक साहस के करत ?
महिला-२ एखनो चुप्प अछि ।
ककरा छै एहि गाम सँ पडएबाक, घर-घराडी लिलामी पर चढएबाक ? लक्ष्मी, देत केओ सँग हमरा ?
महिला-२ : (गम्भीर होईत) हँ, अशोक, जवरुर देत ।
युवक-१ : के ?
महिला-२ : (दीर्घ निसाँसक सँग) हम ।
युवक-१ : (आश्‍चर्य) अहाँ ?
महिला-२ : हँ, हम अहाँके सँग देव ।
युवक-१ : ई जनैत जे रणधीर सिँह अहाँक काप केहन कूर अछि ?
महिला-२ : तएँ ने हम साथ देब । कारण अत्याचार आ शोषणक खेल हम अपना सोझा नीक जकाँ देखने छी ।
युवक-१ खटिआसँ उठि टहल' लगैछ ।
आ ताहीसँ एहि लडाईमे अहाँ के साथ देब' हम अएलहुँ अछि ।

युवक-१ ओहिना टहलि रहल अछि । भितरमे अन्तरब्द चलि रहल छैक से बात व्यवहार स बुझि पडैछ ।

की अहाँके हमर सहयोग नहि चाही ?

युवक-१ : (हाथक मोटरी आगाँ बढबैत) तँ, लिअ ई छोटछीन उपहार ।

युवक-१ : (आश्चर्य सँ) ई की अछि ?

महिला-२ : एहि पोटरीमे हमर गहना सभ अछि ।

युवक-१ : (आओर आश्चर्य मिश्रित स्वरमे) गहना कोन काम देत ?

महिला-२ : एकरा बेचिक्ऽ सभसँ पहिने अपन कर्जा चुकाउ ।

युवक-१अबाक भ्ऽ मुँह तकैत रहि जाइछ ।

जखन ऋण चुकि जायत तखने मर्द जकाँ लडबामे आत्म सम्मान बढत । कर्जा त लोकके तोडि दैत छैक, कमजोर क्ऽ दैत छैक ।

युवक-१ : नहि, कजा़ चुकौनाई हमर निजी मामिला है । हम चुकायब चाहे घर-घराडी लिलाम करायब । एहिमे अहाँक सहयोगक जरुरति नै है ।

महिला-२ : एही ठाम अहाँ विसरि जाइछी । एकर जरुरति अछि अहाँके ।

युवक-१ : नहि लक्ष्मी । हमरा कथीके जरुरत है । कयीके नै तै मे अहाँ नै परु । धीया पुता बला गप छोडू, ई सभ उठाक्ऽ चलि जाउ । ज वाप बूझत त खण्ड-खण्ड क्ऽ काटि देत ।

महिला-२ : अहाँ वापक डर देखा हमरा कर्तव्य सँ च्यूत कर चाहैत छी ? जखन सँग लेवाक बचन देलहुँ अछि त हमर ई उपहार स्वीकार कर पडत ।

युवक-१ : कोनो हालतमे नहि । ई अहाँक उपहार हमरा वड लमहग पडत । हम जिनगी भरिक लेल अहाँक गुलाब बन नै चाहैछी ।

महिला-२ चुप्प अछि ।

ककरो देल भीखक जोड पर हम लडाइके जारी नहि राखि सकब ।

महिला-२ : न सुनु : हमर एकटा बात मानब ?

युवक-१ प्रश्नवाचक नजरि सँ देखैत अछि ।

अहाँ हमराव वरण क्ऽ लिअ ।

युवक-१ : (आश्चर्यसं) की ।

महिला-२ : हँ, अहाँक सँग प्रणय सूत्रमे वन्हि जएने वेसी प्रतिबद्धतापूर्वक अहाँके सँग द सकब ।

युवक-१ निर्मिमेष एकटक मुहँ निहारैत खडा अछि ।

आ जखन हम अहाँक भ' जायब त ई गहनामे अन आ अप्पनक झँझटे समाप्त भ जएतै ।

युवक-१ एखनो ओहिना ठाढ अछि ।

बाजु, की मँजुर अछि हमर प्रस्ताव ?

युवक-१ : (पीडा सँ) लक्ष्मी, राति बड भ' गेलै । लगै अहाँ पर दिनका बदहवासी कायम अछि । बाप-माय सूतल छथि । ओ जागथि आ अहाँके आँगनसँ जवरदस्ती बहार क्ऽ देथि ताहिसँ पूर्वे अहाँ गहना उठाक्ऽ चल जाउ ।

महिला-२ : त ई अहाँक अटल निर्णय अछि ?

युवक-१ : हँ, हँ, हँ । अहाँ जतेक जल्दी भ सकय चल जाउ ।

महिला-२ : तँ ठीक छै । हम जाइछी । मुदा सुनि लिअ । (जोर दैत) अहाँके हमर जरुरति अछि, आ हम सदिखन सँग पुरबा लेल अहाँक वजाहटिक प्रतिक्षा करैत रहब । हिचुकैत महिला-२ क प्रस्थान । युवक-१ ओहिना कनेक काल टहलैत थच्च द खटिया पर बैसि जाइछ । दुनु हाथे माथ पकडि लैछ ।

**अन्हार**

*******

**दृश्य-५**

स्थान पूर्ववत् । मध्यान्हक समय । खुरसी पर बैसल युवक-१ चिंतित मुद्रा मे देखि पडैछ । खुरसी स उठि टहल लगैछ । उर्बग्नता स्पष्ट देखि पडैछ ।

तावन युवक-२ क प्रवेश 'गोधिया ?' कस्वरक सँग । ओकरा देखिते जेना युवक - १ क आखि चमकि उठैछ । भाइ कहि एकाएक उत्साहित होयछ, फेर जेना किछु सोचि चुप्प भ' जाइछ । युवक-२ ठाढे ठाढे एकटक्क युवक-१ क अनुहार देख' लगैछ ।

युवक-२ : की बात छै गोधिआँ । वड उदास देखै छियौ ?

युवक-१ : नै, किछु नै है ।

युवक-२ : (खटियाके घीचैत) नै रे, किछो हौ जरुर ।

युवक-१ : (खुरसी पर बैसैत) तो त अहिना बाल के खाल निकाल लगै छे ।

युवक-२ : हम मानबौ केना । तोरा सन चंचल लोक आइ एक सप्ताहस उखडल उखडल लगैछे, बात त जरुर कुछो होतौ ।

युवक-१ चुप्प अछि ।

काका, काकी कत छथुन्ह ?

युवक-१ : शहर गेल छथि । साँझ तक घुमथीन ।

युवक-२ : (चहकि) एह, तब त ठीक है ।

युवक-१ : कथीला ?

युवक-२ : गप्प करला ।

युवक-१ : (मुस्किया) दुत चुतिया । हम त कहलियौ कोनो गंभीर बात छौ ।

युवक-२ : ई गंभीर बात नै भेलै, जे आइ बहुते दिनपर दुनु भाई दुख सुखके वात वतिआयव फैलस । विना ककरो टोका टोकी के ।

युवक-१ : की गप करबे । कहाँहै कोनो तेहन बात ।

युवक-२ : छै कि ।

युवक-१ : जेना ?

युवक-२ : जेना आब हमरा सबके सँगठन बनाब के बात । आइ कय दिनस चलि रहल है । युवक-१ चुप्प अछि ।

गौधिया, जा धरि हम सब गाममे अगाडी नै बढविही ता धरि कोनो छौडा के डेग नै ससरतै ।

युवक-१ : सेत छे, लेकिन हम सब करबै की ?

युवक-२ : पेर उहे बात । तोरा कय दिन स कहै छियौ वुढबा सवके बात के आव छतिअैला स काम नै चल्तौ । फाड बान्ह आ मैदानमे कुद ।

युवक-१ : फेर त माता-पिता.....।

युवक-२ : माता पिता के अपमान नै करी । तहिना कोइ करैत रहे त देखबो नै करी ।

युवक-१ चुप्प अछि ।

आइ गौधिया, तोरे माता पिता मात्र अत्याचारी महाजन सँ अपमानित नै होइ छथून्ह । सौंसे गामक प्रतिष्ठा आइ महाजनके छडीके नोकपर नचैत खसैत छै ।

युवक-१ चुप्पे अछि ।

ई क्रम कतेक दिन ? की अइला चुप रहल जाए जे हमरा तोहर वाप माय ओकर कजाृ खयने है । आ एक के दश बूझ जीवन भर गुलामी करैत रहै ? युवक-१ उठि जाइछ आ टहल लगैछ ।

हमरे तोरे साथी सभ एहिना गार्जियनसँ उपेक्षित भ शहरमे कोन लतमे पडि गेल अछि नै हौ पता ? की तो चाहै छे जेहो वचल खुचल सव छी ओहिना आक्रोश के मारैत आयोडेक्स आ युरिया खाद खा-खाक मरैत रही पल पल ?

युवक-१ : रास्ता की छै भाई ?

युवक-२ : साफ बात छै, विद्रोह ।

युवक-१ : केहन ?

युवक-२ : बाप-मायक परम्परागत मान्यता आ विश्वासक विरुद्ध, शोषण आ अत्याचार कैनिहार महाजन सन नसँूशक विरुद्ध ।

युवक-१ : हमरा त ई सोचिते अपन वापक निरिह थाकल चेहरा लगमे नाचि जाइअ । वटाक कोनो गलती सुनवा लेल किन्नहुँ तैयार नै होइत माय । भाई.....।

युवक-१ फेर खुरसी पर वैसि जाइछ ।

युवक-२ : ई मोह त तोड पडतौ ।

युवक-१ : लेकिन केना ? तो चाहै छै हम विद्रोहमे वहरा जाइ आ एम्हर माय-वाप के जुतिअबैत महाजन घरस निकालि दैक ।

युवक-२ : ओकर एतेक हिम्मत ....।

युवब-१ : हिम्मत त छै । हमरा पुरा परिवार ओकर कर्जामे डुवल छै भाइ । तो नै बुझविही ।

युवक-२ : वुझल त है । लेकिन.........।

युवक-१ : लेकिन की ? कोन आश है मुक्ति के ? हम चुका सकबै कर्जा ?

युवक-२ चुप्प अछि ।

बाज, कतस लयबै ओतेक रुपैया । की चोरी करु, ककरो घर लुटु ? अथवा समगलिँग करु ? की करु, वता ने ।

युवक-२ : वाप माय कर्जा चुका नै सकतौ, तोरा सँगमे कोनो उपाय नै छौ । आ जा धरि तोहर कर्जा नै उतरतौ ताधरि तो आगा आब ने चाहबे । कठिन छै परिस्थिति ।

युवक-१ : तैस ने कहै छियौ । महाजनी अन्हारक विरुद्ध संघर्षमे उतरि जएबाक मोन हमरो होइए, मुदा इ निर्दोष अनुहार पएर मे सीँकडी बानिह देने है ।

युवक-२ : लगैछौ, हमरा सबके एहिना रह पडतौ ।

युवक-१ : (गौर स युवक-२ क चेहरा देखैत) एकटा उपाय है ।

युवक-२ : (चौँकी) अँए । कोन उपाय रे ।

युवक-१ : (कतौ दुर देखैत) महाजनक वेटी लक्ष्मी स हम विवाहक ऽली ।

युवक-२ : (चिहुकि क') गौधिआँ ।

युवक-१ : हँ, हम ठीके कहै छियौ ।

युवक-२ : भाई, गरिबीमे सपना वड नीक लगैछै ।

युवक-१ : मुदा ई सपना नै है ।

युवक-२ : वाप रे, ई संभव छै भाई ।

युवक-१ : नीक जकाँ संभव छै ।

युवक-२ : त अइमे देरी कैला ?

युवक-१ : (ओहिना गंभीर मुद्रामे) हम नै चाहैछी ।

युवक-२ : (आश्चर्यसं) की माने ?

युवक-१ : ई प्रस्थाव लक्ष्मीएके है ।

युवक-२ : (लगभग कुदैत भरि पाँजक ऽ युवक-१ के पकडि) तोरा कोन सिद्धान्त बीचमे आवि गेलौ ।

युवक-१ : इहे जे बाप-माय की कहथिन, समाज की कहत । फेर महाजनो और पिशाच भ लागि जएतै ।
युवक-२ : चुप्प ! एकटा सुन्दर मौक आवि रहल छौ त फेर बाप-माय आ समाज सुझ्ह लगलौ । जे इजोत अन्हार स लडबाक हेतु स्वयं तोरा घर तक आबि गेल छौ तकरा तो ठुकराब चाहैछे, अन्हारक कैदी भ जीवन नरक बना देव चाहैछे ।

युवक-१ चुप्प अछि ।

आ रहल चण्डलवा महाजन, त भाई ओकरा स बदला लेब के अइस बेसी नीक मौकानै भेटतौ । चुकाले गोधियाँ ओइ सार स सभ बदला ।

युवक-१ : अइ अभियानमे समाज साथ देत ?
युवक-२ : के नै देतै । उँच नीच गरिब धनिकक बीच वटल अइ समाजमे तोरा सन पिचायल बहुतो जीव है जकरा तोहर ई निर्णय जान उसास करतै ।
युवक-१ : आ विद्रोह ।
युवक-२ : विद्रोहक नयाँ माहौल तैयार होएतै, एकटा प्रेरणा भेटतै । (कनेक कालक चुप्पी) मुदा की आब लक्ष्मी मानतौ ?
युवक-१ : ओत कहिकऽ गेल अछि-हमर जरुरति जहिया पडय बजालेब, हम सदैब प्रतिक्षारत भेटब ।
युवक-२ : वाह, देखही ओइ नारीके महानता, जकर निर्णय मात्र तो यदि स्वीकार क ले त पुरा नक्सा बदलि जएतै । (कनेक कालक चुप्पी) कह, लाउ बजाकऽ ओकरा !
युवक-१ : एखन, लोक देखत त की कहत ?
युवक-२ : दुत, हम अबैत रही त ओकरा इसकुल पर देखने छलिअइ, गल्लीए बाटे आबि जएतै दू मिनट के त बात है ।

युवक-१ किछु नै बजैत अछि ।

तौ बैस, हम अखनुनिए अइली ।

युवक-२क प्रस्थान । युवक-१ फेर उठिकऽ टहल लगैछ । दू चारि फेरा लगा खुरसी पर अगैंठि जाइछ । ताबत लक्ष्मीक संग युवक-२ क प्रवेश । दुनू गोटे युवक-१क आंखि मुनने चेहरा दुनूकात भ एक टक्क गौरसँ देखैत रहैछ ।

युवक-२ : गोधिया ?
युवक-१ : (चौकि क') अएँ। की भेलौ (फेर लक्ष्मी पर नजरि पडैछ) ओह, लक्ष्मी ।
महिला-२ : (प्रशन्नतासं) अशोक, अहाँ बजौलहु की ?

युवक-१ माथ निहुरालैछ ।

हमरा बुझ्हल छल, पतझ्हडमे सुखायल गाछसँ हरियरी बेसी दिन अलगनै रहि सकैछ ।

युवक-१ : लक्ष्मी ।
महिला-२ : हँ अशोक । प्रत्येक कारी रातिके समाप्त करबाक लेल सुरुजके उगब ध्रुव सत्य थिक ।
युवक-१ : (आँखिमे नोर डबडबाकऽ) ई त हमर शौभाग्य अछि अशोक । हमर सानिध्यस जँ अहाँक भितरमे जमल विद्रोहक नदी मे उफान आबिजाई आ ओ अन्याय-अत्याचारक वान्हके तोडि सकय तँ एहि स वेसी हमरा लेल और की भ सकैए । एहि प्रकाशयात्रामे हम अहाँक सदैब संग रहब ।
युवक-१ : हँ, लक्ष्मी । हमरा अहाँक साथ चाही, हमरा एकटा यनाँ शुरुवात करही पडत । (घीचकऽ छाती सँ लगबैत) आब कोनो शक्ति हमरा अहाँस अलग नै कऽ सकत । युवक-२ किछु आगा बढि देह परक गमछा सँ नोर पोछ लगैछ ।

***

**दृश्य-६**

दृश्य पुर्ववत् । मध्यान्हक समय । आंगनमे खुरसी पर पुरुष-१ आ खटिया पर महिला-१ बैसल । गम्भीर मुद्रामे । पार्श्व स "रौ गौंधिया छे रै" स्वर सूनि पडैछ । दुनू परानी साकांक्षा भऽ जाइछ ।

पुरुष-१ : लगैए, कमल आबि रहल है । नीक मौका पर आयल है ।

महिला-१ : कैला ।

पुरुष-१ : ई अपन छौडा के संघतिया है नै । कहबै कनि समभ्फबही ।

महिला-१ : की कैलकैअ बौआ जे समभ्फौतै ?

पुरुष-१ : (खिसिआकऽ) फेर उहेबात । अहाँ चुप रहू । हमरा कह दिअ ।

ताबत युवक-२ आंगनमे प्रवेश करैछ ।

युवक-२ : (दुनूके एक्के संग प्रणाम करैत) गोर लगैछी काका-काकी ।

पुरुष-१, महिला-१ (एक्के बेर) नीके जकाँ रह ।

पुरुष-१ : आबह बैस ।

महिला-१ घरमे चल जाइछ ।

की कमल । केम्हर ?

युवक-२ : अशोक नै हबै की ?

पुरुष-१ : घरमे एक्को रती रहै है, पता नै, कत रहै है भरि दिन ।

युवक-२ : हुँ ।

पुरुष-१ : कमल ?

युवक-२ : जी, काकाजी !

पुरुष-१ : अशोक के समभ्फबै नै छहक ?

युवक-२ : कथी के लेल ?

पुरुष-१ : इहे अराब संगत के लेल !

युवक-२ : की भेलैए से ?

पुरुष-१ : लोक कहैए पीहु-पाब लागल है । खराब लोक संगे घुमैत रहैय ।

युवक-२ : सब भ्फुठ छै । हम अपने खराब संगतमे रही । अशोकके कारण सम्हरि गेल छी ।

पुरुष-१ : कय गोटे कहि चुकल है ।

युवक-२ : काकाजी । अहाँ सब ओइ जुग के लोक । कनिको नीच उपर के बात सुनैत छी त जीउ हुकुरद्दम होब लगै हबे । लेकिन बात किछुनै है ।

पुरुष-१ : गामके छौरा सबके हालत ठीक छै नै । देखलहो नै असेसरा आ चलितरा मास्टरके बेटा शहरमे फेन्सीडील बोतल के बातेल पीब जाइहै । कहादन गरिगीट आ आयोडेक्स खाइ है । बाप रे !

युवक-२ : ओतबे काका, ओइ दिन त अपने हाथे नशाके सुइया भोकिकऽ सरयुग हजाम के बेटा वेहोश भ गेलै-अखनु अस्पताल मे है ।

पुरुष-१ : तहीस कहै छिअह किने । एकरो संगत नीक नै हे । जीउ भरिदिन अशोके पर टांगल रहैअ ।

तावत चाहक संग महिला-१क प्रवपेश । दू कप चाहमे एक कप पुरुष-१ के आ १ कप युवक-२ के द ओतहि खाट पर बैसि जाइछ ।

युवक-२ : (चाहलैत) काकाजी । आइ समाजमे एहि तरहक जे अराजकता युवक सभमे अएलैए तकर कारण जनै छीऐ ?

पुरुष-१ : की ?

युवक-२ : बेरोजगारी, भौतिक सुख सुविधाक प्रतिस्पर्धा, गरिबी आ शोषणके विरुद्ध आवाज नै उठा सकबाक बाध्यता, मजबुरी ।

पुरुष-१ : मजबुरी किए ?

युवक-२ : अहासन-सन अपन लीखक फकीर बापक कारणे ।
पुरुष-१ : बात बुझली नै ?
युवक-२ : बात साफ छै । समाजक गतिक संग धीआ-पूताके अहां चल देबै नै । समाजमे एतेक शोषण, अत्याचार छै, तकरा विरुद्ध बाज चाहय त अहां सब अपन परम्परागत मान-सम्मान कढणल ल कऽ आगा मे ठाड भ जाइछी । अनकर मुहक कौर छी-निकऽ महलमे किसुनकेर करैत शोषक के हड्डी चुर करबाक तैयारी होइत अछि त तकरा सामाजिक विखण्डनक नाम पर अहाँ वुर्जुग सभ रोकि दैत छिऐक ।
पुरुष-१ : त हम सभ अराजकता कोना होब दिऔ ?
युवक-२ : जे घोर अत्याचार करए से अराजकता नतै, जे रोक चाहय ओ अराजकता भ गेलै ।
पुरुष-१ : एहि सँ लागू पदार्थ सेवनक की सम्बन्ध ? युवक विगडबाक कोन तालमेल ?
युवक-२ : वड गहीर छै काकाजी । एहने असमान अवस्थामे विद्रोह करबाक हेतु वातावरण गार्जिन नहिदैछ तखन भितरक ज्वाला के दबएबाक हेतु लोक नशा कर लगैए, अपनाके विसर चाह लगैए ।
पुरुष-१ : एकर उपाय ?
युवक-२ : ओकर अधिकार भेटौक, बस ।
महिला-१ : केहन अधिकार ?
युवक-२ : काकी, अपन मौलिक अधिकार । नोकरी करबाक अधिकार, पेट भरबाक अधिकार, समाजमे होइत अन्याय अत्याचारके विरुद्ध लडबाक अधिकार ।
महिला-१ : ई के देतै ?
युवक-२ : ई अहाँ सब माय बाप देबै । नेता देतै, सरकार देतै । सब उच्च पद कुडली मारने सांप सभ देतै ।
पुरुष-१ : तोरा लगै छह देतै ।
युवक-२ : नहि देतै त विद्रोह होतै । आ एहि विद्रोहके तो सब संग दहक काका, संग दहक ।
युवक-२ उठि जाइछ ।
पुरुष-१ : एह, कत स कत्त बात धीचा गेलै । हम त अशोक के समझाव के बात कहने रहिअह नै ।
युवक-२ : (पुनः बैसैत) बात दुनू एक्के छैक ।
पुरुष-१ : ई एक्के कोना छैक हौ ?
युवक-२ : तो अशोक के अपन आदर्शक चक्कर सँ मुक्त कऽ दहक ।
पुरुष-१ : आइ पहेली कैला बुझब लागल छह हौ ?
युवक-२ : काका । ई पहेली नै है । जाहि अशोक पर गलत संगतक आरोप तौँ लगवैत छहक ओ त तोरे इमान्दारी आ मान-सम्मानक वन्दी भ कऽ रहि गेल छह । ओ त एहन स्फुलिग अछि जे मौक पबिते अन्याय-अत्याचार शोषणक सम्पूर्ण आन्हर शासनके जरा कऽ भस्म कऽ सकैत छैक मुदा ओकरा माथपर बापक आदर्शक भूत सवार छै । बापक कर्जा सं लचरल महाजनी आतंकक सायाक भय सवार छै ।

पुरुष-१ : कमल, समाजमे रहबाक हेतु.....।
युवक-२ : समाज मे रहबाक हेतु मर्द जकाँ जीब पडतै, ककरो क्रीतदास जकाँ नै । सम्मानक मर्यादा ता धरि रहैत छैक जा धरि ओ ककरो अहमके आहतकऽ नहि प्राप्त कयल जाइ । तकरा वाद त सूजल लडाई छै...।
यूवक-२ उठि जाइछ ।
अच्छा कका हम एखन जाइछी । जाइत-जाइत एतबे कहब जे अशोक्क भितरमे उठैत आगिके आब नै दबबहो ।

युवक-२क प्रसथान। पुरुष-१ एकटक जाइत देखैत रहैछ।

पुरुष-१ : (महिला२ सँ) अशोकक माय, ई कमल ठीक नै कहलक ?

महिला-१ : दुर हम की जान गेलिऐ बढका-बढका बात ! हम त एतबे जनै छिऐ हमर बेटा कोनो गलत नै करत।

पुरुष-१ : (जेना दुर कतौ हेरायल) ठीके, लगाम मे ढील देब पडतै। जे हम सभ नै कऽ सकली, से करबाक लेल नयाँ पुश्चा के रोकबाक की अधिकार अछि हमरा सभ के ?

(कनेक कालक चुप्पी)

खाली एकटा बात स हारै छी।

महिला-१ : कथीस ?

पुरुष-१ : इहे जे, महाजन के कजाृ माथपर है, आगा पडिते बाइ नै ससरैअ।

महिला-१ : उपायो की छैक।

तावत युवक-१क प्रवेश।

युवक-१ : (माय सँ) कथीक उपाय माय ?

महिला-१ : (उठैत) किछु नै।

युवक-१ : नै, कुछो त जरुर है।

पुरुष-१ : होतै कथी, महाजनके कर्जा.....।

युवक-१ : कर्जा, कर्जा, कर्जा। आखिर अइ घरमे कर्जा के छोडि दोसरो कोनो बात होइ छै ?

पुरुष-१ : दोसर हायबो की करौ। अइ घरक सभ सुख सेहन्ता त महाजन के खाता-पातमे बन्न भ गेलहै।

युवक-१ : के कैलकै बन ?

पुरुष-१ : हम ! मुदा अपना ला नै।

युवक-१ : हम बुझैछी - हमरा ला ने। हमरा पढाई लेल ई कर्जा बोकने हयब। मुदा हम पुछैछी, हमर एहि पढाईक कोन मतलब ? नै अहाँक कर्जे चुका सकैत अछि नै हम स्वतन्त्र भ तेहन शोषकके विरोध कऽ सकैछी। कहु, की भेल एहि कर्जाक फल ?

पुरुष-१ चुप्प अछि।

आब ई कर्जा हम स्वयं चुकायब।

महिला-१, पुरुष-१ : (एक्के बेर) तो।

युवक-१ : हँ हम। खाली तो सब चुपचाप रह।

पुरुष-१ : (आशांकित होइत) नहि, तो चुकैबही कतस। जरुर कतौ किछु अनर्थ......।

युवक-१ : (बात कटैत) कथमति नहि। हम अनर्थ त नहिए करब। हँ, अहाँ सभक नजरिमे, समाजक नजरिमे ओ सभ सपैघ अनर्थ कैला नै होइ।

पुरुष-१ : (महिला-१ सँ) सुनै छी, ई जरुर किछु गडबडी करत। हे भगवान, हमकी करु।

युवाक-१ : हँ, अहाँ ओहि भगवान के गोहरवैत रहु, जकर माला जपिकऽ अपना संगे सौंसे परिवारके भिखमंगा बनाकऽ राखि देलिए। हम एहि जंजाल सँ मुक्तिकबाट खोजि लेने छी।

तेजी सँ प्रस्थान। दुनू आश्चर्य सँ जाइत देखैत रहैछ।

***

## दृश्य-७

दृश्य पूर्ववत्। दिनका समय। एना लगैछ, जेना पूरुष तुरते भोजन कऽकऽ उठल हो। खुरसी पर वैसल सुपारिक कतरा मुँह मे धरैत। खटिया एखन आगनमे धयल।

महिला-१ : (घरस बहार होइत) आइ अन्तिम दिन छै। चण्डलवा कोनो बेरमे धमकबे करत।

पुरक्ष-१ : हँ, ठीके ! समयो वीति गेलै आ एक्को पाइक जोगाड नै भ सकल । आब की होतै ? ( महिला हाथ पोछैत खाटपर बैसि जाइछ ।)
महिला-१ : आब की होतै घर घराडी लिलाम करत ।
पुरुष-१ : मोहलत ..... ।
महिला-१ : मोहलत-तोहलत कथीके । ओई दिनका घटना स आब कुछो नै होत ।
पुरुष-१ : हँ, ठीके । (चुप्पी) अशोक खयलक कि नहि ?
महिला-१ : कहाँ खयलक । पता नहि कत अछि ।
पुरुष-१ : हे, ऊ नहिए आबे तही मे नीक । महाजनके देखते ओकर नरसि जागि जाइ है ।
महिला-१ : उ त धन कही ओइ बचिया के । नै त बोआ ओहि दिन की स की कऽ दीतै ।
ताब युवक-२ क प्रवेश ।
युवक-३ : गोर लगैछी काका ।
पुरुष-१ : नीके रह ।
युवक-३ : काकी तोरो गोर लगै छीयौ ।
महिला-१ : खुब खुश रह । कह केम्हर रस्ता बीसरि गेलह ।
युवक-३ : (खाट पर बैसैत) कका, एकटा बात कहियो ।
पुरुष-१ : की ?
युवक-३ : अशोक के देखलियौ आ मंदिर जाइत ।
महिला-१ : ओकरा धर्म कर्म पर वापे जकाँ विश्वास रहै छै नै ।
युवक-३ : चारु भर चकुआइत) नै गे काकी । ऊ असगरे नै रहै ।
पुरुष-१ : के रहै रे ?
युवक-३ : लक्ष्मी । महाजनके बेटी ।
पुरुष-१, महिला-१ : (संयुक्त स्वरे) लक्ष्मी संगे ।
युवक-३ : हँ, ओकरे संगे हहायल फुहायल जाइत रहै ।
पुरुष-१ : (महिला-१ सँ) एकर की माने भेलै अशोक के माय ?
युवक-३ : माने त साफ है । दुनू मे कुछो उपर-नीचा है ।
महिला-१ : चूप्प । तोरा सबके अहिना सब बातमे कारण भेट जाइ हौ ।
पुरुष-१ : डटियौ नै । किछो भ सकैहै ।
महिला-१ : अहँके त ओहिना कोइ कुछो कहि दैअ । ओइ ल कऽ उड लगैछी ।
युवक-३ : (उठैत) काकी तो जे बुझ । गाममे तरे तरे कनफुसकी शुरु भ गेल है ।
पुरुष-१ आ महिला-१ एक दोसराक मुँह तकैत रहैछ ।
अच्छा हम चलै छियौ ।
प्रस्थान ।
पुरुष-१ : अशोकक माय । हम अहाँके कहने रही नै अहाँ बात के गाल नै लाग देने रही आब बुझू इ बात
महिला-१ गुनधुन के मुद्रा मे अछि ।
पुरुष-१ : आब त एहि घरके अनिष्ट होब स कोइ नै रोकि सकतै ।
महिला-१ चुप्प अछि ।
हम त कहैछी, हमरा जाए दिअं ओम्हरे । दखियौ की करेए ।
महिला-१ : अहाँ की करबै जाक ।
पुरुष-१ : समझएबै एक त कर्जा के अन्तिम दिन है, दोमस बात सुनतै त सब पीत एक्के बेर हमरा सब पर बरसतै ।
महिला-१ : आब त जे होब के होतै से होएबै करतै ।

पुरुष-१ उबिग्न भ! टहल लगैछ ।

आब त एक्के बात छै चण्डलबाके हसेरीके प्रतिक्षा कयल जाय ।

पार्श्वस महाजनक स्वर-रौ गणेशी छे । पुरुष-१ धरफरा कऽ पत्नि दिश तकैत अछि ।

पुरुष-१ : लगैए आबि गेल । हे, घर महक ढौवा कौंडी जे हय से धऽ लिअ, गहना गुडिया सेहो वान्हि लिय । खसी-बकरी खोलि दियौ ।

महिाल-१ : (अपस्यांत होइत) कैला एना करैछी ?

पुरुष-१ : ऊ अवस्से घर जडा देत । आइ ककरो प्राण नै बाचत । जुमिगेल चण्डलवा कसाई । की रे गणेसिया । घरमे छे कि नहि' पुनः पार्श्व सं स्वर । पुरुष-१ बरबडाइछ - लगैए आब जाबही पडत ।

पुरुष-१ : जी, मालिक । आयल जाओ ।

महिला-१ घरमे चल जाइछ । महाजन, गोराइतक संग प्रवेश ।

आयल जाओ बैसल जाओ ।

पुरुष-२ : नै, आइ बैसवौ नहि । आइ त निर्णय कक जएबौ । (पुरुष-३ सँ) सुगवा तो आगि.......

पुरक्ष-१ : (बीचे मे लोकैत) मालिक ल द क इहे घर-दुवार है हमरा सभके । दया कैल जाओ ।

पुरुष-३ : पहिने आगि की नाम स ।

पुरुष-१ : नै गोराइत जी । दया करियौ हमरा सभ पर हम सभ निर्दोष छी ।

पुरुष-२ : (पुरुष-३ दिश ताकि) तोरा कुछ चाही ?

पुरुष-३ : जी की नाम स आगि । (पुरुष-१ सँ) अहाँक घर मे आगि नै है ?

पुरुष-१ : (निसास फेरैत महिला-१ दिश ताकि) हे भगवान । आगि त छै घरमे, लाबि दियौ । महिला-१ आगि घर मे स बढा ओसारा पर राखिदैछ ।

पुरुष-२ : गणेशी, की भेलै रुपैया के जोगाड ?

पुरुष-१ : अखनु तक नै भेलअ मालिक ।

पुरुष-३ : ई त नै भेलै की नाम स गणेशी । आइ त नौ कि छौ की नाम स भऽकऽ रहतो ।

पुरुष-२ : आइ अन्तिम दिन । काल्हि मोकदमा चहरि जएतौ इजलाश पर ।

पुरुष-१ : नै मालिक । हम गरिब आदमी, ई मोकदमा तोकदमा की जान गेलिऐ । मोहलत भेटितै ।

पुरुष-२ : असंभव । कर्जा असुल' अएलापर हमर आदमी के मारबौ-पीटबौ करवही आ उनटे समयो लेबही ।

पुरुष-३ : (महिला-१ बरा देल आगि मे वीडी धरबैत) एह की नाम स गतर-गतर देह तोडी दने हय । तहिना हमहु आइ की नामस चुरबै किने ।

पुरुष-२ : सुगबा । आइ कोनो चीज घर मे रह नै दे । आब हद भ गेलै ।

पुरुष-३ आगा बढैत अछि आ घरमे ढुक चाहैत अछि कि अशोक आ लक्ष्मीक प्रवेश । अशोक तेजी सँ आगां बढि पुरुष-३ क पाछां सँ कालर पकिड घीचि लैछ ।

युवक-१ : वीसरि गेलै ओइ दिनका मारि ।

पुरष-३ सिठुवा जाइत अछि ।

एक्कोटा वस्तु मे हाथ लगैलही त हम टांग हाथ तोडिकऽ सडक पर फेकि देबौ । बुझले ?

पुरुष-२ गम्भीर नजरिसँ कखनो घोघ तनने युवतीके आ कखनो युवक-१ के देखैत रहैत अछि ।

पुरुष-२ : हमर खायल पीयल तँ सधएबाक चाही ने । एना जँ महाजनी असूल वेर मे वेइज्जत करै, मारिपीट करै त लोक वेहवार सब खतम भ जएतै ।

पुरुष-१ : मालिक, खायल अन्न केनाकऽ नै तीरबै ।

पुरुष-२ : लेकिन इ की छै ? हो हल्ला, मारिपीट ? (पुरुष-३ सँ) जो सुगवा, पुलिस के बजा क ला । जल्दी जो । एक ता चोरी दोसर सीना जोरी ।
पुरुष-३ : लीअ ने की नामस मालिक । मोटक दरोगा के की नाम स अखने ले नै अबै छी । चारिएटा डंटा चूतर पर की नाम स लगतै कि सभ फरमैसी घूसरि जएतै । की नाम स नेतगिरी छटैएइ सार ।
पुरुष-२ : सुगवा ?
पुरुष-३ : हे, की नाम सँ इएह हम गेल? आ की नाम सँ अइली ।
जाएइ चाहैए कि घोघ तनने लक्ष्मी घोघ हटालैत अछि ।
महिला-२ : ठहरु, सुगा कका ।
पुरुष-२, पुरुष-३ : (एक्कही बेर), ऐ, लक्ष्मी ।
महिला-२ : हँ, हम छी । पुलिस बजएबाक कोनो काज नै छै । लिअ, अपन पाइ ।
हाथ मे धयल पाइक गेट आगामे फेकि दैछ । एकक्षण पुरुष-२ कखनो पाइके कखनो महिला-२ के बेरा बेरी देख लगैछ । आ माथ पर हाथ धरैत धम्म द खटिया पर वैसि रहैछ ।
पुरुष-३ : मालिक की नाम स की भेल ?
पुरुष-२ : किछु नै, तौं जल्दी जो था । जल्दी बजा पुलिस के ।
पुरुष-३ : मालिक की नाम स आब त बात दोसर रंग के.... ।
पुरुष-२ : आब त आरो बजा । हमर बेटीक बहकाक᳚ हमर इज्जत बर्बाद करबाक जुर्म मे कडगर सजाय दिअएबै एकरा । जो.... ।
महिला-२ : बाबू जी, सिपाही के बजायब, थाना-कचहरी करब एहि स इज्जत बढत ?
पुरुष-२ : तो चुप्प रह । कलंकिनी ।
महिला-२ : ताही कलंक सँ बच के लेल त हम अशोक सँ बिआह क᳚ लेलहुँ नै ।
पुरुष-२ : बिआह, अशोक सँ । (पुरुष-३) जो न रे सार । जल्दी पुलिस बजा ने ।
पुरुष-३ थकमकाइत अछि ।
महिला-२ : जाउ बजाउ पुलिस के । ककरा पकडतै । अशोक के नै बाबूजी । एहि मे अशोकक कोन दोष ? ई विवाह हम अपन मर्जिसँ कयलहुँ अछि । घर सँ नीकलि हम एत आयल छी, अशोक हमरा ल क भागल नहि छथि । जाउ, सुगा कका, पुलिस के बजा आउ हम संगे थाना जायब ।
पुरुष-२ : (नर्भस होइत) नै, सुगबा । नै जो कतौ । बरु हमरा एत सँ उठाक᳚ ल चल ।
पुरुष-३, पुरुष-२ के दुनू हाथ सँ उठबैत अछि । सम्हारैत आंगन सँ बहराय चाहैत अछि । तावत युवक-२क प्रवेश ।
युवक-२ : (थपडी पारैत) वाह, अति सुन्दर ।
युवक-१ : तौ गोधिआ ?
युवक-२ : हम बडी कालस बाहर खडा तमाशा देखैत रही । वाह, भौजी लक्ष्मी, अहाँ तँ आइ पुरुषक नाक ठाढ क देखिऐ । (रुपैया उठा पुरुष-२सँ) काकाजी, ई रुपैया त लेने जाउ ।
पुरुष-२ : सुगा ?
युवक-२ : चिचियाउ नै महाजन । अहाँके शोषणक अन्हारक अन्त होबही पर है । देखियौ क्षितिज पर लक्ष्मी भाभी सन लालिमा पसरि रहल छै । आब बला प्काश सँ डरु' महाजन प्काश स डरु ।
पुरुष-३ : चलु चलु मालिक । की नामस बड खिधानस भ᳚ गेलै ।
दुनुक प्रस्थान । युवक-१ आ युवक-२ गलवाहिद᳚ कात भ जाइछ । महिला-२, पुरुष-१ आ मिहला- के पयर छुवि प्रणाम करैछ । दुनूक आँखिमे नोर डवडवा जाइछ ।

**अन्हार**

*****

# पेटक खातिर

**(सडक नाटक)**

एकटा खुजलठाम । पुरुष-१ कांख मे एकटा कारी झोरी लटकौने देखि पडैत अछि । वाम हाथमे वाँसुरी आ दहिन हाथमे डमरु । पहिरन चरखनाक लुंगी कारी गोलगाला, डारमे वान्हल लल्हका गमछा । गरदनिमे कारी डोरीमे ताबिज लटकल.....।

काँख तरक कारी झोरी उतारि विचमे धऽ दैछ । अपन वामहाथसं वाँसुरी पकडि मुंहमे लगा फुकऽ लगैछ । दहिना हाथमे राखल डमरु बजबैत झोरीक चारुकात घुमऽ लगैछ । पुरुष-१क सँगे आयल एकटा १०-११ वर्षक वच्चा सुटकल एक कातमे वैसिरहैछ ।

पुरुष-१ : (एककात ठमकि) साहेबान, कदरदाना । आबिगेल, अपनेक शहरमे आबिगेल पहिलबेर देखब ई अजुबा । मात्र एक टकामे मोनकवात जानि सकैछी (कनेकरुकि) देखू ई नहि बुझब हम जन्तर वेच वला मात्र छी । हमर जन्तर साधल अछि ४६ वर्षक । अबै जाऊ अबे जाऊ, (पुनः किछु रुकि) हँ जे पहिने मागब तरक फ्रियो भेट कसैत अछि । माल सिमित अछि । (एहिक्रममे किछुकाल धरि बँसरी वजबैत, डमरु डबडबबैत कालकार परिधिमे चक्कर लगबैत रहैत अछि । )

ताबत दर्शक महक युवक-१ आगा बढैत अछि ।

युवक-१ : खेलवाला । तोहर जन्तरक की विशेषता छह ?

पुरुष-१ : एकटा रहय तखन कही । एकसने एक अछि ।

युवक-१ : तैयो कोनो खास विशेषता कहक ने ।

पुरुष-१ : (पुनः बाँसुरी बजा, डमरु डबडबबैत अछि) विशेषता ? त सुनु बाबूजी । एकटा जन्तर ४६ वर्षक साधल अछि । एकसाएक लोक एकर सिद्ध कऽ पास कऽ देने छैक ।

युवक-१ : की करत ई जन्तर ।

पुरुष-१ : ई लोकके मन वदलत ।

यूवक-१ : माने ?

पुरुष-१ : एहिमे प्रजातन्त्रके मशुस कर वला गुण छै ।

यूवक-१ : औजी एखनो नै वुझलहु कनेक परिछाउने ?

पुरुष-१ : अहाँ केहनो प्रतिगामी विचार वलाके ई जन्तर वान्हि दिऔक ओ तुरते प्रजातन्त्र प्रजातन्त्र घोस लागत ।

यूवक-१ : अच्छा ?

पुरुष-१ : ओतबे नहि । जनिक प्रजातन्त्रपर खतरा नजरि अबै छनि हुनको बाँहिमे बानिह दिऔन त सभतरि प्रजातन्त्रे देखवामे अओतनि ।

यूवक-१ : अए यौ । एहि जनतरस मात्र अनुभूतिए अओतैक अथवा प्रजातन्त्र भेल जका बुझएबो करतै ?

पुरुष-१ : सएहने एकर विशेषता छै । किछु कर नहि पडतै । बैसले बैसले प्रजातन्त्रके मजा लुटल जा सकैछै ।

यूवक-१ : जनताके विचोमे ने जाए पडतै ?

पुरुष-१ : कथिलेल ? जे बैसले बैसले सबबात भ जायत त किए लोकक सेवा करत केओ ।

यूवक-१ : (माथ डोलबैत 'हुँ' बजैछ) दोसरो तरहक जन्तर अछि की ?

पूरुष-१ : (डमरु आ बाँसुरी बजबऽ लगैछ) हँ दोसरो तरहक अछि ।

यूवक-१ : (घेरामेस आगा वढि) आ दोसर तरहक केहन जन्तर अछि ।

पुरुष-१ : दोसर त एहु स तेज अछि ।

यूवक-२ : कोना यौ ?

पुरुष-१ : ई जन्तर ककरो नाम लऽ कऽ सिरमा तरमे राखि सुतल जाए त ओहि व्यक्तिक पेटक बात जानल जा सकैछ ।

यूवक-१ : एहि सँ फायदा ।
पुरुष-१ : बहुत फायदा छै, जेना के घुस खाकऽ काज कऽ सकैए, पता लागि जएतै ।
यूवक-१ : अच्छा ।
पुरुष-१ : इहो पता लगौल जा सकैए जे घुस देबबला कतेक अंक धरि आट क' सकत ।
यूवक-१ : ह, तखन एकटा हमरो दिअ ।
यूवक-२ : हमरो एकटा देव ।
यूवक-३ : हे हमरो एकट दिअ । (ताबत दु तीन गाटे हमरो एकटा हमरो एकटा स्वरक संग मांग करेत अछि ।)
पुरुष-१ : ठहरु । एखन ककरो नहि देब ।
यूवक-३ : किए ?
पुरुष-१ : छै बात ।
युवक-३ : त से कि छै, हमहू सब बुझिऐ ने ।
पूरुष-१ : जे हम कहलहुँ, ताहिपर अहाँ सभके विश्वास भऽ गेल ? (सभ चुप्प अछि ।)
पूरष-१ : हम बुझै छी, अहाँ सभ गुन धुन क रहल छी । त लिए एकरा हम जाचिकऽ देखबैत छी । (पुरुष-१ वसुरी, डमरु बजबै तफेर एकचक्कर लगवैत अछि । एक ठाम अटकि जाइत अछि ।)
पुरुष-१ : गुलभटी ? (१०-११ वर्षक बच्चा जे औघायल रहैछ, चौकि कऽ साकांक्ष भ' जाइछ ।)
पुरुष-१ : गुलभटी ?
गुलभटी : जी, उस्ताद ।
पुरुष-१ : रोजी रोटी के सबाल छै ।
गुलभंटी : हुकुम उस्ताद ।
पुरुष-१ : खेलशुरु कर पडतौ ।
गुलभंटी : त शुरु करु ।
पुरुष-१ : साहेवान, कदरदान । आव अपने सभके जन्तरके कमाल देखबैत छी । (सामूहिक रुपे देखाउ, देखाउ क स्वर अभरैछ । पुरुष-१ कारी झोरामेसँ दुगोट चादरि निकालैत अछि । एकटा विछबैत छैक । गुलभंटीके इशारा करैछ । गुलभंटी चादरि पर सुति रहैछ । पुरुष-१ दोसर चादरि ओकरा ओढादैत छैक । फेर वांसुरी आ डमरु बजबैत घुम लगैछ ।)
पुरुष-१ : (एकठाम ठमकैत) आव हम देखायव हमर गुलभंटी एहि जन्तर के प्रभाव स कोना सभक मोनक वात वतबैत अछि ।
दर्शक सभ साकांक्ष भ' जाइछ ।
पुरुष-१ : कारी झोरा सँ एकटा जन्तर चीत सुतल गुलभंटीक छातीपर राखिदैछ ।
पूराष्-१ : (जोरसँ डमरु बजबैत) गुलभंटी ?
गुलभंटी : जी उस्ताद ।
पुरुष-१ : खेल चालु करु ?
हम तैयार छी उस्ताद । (पुरुष-१ आब दर्शक के ठिकिअबैत, डमरु बजबै, घुम लगैछ । एक गोटे लग जा अटकि जाइछ ।)
पुरुष-१ : गुलभंटी ?
गुलभंटी : बाजू उस्ताद ।
पुरुष-१ : आब हमरा लग आ ।
पुरुष-१ : (पुरुष-२ के ठिकिअबैत) हिनका चिन्हैत छीही ?
गुलंभटी : खुब नीक जकां ।
पुरुष-१ : ई के छथि ?
गुलभंटी : ई स्मगलर छथि ।

पुरुष-१ : (चौंकि) आएँ, स्मगलर ?
गुलभंटी : हँ, उस्ताद । भारत सँ सामान लावि भन्सार टपबैत छथि आ काठमाण्डू भेजैत छथि ।
पुरुष-१ : एखन हिनका मोनमे की छनि ?
गुलभंटी : ई जल्दी एत स जाए चाहै छथि ।
पुरुष-१ : किए ?
गुलभंटी : जटही भन्सार पर टत्रक पकडायल छनि । एकटा पावर वला नेताके सिफारिस पत्र लेब आयल छलाह । से भेटि गेल छनि, तएँ घरफडी छनि जएबाक ।
पुरुष-१ : से कोना बुझै छही ?
गुलभंटी : हुनकर उपरका जेबीमे सिफारिशी चिट्ठी छनि ।

पुरुष-२ तेजी स जेबी झाँपि लैछ । पुरुष-१ हाथबढा जेबीस पत्र बहार कऽ लैछ आदर्शक के देखाब लगैछ । पुरुष-२ क चेहरा उडल उडल सन । पूरष-१ फेर चक्कर देब लगैछ । उक ठाम अटकि जाइछ ।

पुरुष-१ : गुलभंटी ?
गुलभंटी : हँ उस्ताद ।
पुरुष : हमरा लग आ !
गुलभंटी : आबि गेल हुँ गुरु ।
पुरुष-१ : एहि बाबू साहेब के चिन्है छे ?
गुलभंटी : चिन्हलियनि ।
पुरुष-१ : पहिरन केहन छनि ?
गुलभंटी : निचा उजर पेट आ उपर छिटका शर्ट पहिरने छथि ।
पुरुष-१ : हुँ, (किछु सोचि) अच्छा, हिनक मनक वात बता ।
गुलभंटी : मोने मोन फुलझरी छुटैत छनि ।
पुरुष-१ : (साश्चर्य) फूलझरी ?
गुलभंटी : हुँ, उस्ताद । आइ एकटा नीक सौदा पटलन्हिए । (पुरुष-३ कछमछाए लगैछ ।)
पुरुष-१ : केहन सौदा ?
गुलभंटी : मोहीके लगत कटाब वला सौदा ।
पुरुष-१ : ई त जल्दी नहि कटाइ छै ?
गुलभंटी : इहो कायबर्ष झुललखिन्ह । आब दशहजारपर आइए सौदा पटि गेल छनि । आ काल्हि लगत कटि जएतै ।
पुरुष-१ : से कोना बुझै छही ?
गुलभंटी : एखने आधा घंटा पूर्व जानकी मन्दिरक उतरबारि कात वैना महक पाँच हजार लेलखिन्हए ।
पुरुष-१ : ईहो पता छौ ?
गुलभंटी : एतबे नहि, सभ पाई घरावालीके पठा देलखिन्ह आ एक हजार दारु के उधारी देबला पछिलका जेबीमे छनि ।
पुरुष-१ : (पछारीक जेबी सँ हजारी वहार करैत) नम्वर बता सकैत छै ?
गुलभंटी : किएकने । (पुरुष-३ क मुंह अपने सन भऽ जाइछ । दर्शक हंसि दैछ । पुरुष-१ क नजरि एकाएक किछु दुर पडि जाइछ । आंखिमे दहशति भरि जाइछ । धरफरा कऽ झोडी उठाव लगैछ । )
पुरुष-१ : गुलभंटी ?
गुलभंटी : जी उस्ताद !
पुरुष-१ : खेल समट, नाहकमे मारि खएबे ।
गुलभंटी : की भेल उस्ताद ?

पुरुष-१ : सिपाही अबै छौ । कहने रहए जे पन्द्रह बीस मिनट सँ फाजिल एत खेल नहि देखवला ।
गुलभंटी : उस्ताद ?
पुरुष : जल्दी भाग नहि त चारि डंटा मारतौ आ हवालात मे बन्नो कऽ देतौ ।
गुलभंटी : ऊ सार, अपने चोर है, हमरा की पीटत ।
पुरुष-१ : वाप रे । गुलभंटी तो हमर धंधा चौपट करवे । ऊ आबि गेलै ।
गुलभंटी : आब दिऔ उस्ताद, देखलजएतै । (पुरुष-१क मुहपर एखनो दहशत अछि सिपाही घेराके चिरैत आगा वढैत अछि ।)
सिपाही : अएँ, रौ । तो एखन धरि एत सँ गेल नहि छे ?
पुरुष-१ : हवलदार साहेब, आब जाइते छली कि अपने....।
सिपाही : चुप जाइते छलहु..... । वापक राज छौ, अएंरे ।
गुलभंटी : (बीचमे वात लोकैत) उस्ताद ।
पुरुष-१ : कीक है छे गुलभंटी
गुलभंटी : हवलदार साहेब की कहै छथि ?
पुरुष-१ : कहै छथि जल्दी एतस जाए लेल ।
गुलभंटी : उस्ताद, हिनका कहि दिऔ, हाकिम बेसब्रीस हिनकर ईन्तजार करै छथि । (उस्ताद सिपाही दिश ताकऽ लगैछ ।)
सिपाही : किएक, हमरा किएक ईन्तजार करत ?
पुरुष-१ : किए ईन्तजार करैत हयतनि ?
गुलभंटी : कमिशन के पाई लेल ।
सिपाही : (रोबसँ) चुप्प सार । कमिशनके पाईलेल ।
गुलभंटी : उस्ताद, वात बढि रहल छै ।
सिपाही : दुइए चारि डंटा लगतौ कि सभ खेल घुसरि जएतौ । (पुरुष-१ दुनुक सम्वादमे भौचक्क पडल अछि ।)
पुरुष-१ : (निहौरा करेत) हजुर । एहिमे बच्चाके की बसुर । ई त जन्तरे एहन छै जे लोकक पेटक बात कहि दैत छैक । ई बच्चा तकरे प्रभावमे वाजि रहल अछि ।
सिपाही : त एहन बकवास किए करैए । हमरा सभके ईज्जत नहि अछि की ?
गुलभंटी : उस्ताद !
पुरुष-१ : तो चुप्पपे रहि जोक किनकाल ।
गुलभंटी : नहि उस्ताद । जा धरि हमरा छातीपर ई जन्तर रहत हमरा रहल नहि जाएत ।
सिपाही : अच्छा त जाधरि इ जन्तर एकरा छाती पर रहतै ई साँच बजते रहतै (पुरुष-१ सं) त फेकि दे एहि जन्तरके ।
पुरुष-१ : (निहोरा करैत) नहि हजुर । ई हमर रोजी रोटीक सबाल अछि, जँ खेल नहि देखएबै त लोक पतिअएतै कोना । आ ज पतिअएतै नहि त किनतै कोना ।
सिपाही : त एना अन्ट सन्ट नै कही बाजला ।
गुलभंटी : उस्ताद ।
पुरुष-१ : (थाकल थाकल सन) की कहै छे ।
गुलभंटी : हवलदार साहेवके कहि दिऔन पछिलका जेबीमे बीस बीस हजार टाका नहि धरैथ लोक निकालि लेतनि । (सिपाहीक चेहरापर एक क्षण आश्चर्य आ आतंकक भाव अवैछै । हाथ पछिला जेबीपर चलजाईछ । फेर यथावत भ अपनाके सहज वनबैत अछि ।)
सिपाही : अएँ ई की कहलक बीस हजार रुपैया ? हम कतसँ एतेक पाई लाएव । (पुरुष-१सँ) हे देख कहि दैत छियौ । पाँच मिनटके भितर नै उठौले अपन ई भावट त हम अपनेस फेकि देबौ ।
पुरुष-१ : नै माई बाप । मात्र १०-१५ मिनट आउर ।

सिपाही : किछु नहि सुनवौ । बड बढल बढल वात वजैछै ई तिल विखना । विस हजार । सिपाही मोछ पर तावदै छ । घेरामे चारु कात रोब सँ तकैत अछि ।)
पुरुष-१ : गुलभंटी ।
गुलभंटी : जी उस्ताद ।
पुरुष-१ : तोरा गल्ती भ गेलौ ।
गुलभंटी : कथकि गल्ती ।
सीपाही : देख । देखै छीही अपन गल्ती नै स्वीकार करैछै ।
पुरुष-१ : (सिपाही के हसारास कहैत) ठहरु समभ्का दैत छीयैक । (गुलभंटीस) बेचारा एकटा हवलदार ई बीस हजार रुपैया कत देखत ? (सिपाही समर्थनमे माथ डोलबैत अछि ।)
गुलभंटी : उस्ताद बोर्रा विस्तर समटु ।
पुरुष-१ : (किछु चौकैत) किएक ?
गुलभंटी : अहाँ के अपने जन्तरपर विश्वास उठिगेल अछि ।
पुरुष-१ : (एकक्षण सोचैत) नहि से त हम नहि कहलियौ ?
गुलभंटी : तखन ई गप्पी सिपाहीके फेरमे पडि गुम्म किए भ गेल छी । (सिपाही पिताकऽ आगा बढैत अछि कि कमिशन के वात सुनि रुकि परेत अछि ।)
पुरुष-१ : कमिशन बला बात त..... ।
गुलभंटी : (वीचमे लोकैत) कमीशन ? मारि पिटमे भ्कै भ्कगडामे, शान्ति, सुरक्षामे, मिलापत्रमे, चोरी, डकैतीमे लागु पदार्थके ओसार पसारमे ।
पुरुष-१ : (अगुताकऽ) की सभ वकै छे ।
गुलभंटी : धैर्य राखु उस्ताद । स्मगलिंगके माल टपएबामे, वन जंगल नाश करमे, जुवा तास खेलएबामे, स्थानिय बैंक सभमे पाकेटमारी करबएबामे सभ मे हिनके सभक हाथ रहै छनि ।
सिपाही : (क्रोधित भ' पुरुष-१ लग पहुचैत) हे आब हद भ गेल, तो उठबैछे कि दिऔ लाठी । ( हाथक लाठी उठबैत अछि ।)
पुरुष-१ : दोहाई साहेबके । हे आब हम उठएलहुँ । बाज अएलहुँ ई जन्तर वेच सँ ।
सिपाही : चुप सार । कोनो नीक लोकके एना चौक चौबटिया पर ठाढे बेइज्जती करब की इ उचित भेलै ? आब हम नहि हानबौ ।
गुलभंटी : उस्ताद ।
पुरुष-१ : आँखि गुरडिकऽ ओम्हरे तकैत) आव की कहबाक छौ सभ धन्धा चौपट क देले ।
गुलभंटी : साँच कहबामे दुख त उठाबही पडैछै उस्ताद ।
पुरुष-१ : आ पेट ?

पुरुष-१ गुम्भ भ । जाईछ सिपाही फेर' उठा जल्दी चल कहि पुरुष-१ के कुबिआब लगैछ ।

पुरुष-१ भ्कोरा ठीक करेछ आ बच्चाक देहपर राखल जन्तर उठाब लगैछ ।

गुलभंटी : ठहरु उस्ताद ।
पुरुष-१ : (ठमकि) किए ।
गुलभंटी : ज आब जाहीके बात छै त सभक सामने एकटा साँच आर वाजीए दैछ ती । (सिपाही साकांक्ष भ जाइछ । मुहंपर एकभाव अबैछ दोसर भाव जाईछ । कछमछाहट बढि जाइछ । पुरुष-१ गुलभंटी दिश एनाकऽ तकैछ जे जं आब ओ किछुओ वाजल त सव नाश भ' जएतै ।)
गुलभंटी : एही क्षेत्रमे जतेक चोरी, डकैती भेलैए एक्कोटा चोर पकडल गेलैए ?
यूवक-१ : नहि, से त पकडल नहि गेलैए ।
गुलभंटी : किएक ? पुछियौ सिपाहीजी सँ ।
यूवक-२ : कि औ हवलदार साहेव । किए ने पकडएलै ?

सिपाही : (झडकि) से तोहर काज छौ ? खोजवीन त चलिए रहल छै ।
यूवक-३ : यौ कहिया धरि ई खोज वीन चलैत रहत आ कहिया चोर पकराएत ।
सिपाही : अवश्य पकडायत !
गुलभंटी : फूसि । एकदम फुसि । औ उस्ताद । चोर आब त नहिए पकडाएत ।
पुरुष-१ : किए ?
गुलभंटी : कारण सुनब ? त सुनु आई ताही चोर सभक एकटा वैसार छलै । धर्मशालाके एकटा कोठरी मे । (सिपाहीक मुहपर हवाई उड लगैछ । ओ चार भर चकुआइत जाए लगैछ ।)
गुलभंटी : हवलदार साहेव । ठहरु, हमरा सभके थाना लेनही चलु । (जाइत जाइत सिपाही ठमकि जाइछ । मुदा भावसँ भितरे भितरे छटपटाईत ।)
गुलभंटी : हम जे कहने छलहुँ जेवीमे बीस हजार टकाक वात ।
यूवक १,२,३ : (सँयूक्त रुप सँ) हँ हँ बीस हजार टकाक वात की भेलै ?
गुलभंटी : उस्ताद । ओ बीस हजार टका ओएह चोर सभ पहिले किस्त बुझौलक अछि सिपाही साहेब के । (सिपाहीक मुह कानऽ सनके भ जाइछ । सिपाही चोर जका चकुआइत चलि जाइत अछि ।)
गुलभंटी : उस्ताद, चलु, उठाउ ।
पुरुष-१ झोरा उठब लगैछ ।
युवक-१ : ठहरु ।
पुरुष-१ : (गहीर नजरि सँ देखैत) किए ?
युवक-१ : अहाँ खेल समेटिक त' जाए चाहैछी ? (एहि बीच सिपाही सहटिकऽ चल गेल रहैछ ।)
पुरुष-१ : हवलदार साहेब के सँगे थाना जएबै नहि ।
यूवक-२ : मुदा हवलदार साहेब छथि कत ? (सभ ताक लगैछ । सिपाही पहिने चलगेल रहैछ ।)
यूवक-१ : आब, ओ अपनेभ गिगेल छाडु देखाउ किछु आर ।
पुरुष-१ : की देखाउ हजुर । ई जन्तर कयवेर आफत आनि देलक अछि । मुदा की करु, पेटक सवाल छै ।
युवक-१ : हे, साँच वात एहिना कष्टकर होइछै । अहाँक जन्तर त लुटु भ जाएत । किए सोचै छी । (पुरुष-१ वांसुरी आ डमरु बजव लगैछ । एक फेरा मारि लेलाकवाद पुनः अपना स्थानपर आवि ठाढ भ' जाइछ ।)
पुरुष-१ : गुलभंटी ?
गुलभंटी : हँ, उस्ताद ।
पुरुष-१ : खेल चालु रहय ।
गुलभंटी : ठिक छै उस्ताद ।
पुरुष-१ : (एक गोटे नेता सन लोक लग ठाढ होयत) एम्हर आ ।
गुलभंटी : आवि गेलहुँ ।
पुरुष-१ : ई के छथि ?
गुलभंटी : ई सता पक्षक वड प्रिय नेता छथि ।
पुरुष-१ : हिनक मनकबात बताबऽ सकैछे ?
गुलभंटी : किएक ने । ई अगिलावेर सांसदक टिकटक जोगाडमे लागल छथि । (नेताक चेहरा खिल उठैत छनि ।)
पुरुष-१ : आगा बता ।
गुलभंटी : एहि अढाई वर्षमे टिकट पक्का करबाक लेल वडवड पापर वेललनि । भरिसाल पहुचौलनि केन्द्रमे आम माछ खसी आ..... रह दिऔन ।
नेताक चेहरा उतरि जाइछ ।

पुरुष-१ : आर किछु ?
गुलभंटी : वहुत किछु छै । (नेता हताश होइत पुरुष-१ के ईशारासँ अपना लग वजबैछ ।)
तोता : (जेना कानमे कहैत हो) खेलबला । आब किछु नै वजाउ एकरासँ
पुरुष-१ : हजु, ई नहि वजतै त हम सभ खएबै कथी ? जन्तर पडले रहिजएतै ।
नेताजी : (एम्हर ओमहर चकुआईत) हे, सभ जन्तर हम किन लेब जाउ उठु एहि ठामस ई हमर चुनाब षेत्र हय ।
पुरुष-१ : (प्रशन्न होइत) एह, माई बाप । अपने सभक दया पर त हम भस जिबै छी । ( गुलभंटीसँ) गुलभंटी ?
गुलभंटी : हुकुम उस्ताद !
पुरुष-१ : खेल खतम । अपन दाना पानीके जोगाड भऽ गेलौ ।
गुलभंटी : नेताजी के वारेमे....।
पुरुष-१ : नहि,आव भऽ गेलै । चल । (नेताजी आश्वस्त होइत छथि)
गुलभंटी : मुदा जिल्ला विकास समिति सँ लऽ गेल कामक लेल खाद्यान्न सभत अपने खयलनि, जन सभ बोनिलेल नगरमे हिनका तकैत छनि से कहि दिऔ । (नेताजीक चेहरपार फेर उदासी कछमछी देखि पडेछ ।)
नेताजी : (पुरुष-१ सँ) खेलवाला ।
पुरुष-१ : गुलभंटी, समट अपन भाभट
गुलभंटी : ई सभ जन्तर किनताह ने ।
पुरुष-१ : से त किनताह ।
गुलभंटी : तखन ई हमरा सभक शुभ चिन्तक भेलाह ।
पुरुष-१ : हँ, से त भेलाहे ।
गुलभंटी : त, जाइत, जाइत एकटा आर सलाह छनि ।
नतोजी : (लगभग चिचिआकऽ) खेलवाला । कतेक पाइ भेलह । बन्न कर ई खेल जा जल्दी जा ।
पुरुष : (किछु जोडैत) एक सय पचास टाका । (नेताजी जेबीसँ पर्स निकालि पाई गन लगैछ ।)
गुलभंटी : उस्ताद ।
पुरुष- : आब भ गेलै चुप्प ।
गुलभंटी : एकटा छोटके सल्लाह हिनके फायदा करतनि ।
पुरुष-१ : ई पुनः नहि चाहैत छथि ।
गुलभंटी : तैयो हिनका जान वंचतनि ।
पुरुष-१ : तेहन वात छै ।
गुलभंटी : हँ, उस्ताद । किछु शिक्षकमे फयल भेल उम्मेदवार हिनका खोजि रहल छनि ।
नेताजी पाइ गनब छोडि साँकाक्षा भऽ जाइछ ।)
पुरुष-१ : किएक ?
गुलभंटी : प्रत्येक सँ बीस हजार टाका उठालेने छथिन पासकरा देबौ कहि कऽ । सभ पाई अपने लग राखि लेलनि आ आयोग वला अपना आदमी पास कऽ लेलक । हिनकर एक्कोटा नहि पडलनि ।
पुरुष-१ : तखन ?
गुलभंटी : ओ सभ जुताक माला लऽ कऽ हिनका खोजिते एम्हरे आवि रहल अछि, ई जतेक जल्दी भ सकैक भागि जाथु । (नेताजीक होश उडल जाई छनि ।)
गुलभंटी : आ उस्ताद ।
पुरुष-१ : भ' गेलै नेताजीके फेर भागहु पडतनि । वन्न कर ई वकवास । (नेताजी जल्दी जल्दी पाई गन लगैछ ।)
गुलभंटी : किछु आर कह चाहैछी ।

नेताजी : (उडल उडल सन) खेलवाला, आब बन्न करु ।
पुरुष-१ : गुलभंटी, नेताजी पाई गनि लेने छथि । एक्के ठाम एक मुष्ठ किए बक बक करब दश ठाम । चल
गुलभंटी : मुदा उस्ताद जाधरि हमरा छातीपर जन्तर रहत, हमरा मुह सँ साँचबात सभ निकलिते रहत, ई बात बुझल नहि अछि ?
पूरुष-१ : (जेना किछु मोन पडैछ) जा, तएँ इ बजैत छल बक बक । हे लिअ, जन्तर उठालेत छी ।
गुलभंटी : ठहरु उस्ताद ।
पुरुष-१ : कैला रे ? आब त खेल खतम छै ।
गुलभंटी : नै उस्ताद । खेल त आब शुरु होत ।
पुरुष-१ : जल्दी बाज । की कह चाहैछे ?
गुलभंटी : नेता जी के बजबियौ ।
पुरुष-१ : की भेलेन से ?
गुलभंटी : देखियौ दक्षिण दिश जुत्ता के माला लऽकऽ....।
पुरुष-१ : (वीच मे लोकैत) भागु नेता जी । (आस्वयं जन्तर उठा गुलभंटीक संग एक दिश पडा जाइ छै ।)

# नेताजी आबि रहल छथि

खाली मंचक एकटा कोनपर बैसल सुत्रधार । अन्हार मंचपर मात्र सुत्रधार पर प्रकाशक गोला पडैत । हाथ, मुंहक भावसं एना बुझाइत जेना ककरो इन्तजार होइक । घडीपर बेर बेर नजरि जाइत फेर चकुआ क तकैत । ई क्रम कनेककाल चलैत छैक । फेर ओ उठि जाइत अछि आ टहल लगैछ । प्रकाशक घेरा ओकरा आकृतिक संग मंचपर चलैत रहैछ ।

सुत्रधार : (ठमकि) हद भ गेल । ओना क' कहि देने रहिऐ जे आइ त कोनो हालतिमे नाटक करही पडत । मुदा ओ छथि जे एखन धरि अभरि नहि रहलए ।

कनेककाल तहिना व्यग्र भ' टहलैत आ एकदिश गौरसँ देखैत बूझि पडैत अछि । फेर माथ हिला टहल लगैछ ।

सूत्रधार : (किछु रोषसं) ए, कत्त रहलहु । लगैए आइ हमरा दर्शक सभ स जुता खुआएब । लोक बैसल छथि आ अपने पार । मनमे विचारो त चाही....।

तखने नटीक प्रवेश । प्रकाशक घेरा नटीपर सेहो पड लगैछ ।

नटी : (अन्तिम बात पर जोडदैत) कथीक विचार ।
सूत्रधार : (रोषसं) इउह अएलखिन्ह मलिकाइन विचार जान ।
नटी : आहिरेबा, एतेक पिताएल किए छी ?
सूत्रधार : नहि, हमरा त पितएबाक नहि चाही । कही त हम एत्त नाच लागी ।
नटी : लगैए सएक कर पडत ।
सूत्रधार : की माने ?
नटी : नाटक प्रायः नहि हयत ।
सुत्रधार : (साश्चर्य) अएँ !
नटी : हँ, नाटक नहि हयत ।
सूत्रधार : किए ?
नटी : कलाकार सभ नहि मानै छथि ।
सूत्रधार : किए नै मानै छथि ?
नटी : कहव छनि जे एतेक मेहनतस नाटक करैछी, मुदा मोजर नहि देल जाइए ।

सूत्रधार : मोजर ? से कोना ने दैत छिएनि । रिहलसलक हेतु घरे घरे बौआ कऽ बजविते छियनि । घडी घडी चाह पान भइए जाइ छनि । तखन मोजर.......?
नटी : से त ठीक छै, मुदा हुनका सभके कथन छनि, जे इ छुछुआन सन लगैए ।
सूत्रधार : से कोना ?
नटी : आब जखन सभ केओ अपन अपन अधिकार आ सुविधाक मांग कऽ रहल हो तखन कलाकार किए ने करथि ।
सूत्रधार : मुदा कलाकार कोनो हमर कर्मचारी नहि ने छथि । ओ सभ त मित्र छथि ।
नटी : कहांदन एहिना भित्र कहि खूब ठकन छियनि, से आव फरिछाव' चाहै छथि ।
सूत्रधार : (लगभग चिचिआइत) खाक सोच' पडत । हुनको सभके एखने हडताल करबाक छलनि ।
नटी : कहै छलाह तुकपर मांग रखने पूरा होइछै ।
सूत्रधार : चुपु ! तुकपर मांग रखेन !! एखन दर्शक सभ उठि उठि कऽ ज जुतिआव लागए त कोन मांग, के पूरा करतै ?
नटी : अहा त ओहिना खिसिआ जाइछी । (चुप्पी)
सूत्रधार : जं कि ओ सभ नहिए अएलाह त आब किछु सोच' तऽ पडत ।
नटी : एत्तेक जल्दी की भऽ सकैछ ।
सूत्रधार : भ किएने सकै छै ।
नटी : कोना ?
सूत्रधार : विषय सोचू । नयां नाटक मंचित क' देब ।
नटी : खेलत के ?
सूत्रधार : हम आ अहा !
नटी : हम अहां ! दुत् आव की खेलब हमसभ !
सूत्रधार : से किए ? जरुरी पडने सभ किछु कर' पडैछै ।
नटी : हमरा बूते नै होएत ।
सूत्रधार : बेसी छीडहिल्ला नहि खेलाउ । लगैए अहु मौका देखने भाओ बढा रहल छी ।
नटी : अहुं कीदन कहान बाज' लगैछी । आब धीआ पुताक आगां..... ।
सूत्रधार : त की एसगरिमे लोक नाटक खेलैए ।
(चुप्पी)
नटी : लगैए अहां नै मानव । त ठीक छै । तैयारी करु !
सूत्रधार : (किछु सोचैत) मुदा तैयारी कोना करु ? ने कथानक अछि आ ने.....।
नटी : से त अही कहैछी । छोडु आई ।
सूत्रधार : (दर्शक दिशि देखैत) अहा त महिला छी, भऽ सकैए छोडियो दिए मुदा हमर दशा !
नटी : (बीचमे लोकैत) तखन की करब, ने रिहलसल आने पार्ट आदि ।
सूत्रधार : तकर चिन्ता अहा नै ने करु । के रिहलसल कऽ ऽ पार्ट खेलाइए ।
नटी : फेर जे कथानक हयत तकर पार्टो याद हएबाक चाही ने ।
सूत्रधार : हद भ गेल । औजी पार्ट याद कऽकऽ के खेलाइत अछि । देखै नै छिऐ, प्रोम्पटर सेहो एकटा कलाकार भऽ गेल अछि ।
नटी : की माने ?
सूत्रधार : माने पाछास प्रौम्प्ट कनेक ठीक स कहै त नाटक खेपि लेबै की ?
नटी : (सभ किछु अबधारैत) जे अहां करी ।
(चुप्पी)
सूत्रधार : सभ सं भारी प्रश्न अछि कथानक की हुअए ।

सोचबाक मुद्रामे एक-दू बेर टहलि मोढापर बैसि जाइछ। नटी सेहो दोसर मोढापर बैसि जाइत अछि। कनेक कालक बाद पार्श्वमे नारा लगबैत जुलुशक स्वर सुनि पडैछ-'महगी नियन्त्रण करु', 'अजय चोर गद्दी-छोड', 'प्रजातंत्र जिन्दावाद'। सूत्रधार कनेककाल अकानैत अछि फेर जेना किछु फुरागेल होइक चौकि उठैत अछि।

सूत्रधार : हे, सुनैछी !
नटी : हँ, हँ, बाजू !
सूत्रधार : (प्रशन्न होइत) विषय भेटि गेल। जल्दी हरु।
नटी : कोन विषय ?
सूत्रधार : देखलिऐ नहि। एखने जुलुश बहार भेलए।
नटी : सुनलिऐ त। महंगीक विरुद्धमे छल।
सूत्रधार : अहाके नै लगैए जे ई विषय कतेक टटका छै।
नटी : (मोनेमोन तोलैत सन) लगैत अछि।
सूत्रधार : तखन देरी कथीक एखन डेण्ढ घंटा देरी अछि निर्धारित समयमे। एहि बीच सम्वाद तैयार भऽ सकैछ।
नटी : मुदा एकटा बात कहुं।
सूत्रधार : (अगुताइत) जे कहवाक हो जल्दी कहु।
नटी : महगी कोनो तलगर विषय नहि भेल।
सूत्रधार : (साश्चर्य) अएँ ? महगी कोनो तलगर विषय नै ! (मोढापरसं उठि जाइत अछि )
नटी : (उठैत) एहन नै जे लोकके झकझोडि दैक।
सूत्रधार : हद भऽ गेल। औजी, लोकके जेबीमे पाइ छै मुदा खएबाक लेल पेटमे विलाइ डंड बैसकी करै छै।
नटी : से त छै।
सूत्रधार : कोनो समानक मोल आइ की छै काल्हि की भऽ चाइछै। चाउर, दालि, पिआउज, तीमन तरकारी, छै कोनो नियंण ?
नटी : हम त बजारो जायव छोडि देनेछी।
सूत्रधार : तखन अहां कोना कहै छी जे महंगी कोनो तेहन विषय नै भेलै ?
नटी : नाटकीयताक कीम लगै छै।
सूत्रधार : लोक त्राहिमाम् करैए आ अहांके नाटकियता सुझि पडैए। औ जी, मनेके छुअबला कोनो विषय नाटकमे चलतै।
नटी : मुदा महगी एतेक व्यापक भऽ गेल अछि। जे आब ई विषय लोक अंगा लेने अछि।
सूत्रधार : मुदा एहि देशमे कोनो सरकार छै कि नै ?
नटी : खुब छै, निर्वाचित सरकार छै।
सूत्रधार : तखन हम कलाकार सभक की कर्तव्य भऽ जाइत अछि, समाजक समस्यापर सरकारक ध्यान खिची कि नहि ?
नटी : से एहिसं पूर्वो बहुत ध्यान खिचल गेल अछि।
सूत्रधार : त की चैन सँ सुति रही ?
नटी : नहि, सुतबाक कोनो अर्थ नहि हयत।
सूत्रधार : जं नहि सुती, त किछु त करही पडत।
नटी : (मुहलटकबैत) विषय इहो बेजाय नै छल।

सुत्रधार फेर स मुंहलटका बैस रहैए। तखने फेर उएह जुलुश घुमै छै - ˘महगी नियन्त्रण करु, अजय चोर-गद्दी छोड़ ! प्रजातन्त्र जिन्दावाद !

सूत्रधार : (नटी स) हे, सुनैछी। एनाकरु, एकटा जुलुशबलाके घीचि कऽ अनु त।

नटी : से किए ?
सूत्रधार : लाउने पहिने बात बुझबै ने ।
नटी : ठीक छै । हम बजा अनैछी ।
नटी पार्श्वमे चल जाइछ । कनेक कालक बाद एकटा पुरुषके बजौने अबैछ । पुरुष -१ क हालति जर्जर छै । देहपर फाटल कमिज, मैल पेउन लागल धोती, रुख्खकेस, हाथमे एकटा प्लेकार्ड 'महगी नियन्त्रण करु' लिखल, मंचपर पूर्ण प्रकाश पसरि जाइछ ।
सूत्रधार : (पुरुष-१सँ) भाई साहेब, ई जुशलु कथीक छलै ?
पुरुष-१ : महंगीक विरोधमे छलै ।
सूत्रधार : एहि जुलुशसं महँगीमे कमी भऽ जायत ?
पूरष-१ : प्रजातंत्र आबि गेलै से पता नै अछि ?
सूत्रधार : पता त अछि । की प्रजातन्त्र अएने महगी कम भऽ जाइछै ?
पुरुष-१ : नै, जुलुश निकालबाक स्वतन्त्रता होईछै ।
सूत्रधार : माने ई जुलुश निकालबाक एक्केटा प्रयोजन प्रजातंत्रक उपभोग, आकि नै ?
पुरुष-१ : अहां जे बुझी । हम सभ त नारा लगबैत जुलुश निकालैत रहब ।
सूत्रधार : लगैए एहि सं भाओ कम हयतै ?
पुरुष-१ : (झौंक क') औजी, हम कहैछी किने, ई प्रजातंत्रक उपभोग छै !
सूत्रधार कनेककाल गुम्म भ' जाइत अछि । पुरुष-१ क उपर निचां खूब गौर सं तकैत छै ।
सूत्रधार : भाई साहेब, एकटा बात कहब ?
पुरुष-१ : जल्दी बाजू, हमरा जुलुशमे सामिल होएबाक अछि ।
सूत्रधार : देहक ई हालति किए कएने छी ?
पुरुष-१ : ई हालति हम कैने छी । गजब करैछी अहु ।
सूत्रधार : लगैए पिता गेलहु । हमर पुछबाक माने ई नहि छल । एना हालति भेल किए ?
पुरुष-१ : अहींक कारण !
सूत्रधार : (चौकैत) हमरे कारण । (क्षणिक विराम) नहि, हमरा त नहि लगैए जे हम किछुयो अहांके कयने होइ ।
पुरुष-१ : ई सरकार अहींक अछि ने ?
सूत्रधार : (अकचकाइत) नहि !
पुरुष-१ : तखन, हम एहि मालतिमे जुलुशमे चिचिआ रहल छी आ अहा एत्त बैसल बात चिबबैछी । से हम कोना बुझू !
सूत्रधार : ओह, त से गप छै । (क्षणिक विराम) सांचबात त ई अछि हम कलाकार छी । आ नाटक देखएबाक लेल समस्या ताकि रहल छी ।
पुरुष-१ : समस्या ? औजी अहांक आंखि केहन अछि । की इृ समस्या नहि थिक ? पढल-लिखल छी ने ?
सूत्रधार : छी त किछु
पुरुष-१ : (प्लेकार्ड दिश देखबैत) पढु की छै लिखल ।
सूत्रधार : (पढैत) म.ह.गी.नि.य.त्र.ण.क.....रु !
पुरुष-१ : आबो किछ बुझलिऐ किने ?
सूत्रधार : (नटी दिश ताकि) बात त ठीक बुझाइए । आवो अहाँक मन बदलल अछि किने ।
नटी : (पुरुष-१ दिश गौरसँ गकैत) हँ, समस्या इहो गंभीर अछि ।
तखने पाशर्वमे फेर जुलुश, नाराक स्वर भ्रष्टाचार बन्द करु, अजय.....चोर गद्दी छोड, प्रजातन्त्र जिन्दाबाद ! सूत्रधारक ध्यान ओम्हरे जाइत सन देखि पडैछ ।

मोढापार वैसैत छैक । फेर उठि नटीके संकेत कऽ अपना दिश बजबैत अछि ।

सूत्रधार : विषय त भ्रष्टाचार बेजाय नहि अछि ।

नटी : हम आव किछु ने कहब ।

सूत्रधार : तखन हम किछ ने कऽ सकब ।

नटी : इएह अछि पुरुष सभमे । जखन काज लेबाक रहत त मीठ मीठ बात कऽ स्त्रीके ठकि लेत । काज सुतरि गेल कि.... ।

सूत्रधार : मुदा अहाँ तेहन जनानी नहि छी ।

नटी : फेर चापलुसी ?

सूत्रधार : ठीके कहैछी (वाम हाथ पीठपर धऽ लग खिंचैत) अहा बिना हम अपूर्ण छी ।

नटी : बुझलहु । किछु दर्शकोक खिअअल करियौ ।

सूत्रधार : (जेना केओ विठुआ काटि लेने होइक) हँ, हँ, हम तकरे इन्तजाममे छीने । (चुप्पी)

नटी : से जल्दी करियौन !

सूत्रधार : सएह त पुछलहुं, की भ्रष्टाचारक समस्या ज्वलन्त नहि छैक ?

नटी : जरुर छै । कोनो अडा खाना होइ आव देखार घूस लैत छैक । जं किछु कहौ त हडताल पटी, कलम वन्द नहि जानि की की ।

सूत्रधार : (प्रशन्न होइत) कहलुह ने । अहाँ असल बुद्धिआरि छी । बात पकडि धरि तुरन्त लैत छिऐ ।

नटी : त की करबै ?

सूत्रधार : हमरा त विचार अछि भ्रष्टाचारेपर भऽ चलओ आजुक नाटक ।

नटी : मुदा इहो आव ततेक ने पसरि गेल छै जे दर्शकके ओतेक मन नहि लगतनि ।

सूत्रधार : (कनेक खौंभा क') फेर अहाँ तिरिआ चरित्तर लगौलहुँ ।

नटी : हँ, आव हम वकलेल भ गेलहु ने !

सूत्रधार : (किछु सोचि) नहि, से कहबाक मतलब नहि । आगांमे एतेक सुन्दर विषय आयल अछि आ अहाँ छोडि देब कहै छी ।

नटी : छोड कहाँ कहैछी । कहलहुँ जे दर्शकके मोन नहि लगतनि ।

सूत्रधार : तखन एहिमे भीतर जायल जाए । (क्षणिक विराम) हे, जाउ, जुलुश घुमल अबैए, एक गोटाके पकडने आउ ।

नटी : हँ, ई भऽ सकैए । किछु ओकरोसँ बुझिएली ।

नटी जाइत अछि आ एकगोटे कृषक सन व्यक्तिके बांहि धयने अबैत अछि । कृषकक हाथमे प्लेकार्ड छै 'भ्रष्टाचार बन्द करु' ।

सूत्रधार : (स्वागत करैत) आउ, भाई साहेब, आउ !

कृषक अबूझसन अनुहार लेनेक खनो सूत्रधारके, कखनो नटीके देखैत अछि ।

कृषक : की बात छै ?

सूत्रधार : भाइ साहेब, ई कथीक जुलुश छै ?

कृषक : आँखि दुरुस्त अछि ने !

सूत्रधार : कनेक नरमेसँ बाजी त उत्तम ।

कृषक : हमरा जुलुशो छोरा देलहुँ, आ कहैछी नरमी सँ बाजू ।

सूत्रधार : हम पुछलहु ई जुलुश कथीक छलै ?

कृषक : भ्रष्टाचारक विरोधमे ।

सूत्रधार : जुलुश बहार कैलासँ भ्रष्टाचार बन्न भ जायत ?

कृषक : (रुक्ख सँ) ई प्रजातन्त्र छै से मालुमन त अछि ने ?

सूत्रधार : खूब नीक जकां बूझल अछि ।

कृषक : प्रजातन्तमे एहिना जुलुश होइछै ।
सूत्रधार : मुदा जकरा हेतु होइ छै से कम होइ छै कि नै ?
कृषक : ताहि लेल थोडे जुलशु होइछै ।
सूत्रधार : आहिरेबा एतेक रौद बसातमे भ्रष्टाचार बन्द करबाक हेतु अपस्यात छी - कथी लेल ?
कृषक : अहाँ त शुद्ध गमार बुझाइछी । प्रजातन्त्र उपभोग करबाक लेल जुलुश ।
सूत्रधार : तखन भ्रष्टाचार कम करब मात्र बहाना भेल ?
कृषक : के कहैत अछि से ।
सूत्रधार : अहींक गप सं बुझायल ।
कृषक : लाल बुझक्कड छी अहाँ । चीत खातिर नहि भेल वस्तुक विरोधे प्रजातन्त्र छैने !
सूत्रधार : ओह ! तखन ?
कृषक : भ्रष्टाचार त एकटा बड भारी समस्या छैक । जहाँ जाउ ओतहि भ्रष्टाचार ।
सूत्रधार : (बात लोकैत) एक स एक । औंजी दुखे गरजे खेत बेचलहुं । रजिष्ट्री कर गेलहु त फांट फाट घुस देब पडल ।
सूत्रधार : बस ।
कृषक : वंशजक नाता सँ नागरिकता लेब गेलहुँ, फोटो साटमे घुस देब पडल ।
सूत्रधार : आर किछु ?
कृषक : विनासेती भाइके टांग हाथ तोडि देने रहे, थाना गेलहुं त विना पाइ लेने पुलिस घटना स्थलपर नहि आयल ।
सूत्रधार : आर किछु ?
कृषक : विनासेती भाइके टांग हाथ तोडि देने रहे, थाना गेलहुं त विना पाइ लेने पुलिस घटना स्थलपर नहि आयल ।
सूत्रधार : हूँ ।
कृषक : कोनो एहन अड्डा नै अछि जत्त काम करएबाकलेल किछु 'देब' नहि पडैत हो ।
सूत्रधार : (किछु सोचैत) समस्या त गंभीर अछि ।
कृषक : औजी 'मृत्यु दर्तौ करब' काल सेहो सचिव पाइ मंगै छै ।
सूत्रधार : हद भ' गेल ।
कृषक : एक दिश महंगी, दोसर दिश भ्रष्टाचार ।क हु लोक की करौ ।
सूत्रधार : एहनमे जुलशु निकालबाकस नीक दोसर कोन उपाय छै ।
कृषक : (गौर सँ सुत्रधार आ नटीके देखैत) मुदा अहाँ सभ ई किए पुछै छी ?
सूत्रधार : ओहिना, वात बुझ चाहै छलहु ।
कृषक : (सशंकित भऽ) नै लगै छी कोनो सी.आइ.डी. ने होइ ।
सूत्रधार : (हडबराकऽ) नै, नै वापरे एहन आरोपनै लगाउ
कृषक : तखन ?
सूत्रधार : हम सभ कलाकार छी - नाटक खेलबाक लेल समस्या तकैत छी ।
कृषक : ओह ! (क्षणिक विराम) भ्रचटाचार केहन समस्या लगल ?
सूत्रधार : (नटी दिश तकैत) बड सशक्त ! की ?
नटी : हँ, हमरो ई अपील कैलक अछि ।
सूत्रधार : त भऽ चलो एकरे तैयारी ?
नटी : वेजाय कोन ?
कृषक : ठहरु !
सूत्रधार : (अकचका) की भेल ?
कृषक : भ्रष्टाचार सँ सम्बन्धित समस्या बड महीन होइछै ।

सूत्रधार : सेत होइछै। मुदा....।
कृषक : (बात लोकत) तएँ, एहन पात्रक निर्माण करु जे ठीके भ्रष्टाचार निवारण करए।
सूत्रधार : अहाँक मतलब ?
कृषक : साफ मतलब अछि। भ्रष्टाचारक मेटाएबालेल जकर नियुक्ति होइ छै ओ तकरो सँ पैघ भ्रष्टाचारी भऽ जाइए
सूत्रधार : ओह !
कृषक : सरकार मूल्य नियंत्रण करबाक लेल छापामारि करै छै।
सूत्रधार : सुनैत छिऐ।
कृषक : मुदा, ओत्तहु घोटाला होइछै। लेनदेन होइछै। जे जाइए सएह बदनाम भऽ जाइए।
सूत्रधार : सेत छै मुदा काज त रोकल नहि जा सकैछ।
कृषक : तएँ ने पात्रक चुनाव कनेक सावधानी स करब।
सूत्रधार : सुझाव उत्तम अछि। (क्षणिक विराम) आब हमरा सभके तैयार भऽ जएबाक चाही।
नटी : हौ चली आब ।

तखने पार्श्वमे फेर जुलुश आ नाराक स्वर सुनि पडैत - 'स्थानिया प्रशासन मुर्दावाद, अजय चोर-नटी दुनू साकांक्ष भऽ जाइछ। सूत्रधार किछु सोचैछ आ फेर कृषकके डेन पकडि पुरुष-१ क बगलमे जा ठाढ क दैछ। कृषक फीज भऽ जाइछ। सूत्रधार व्यग्रता स टहल लगैछ। मोढापर बैसि जाएछ। फेर उठि जाइत अछि।

सूत्रधार : (नटीसँ) सुनैछी ?
नटी : हँ, नीक जका।
सूत्रधार : प्रशासनके गाडी पढल जा रहल छै। माने स्थिति आरो जटील छै।
नटी : हमरो लगैए। जं सुरक्षे देब बालक विरोध होइ त बात बेसी खराब मानल जएबाक चाही।
सूत्रधार : (किछु सोचैत) भ्रष्टाचारो कोनो कमजोर विषय त नहि अछि, मुदा जं अगामे आबिए गेल त एकरो एक बेर देखिएली।
नटी : मुदा ई क्रम कहिआ धरि चलत ?
सूत्रधार : जा धरि उपयुक्त समस्या नहि भेटत ता धरि त चलाबही पडत।
नटी : समयपर विचार अछि कि नहि ?
सूत्रधार : (घडी देखैत) हँ, आब आधा घंटा मात्र शुरु कर' मे बाँकी अछि।
नटी : तखन सोचि लिअ, फेर बेइज्जत ने भऽ जाइ।
सूत्रधार : कनेक जल्दी लाउने, एकगोटे। बात बुझि लैत छिए। जं एतेक त किछु आर।
नटी : जे आज्ञा हजुरक ! (मुस्की)

नटी जाइत अछि। सूत्रधार ओम्हरे गंभीर मुद्रामे तकैत अछि। नटीक संग एकटा पूरुष-२ क प्रवेश। हाथमे शांति सुरक्षा कायम हो' क प्लेकार्ड। एकटा आम जनता सन लोक। ओकरा देखैत सूत्रधारक आंखि चमकि जाइछ।

सूत्रधार : आउ, आउ, भाई जी !
पुरुष-२ : (किछु झझकैत) ऐ, हमरा एत्त किए बजाओल गेल अछि।
सूत्रधार : भाइजी, कोनो चिन्ता नै। हम किछु जान' चाहै छी।
पुरुष-२ : से किए ?
सूत्रधार : ओहिना जिज्ञाशा अछि।
पुरुष-२ : (सशंकित भऽ) पुछु।
सूत्रधार : ई जुलुश कथीक रहैक ?
पूरुष-२ : शांति-सुरक्षाक हेतु। स्थानीय प्रशासनक विरोधमे।

सूत्रधार : जुलुश सँ लोक सुरक्षित भऽ जायत ?
पुरुष-२ : (आंखि तरेकिऽ) त की लोक अपन प्रजातांत्रिक अधिकार छोडि देत ?
सूत्रधार : नहि, से त हमर मतलब नहि छल ।
पूरुष-२ : त की छल ?
सूत्रधार : एहि जुलुश सँ प्रशासनक नीन टुटतै ?
पुरुष-२ : ई ओकर काज छै । जं अधिकार अछि त जुलुश बहराएबे करतै ।
सूत्रधार : हं सेत छैहे । (क्षणिक विराम) मुदा सरकारक प्राथमिक आवश्यकता त शांतिए सुरक्षा छै फेर....।
पूरुष-२ : अहाँ बड निश्चिन्त लगै छी । गाम-देहातमे हाहाकार मचल छै । पता अछि ।
सूत्रधार : की भेलै से ?
पूरुष-२ : की भेलैए । (जेबी सं एकटा कागज बहार करैत) देखै छिऐ ई की अछि ।
सूत्रधार : (गौर सं तकैत) एकटा कागज जका अछि ।
पूरुष-२ : ई निवेदन छिऐ । एक मास स जेबीमे लऽ कऽ वौआ रहल छी । केओ सुन' बला नहि ।
सूत्रधार : की भेलए ?
पूरुष-२ : की कहु ! एक मास पूर्व हमर सब श्री सम्पत्ती गोट-गोट क' लुटि लेलक ।
सूत्रधार : (साश्चर्य) लुटि लेलक ?
पुरुष-२ : ह ।
सूत्रधार : के औ ?
पूरुष-२ : एक गोटे रहय त नाम बताउ । हजारो लोक रहै । दिनेमे घरक एक-एक दाना ल गेल । खाएलेल आफत भऽ गेल ।
सूत्रधार : हे भगवान ! बड अन्याय भेल । कोना भेल ?
पूरुष-२ : बात मामुली रहै । एक दिन पुर्व हमर आदमी ओइ पक्षके दू-तीन आदमकीके दू चारि सटकाम ारि देने रहै, कहा-कहिमे बस !
सूत्रधार : एतबे टा बात रहै ।
पूरुष-२ : हँ यौ । आ घर-दुआर त लुटबे कैलक । हमर १०-१५ आदमीके होस्पीटल ओगरा देने अछि ।
सूत्रधार : तखने ?
पूरुष-२ : सएह निवेदन ल' क' बौआ रहल छी । स्थानिय प्रशासन ल' नहि रहल अछि ।
सूत्रधार : तखन की करबै ?
पुरुष-२ : करबै की ? एहिना ई निवेदन लोकके देखबैत रहवै ।
सूत्रधार : बस ?
पुरुष-२ : बर बेसी करबै त एहिना जुलुशमे सामेल भ' जिन्दावाद मूर्दावाद लगादेबै ।
सूत्रधार : मुदा गाम गाम पसरल अशांति-असुरक्षा हटि त नहि सकत ?
पुरुष-२ : ई त सरकारक काज छै ने । अपन तंत्रके शांति सुरक्षामे लगावओ ।
सूत्रधार : बात त उचित थिक । (किछु सोचैत) लगैए जन धनक असुरक्षा बड पैघ समस्या थिक । (नटीसं) की सोचैछी ?
नटी : समाजमे व्याप्त ई भय त्रास कोनो कमजोर समस्या नहि छैक ।
सूत्रधार : त किएक ने एहीपर हम सभ विचार करी ।
नटी : बेजाए त नहि । नीक प्रभाव पडि सकैत अछि ।
पुरुष : त हम आव चली ?

सूत्रधार किछु कह' चाहैत अछि कि तखने फेर पृष्टभूमिमे जुलुश आ नाराक स्वर 'बेरोजगारी दूर कर', अजय चोर गद्दी छोड', प्रजातन्त्र जिन्दाबाद' सुनि पडैछ । सूत्रधार एकबेर फेर

किकर्तव्य विमूढ भ' किछु गुनधुन कर' लगैछ । एक नजरि नटी दिश देखैछ, फेर पुरुष-२ के वाहि पकडि कृषकक बगलमे ठाढ क' दैछ । पुरुष-२ फ्रीज भ' जाइछ ।

सूत्रधार : लगैए फेर कोनो जुलुश बाहर भेलैए ।

नटी : (अकानैत) ई बेसी ताओ बला बुझाइए ।

सूत्रधार : की हर्ज, एकरो गमिएली ।

नटी : मुदा समय कहा अछि ? शुरु हयबामे १०-१५ मिनट सँ बेसी नहि हयत ?

सूत्रधार : लाउ ने, देखि लैछी । जं एतेक अबेर भइउ गेलै त दर्शक सभसं क्षमा मांगि लेबनि ।

नटी : मात्र क्षमा मागने नहि नै हयत

सूत्रधार : तं की ?

नटी : जाहिले बजौने छियनि से त पूर्ति करही पडत ।

सूत्रधार : तएँ ने जल्द जाए कहै छी । लाउने ककरो ओहि महक ।

नटी : अच्छा, हम जाईछी ।

सूत्रधार फेर व्यग्र भ टहल लगैछ । तुरन्ते नटी एकटा नयां फैशनक युवकके लेने प्रवेश करैछ । युवकक हाथमे राखल प्लेकार्ड बेरोजगारी दूर करु' लिखल छै ।

युवक : (प्रवेश करिते) खहा-हा, हमरा अहा कत्त लेने जाइ छी ?

सूत्रधार : भाइ जी, हमही कहने छलियनि बजाब' ।

युवक : (गुम्हरि क तकैत) से अहा बजब' बला के छी ?

सूत्रधार : समस्यामे फसल एकटा निरिह लोक ।

युवक : की माने ?

सूत्रधार : एखन जुलुश अहीं सभक रहय ने ?

युवक : हँ ।

सूत्रधार : किएक बहार कैने रही ई जुलुश ?

युवक : की अहाँके आँखि कान नहि अछि ?

सूत्रधार : अछि, मुदा बात नारा सँ ओतेक नहिने बुझाइछै ।

युवक : हम सभ बेरोजगार छी । रोजगारीक लेल जुलुश निकालैछी ।

सूत्रधार : अहांके लगैए जुलुश वहार कैलासँ रोजगार भेटि जाएत ?

युवक : ई प्रजातन्त्रक उपलब्धि थिकै ?

सूत्रधार : ई जुलुश अथबा वेरोजगारी ?

युवक : (आँखि तरेरिकऽ) अहाँके मजाक लगैए हमरा सभक अभियान ?

सूत्रधार : नहि : मात्र वात फरिछएवा लेल ई कहलहु ।

युवक : सरकारके वात पहुँचएबाक लेल आव जुलुसे एक मात्र माध्यम रहि गेलछै ।

सूत्रधार : हूँ (क्षणिक विराम) की पढलो लिखल के रोजगारी नहि भेटै छै ?

युवक : (ठोढपर विद्रुप मुस्की) पढल लिखल ! औजी हम एम.ए. पास कऽ कऽ अएलहु मुदा नोकरी भेटि नहि रहल अछि ।

सूत्रधार : एम.ए. पास ?

युवक : वहुतो ओ.सी.जे.टी.ए., शिक्षक, हेल्थ असिस्टेन्ट तालिम कऽ कऽ घुमि रहल छथि । नाकेरी नहि छनि ।

सूत्रधार : से किए नहि छनि ?

युवक : ओ मंत्रीक सम्वन्धी नहि छथि ।

सूत्रधार : अच्छा ?

युवक : हुनका लगमे पाइ नहि छनि जे ओ विचला ककरो घुस दऽ सकताह ।

सूत्रधार : घुस ?

युवक : आ से कोनो कम नहि । आधा कमाई !
सूत्रधार : तखन ?
युवक : एहिना फुटपाथपर वौअएबापर बाध्य छथि, ने सोर्स आने फोर्स
सूत्रधार : भ सकैए कम्पीटिशनमे नहि टिकैत होइ ।
युवक : सव गलत वात थिक । लिखितमे पास क मौखिकमे छाटि देल जाइछ ।
सूत्रधार : हूँ (क्षणिक विराम) अहाँ सभ की सोचै छी ?
युवक : नोकरी लेल आबाज उठबैछी । नहि भेटत त एहिना जुलुश वहार कऽ मोनक भरास निकालब ।
सूत्रधार : एहि सँ नोकरी भेटत ?
युवक : त करब की ? हतया, डकैती, लुटपाट अथवा चरेस स्मैक आदि ड्रग्स खा कऽ प्राण द दिअ ।
सूत्रधार : (हडवडा कऽ) नहि, नहि एहन वात सोचवो ने करु ।
युवक : (कनेक रुआसी होइत) त अहीं कहु, हम सब की करु ?
सूत्रधार : प्रश्न बड गंभीर अछि । आइ देशमे जाहि गति सँ वेरोजगारी बढि रहल छै ओ समस्या गंभीर कयने जाइ छै ।
युवक : घरमे सभक परिवार छै । वाल-वच्चा छै, माय-बाप छै, सभक खर्च-वर्च ! कहु कोना चलतै ?
सूत्रधार : ठीके ।
युवक : (कनेक गंभीर होइत) मुदा अहाँ सभ हमरा बजौलहु किए ?
सूत्रधार : इएह बुझवालेल जे अहाँके समस्या की अछि ?
युकव : (प्रशन्न होइत) त की अहाँ हमर समस्या समाधन कऽ सकैछी ?
सूत्रधार : (हडवडा क') नहि, नहि हम त स्वयं समस्यामे पडल छी ।
युवक : अहुंके नोकरी चाही ?
सूत्रधार : से समस्या हमर नहि अछि ।
युवक : (अगुता कऽ) त जल्दी वाजु ने । फेर आम सभामे जाए पडत ।
सूत्रधार : वास्तवमे हम सभ कालाकार छी ।
युवक : (शब्दपर जोड देत) कलाकार !
सूत्रधार : हँ ।
युवक : हमरा सभक समस्या स अहाँके कोन मतलव ?
सूत्रधार : मतलव अछि । (क्षणिक विरामक वाद दर्शक दिश तकैत) हे देखै छी दर्शक लोकनिके ।
युवक : हँ, सभ एम्हरे ताकि रहल छथि ।
सूत्रधार : ताकि कहाँ रहल छथि, गुम्हरि रहल छथि, देखै नै छीयनि, आँखि स चिनगी उडि रहल छनि ।
युवक : किनकापर ?
सूत्रधार : हमरे पर ।
युवक : अहाँ पर किएक ?
सूत्रधार : सएह समस्या अछि ।
युवक : जल्दी फरिछाउ ।
सूत्रधार : हम एखन नाटक देखएबाक घोषणा कऽ चुकल छी । कलाकार सभ ठीक समय पर हडताल कऽ देलनि ।
युवक : तखन ?
सूत्रधार : तखन भेल जे कोनो टटका समस्या लऽ कऽ हमही सभ कोहुना प्रदर्शन क दिऐ !

युवक : सएह समस्याक खोजीमे लोकके बजाबजा पुछै छीऐ । कतहु भरिगर समस्या भेटि जाए ।
सूत्रधार : सभ स भरिगर !
युवक : तखन !
सूत्रधार : हम सभ तैयारी करव । (नटीसँ) हौ, मिलाउ भाज !
नटी : ठीक छै ।

नटी पृष्टभूमिमे जाए चाहैत अछि कि पार्श्वमे फेर जोडगर हल्ला आ नारा सुनि पडैछ 'प्रतिक्रियावादी-मूर्दावाद, अजय सरकार - जिन्दावाद, प्रजातन्त्र-जिन्दावाद' ।

सूत्रधार : (नटी के रोकैत) ठहरु ।
नटी : आब फेर की भेल ?
सूत्रधार : सुनै नहि छिऐ ?
नटी : (अकानैत) लगैए फेर कोनो जुलुश अछि ।
सूत्रधार : तएँ ने ठहरु कहलहु । किए ने एकरो.... ।
नटी : (जोर दैत) नहि, आब हद भऽ गेल । प्रजातन्त्रमे एहिना नारा जुलुश होइत छैक । कतेक स अहाँ समस्या बुझैत रहब ।
सूत्रधार : तैयो कने भजा लितहु त मोनमे खटका नहि रहैत ।
नटी : कथीक खटका ?
सूत्रधार : इएह जे, जाहि समस्यापर हम सभ नाटक कयलहु ताहूस नमहर कहुं छुटि ने गेल होए ।
नटी : (कनेककालक चुप्पीक बाद) त एकटा बात हम कहि दैत छी ।
सूत्रधार : की ?
नटी : एहि बेर जँ ओहि महक ककरो बजएबाक बात हयत त हम नहि जाएब ।
सूत्रधार : लगैए अहुंके प्रजातन्त्रक हबा लागि गेलए ।
नटी : वात त पहिने बुझियौ ।
सूत्रधार : की ?
नटी : आन पुरुषके एनाकऽ कऽ वजा कऽ आनब हमरा नहि नीक लगैए ।
सूत्रधार : ओह (क्षणिक विराम) तँ एकटा बात करु ।
नटी : की ?
सूत्रधार : (युवक दिश ईशारा करैत) हिनका ताबे बिलमाउ, हमही एहि बेर ककरो गहने अबेछी ।
नटी : हँ, ई बरु भ सकैए ।

नटी युवकक हाथ पकडि पुरुष-२ क वगलमे ठाढ कऽ दैछ । युवक फ्रीज भ' जाइत अछि । नटी मंचक आगां अपन मोढापर आबि बेसि रहैत अछि । तखने सूत्रधारक सँग एकटा खधरक ठुहनसँ निचां धरिक कुर्ता आ चुस्त पायजामा पहिरने पुरुष-३क प्रवेश । नटी ओकरा सभके देखित हडबडा कऽ उठि जाइत अछि ।

सूत्रधार : श्रीमान् भ गेलै, एत्तहि धरि (मोढ दिश ईशारा करैत) बैसल आओ ।
पूरुष-३ : (दुनुके गंभीरतापूर्वक देखैत) हमरा एत्त वजएवाक कारण ? (बैसैछ)
सूत्रधार : अन्यथा नहि ली । कनेक जुलुशक सन्दर्भमे.... ।
पुरुष-३ : ओह, अहाँ सभ पत्रकार छी ?
सूत्रधार : जी नहि, एकटा समस्यामे ओझरायल जिज्ञाशु मात्र ।
पुरुष-३ : कोन समस्या ?
सूत्रधार : ई जुलुश कथीक रहै ?
पुरुष-३ : ई सरकारी जुलुश छलै ।
सूत्रधार : (साश्चर्य) अएँ, सरकारो जुलुश निकालैत छैक ?

पुरुष-३ : त की सरकारक सँग समस्या नहि होइत छैक ?
सूत्रधार : केहन समस्या ?
पुरुष-३ : विपक्षी सभक विरोधक समस्या, कर्मचारी हडतालक समस्या, शांति सुरक्षा भंगक समस्या....।
सुत्रधार : (माथा डोलबैत) बुझाइए सरकारो सँग खुबे समस्या सभ छै।
पुरुष-३ : लोक बुझै नहि छै। आ विरोध कर लगैछ।
पसूत्रधार : आ ओ सभ कहै छै सरकारे ने बुझै छै।
पुरुष-३ : (उठैत) झूठ, सभ झूठ थीक। ओ सभ आनक ईशारामे चलैए।
सूत्रधार : (सँगे उठैत) तखन ई जुलुश, नारा सभ झूठ थीक, आनक ईशारामे होइछ ?
पुरुष-३ : त की एहुमे सन्देह रहि गेलैए ? औजी सरकारके कमजोर करबाक सभक प्रयास थिक।
सूत्रधार : ककरा सभक ई प्रयास भ' सकैछ ?
पुरुष-३ : ई बात तँ साफ भ गेल अछि, प्रतिगामी तत्वक इृशारामे ई सभ भ रहल अछि। सभ प्रतिक्रियावादी सभ अछि।
सूत्रधार : मुदा प्रजातन्त्रमे हक भोग मांगबाक अधिकार त सभके छैक।
पुरुष-३ : पहिने सरकार अपन जडि मजगूत करत तखन ने आनके किछु देनैक।
सूत्रधार : तैयो महगी, भ्रष्टाचार, असुरक्षा, वेरोजगारी के देखत ?
पुरुष-३ : ककरा पलखति छै जे ई सभ देखैत रहओ। एखन अपनो गर नहि बैसल अछि।
सूत्रधार : (साश्चर्य) की माने ?
पुरुष-३ : औजी, वात साफ छै। हम सभ एकटा अदना कायकर्ता छी। वर्षो संघर्ष कयलहुँ त ई समय आयल अछि। पहिने अपनो लेल किछु त सोच पडत।
सूत्रधार : ओह (क्षणिक विराम) अपने......?
पुरुष-३ : हँ, हम क्षेत्र नं.... ।
सूत्रधार : (वात कटैत सँगहि दुनू हाथ जोडैत) नमस्कार।
नटी सेहो हाथजोडि नमस्कार करैत अछि।
पुरुष-३ : हँ, हँ ठीक छै। हमरा संगमे फालतु समय नहि अछि। रंगभूमिमे विशाल जनताक समुह प्रतिक्षामे हयत।
सूत्रधार : उचिते हयत ने।
पुरुष-३ : मुदा अहाँ सभ के छी ?
सूत्रधार : मूर्ख ?
पुरुष-३ : (साश्चर्य) मूर्ख, ई कोनो परिचय नहि भेलै ?
सूत्रधार : साँच त इएह अछि, हमरा सभक कोनो परिचय नहि होइछ।
पुरुष-३ : की माने ?
सूत्रधार : जी श्रीमान्। पाँच सालमे एक्केबेर हमरा चिन्हल जाइत अछि।
पुरुष-३ : (अगुताकऽ) साफ बताउ ?
सूत्रधार : हम सभ जनता छी।
पुरुष-३ : ईहो कोनो स्पष्ट परिचय नहि भेलै।
सूत्रधार : वास्तवमे हम सभ कलाकार छी।
पुरुष-३ : अच्छा ! काने काम अछि बाजु। ककरो वदली कराबके अछि, अथवा नियुक्ति। चाहे 'लाइसेन्सक जोगाड भिडाब' के अछि की कोनो ठेका पटाक।
सूत्रधार : (साश्चर्य) जी...... ।
पुरुष-३ : निधोष कहु। सभक हिसाब फूट फूटछै।
सूत्रधार : जी हमरा सभके कोनो काज नहि करएबाक अछि।

पुरुष-३ : (वीगडि कऽ) तखन एतेक समय किए बरबाद कऽ रहल छी ?
सूत्रधार : हम सभ नाटक खेलएबाक नेआरमे छी । मुदा..... ।
पुरुष-३ : (वीचमे बातके कछैत) त हम की कऽ सकैछी ? हमरा नाटक नहि अबैए ।
सूत्रधार : कोनो भरिगर समस्या चाही हमरा सभके ।
पुरुष-३ : ईहो त कोनो विभाग वा मंत्रालयमे नहि भेटैत अछि ?
सूत्रधार : जी नहि, ई त अपने..... ।
पुरुष-३ : (चौंकि) हम, की हम भरिगर समस्या लगैछी ?
सूत्रधार : से हमर मतलब नहि अछि । अपने चाही त तुरत भेटि सकैत अछि ।
पुरुष-३ : (स्टूलपर सँ उठैत) नहि, हमराबुते समस्या ताकल नहि हयत । हँ, कही त ककरो थुना सकैछी, ककरो बाहर कऽ सकैछी ककरो फोडि सकैछी त ककरो मिला सकैछी ।
सूत्रधार : जी नहि, से सब किछु ने चाही ।
पुरुष-३ : अच्छा, त हम चलैछी । लोक अगुताइत हयत । हँ, संभव भेल त घुमब एही बाटे ।
सूत्रधार : ठीक छै, नहि एखन त पाँचो वर्षपर एकबेर दर्शन अवश्य होइत रहय...... ।

पुरुष-३ के झटकारि कऽ प्रस्थान ।

सूत्रधार झखा कऽ अपन स्टुलपर बैसि रहैत अछि ।

सूत्रधार : (नटी सँ) आब ?
नटी : एक स एक समस्या त अछिए, जे चुनी ।
सूत्रधार : सएह त समस्या भ' गेल । लगैए कोनो समस्या ककरो स कम नहि अछि ।
नटी : आब एना थकथकएने काम नहि चलत । जल्दी किछु करु ।
सूत्रधार : अहुँ किछु सोचुने । हमर माथ फाटल जाइए ।
नटी : अहाँक आगा हम की सोचु ।
सूत्रधार : फेर अहाँ भसिआ रहल छी । ओना नै हयत वैसु स्थीर सँ आ ध्यान मग्न भऽ किछु सोचियो । कही अहीके फुरा जाए !
नटी : लिअ, हम बैसि रहैछी । फुराए इ अहाक भागे ।

दुनु स्टुलपर फ्रीज भ जाइछ ।

क्षणिक अन्हार

प्रकाशक घेरा एक पतिआनीस ठीक चारु आकृतिपर पडैत अछि । आकृतिमे हलचल देखल जा सकैछै । क्रमशः चारु पात्र मंचक आगां भागमे अबैत अछि ।

पुरुष-१ : (कृषक के निहारैत) लगैए कोनो जुलुशक तैयारी छै ?
कृषक : अहुँक हाल तेहने सन लगैए । कत्त छै जुलुश ?
पुरुष-१ : मुदा अहाँ कथीलेल यौ ?
कृषक : भ्रष्टाचारक विरुद्धमे छी । बात बात पर पाइ, घुस छोटछीन काज कयक दिन लगादेत । तकरे विरोध करैत जुलुश बहार कैने छी ।
पुरुष-१ : ठीक कहै छी । बड विकट समस्या छै ।
कृषक : आ अहाँक ।
पुरुष-१ : महगी । देखै नहि छिऐ कोना बढल जा रहल अछि सुरसाक मुँह जका ।
कृषक- : अलबत्त विषय अछि । घर-घरमे इहे रोना छै एखन ।
पुरुष-१ : (युवक सँ) विद्यार्थी, किए प्लेकार्ड उठौने छी ?
युवक : वेरोजगारीक मारल छी हम । लोकसेवा दैत-दैत बुद्धि सठिआगेल मुदा नोकरी नहि भेटल । तकरे विरोधमे जुलुश बहार कऽ रहलछी ।
कृषक : (पुरुष-२ सँ) अहुँ लगै छी वेसीए पीडायल छी ।

पुरुष-२ : औजी, पिडायल कहै छी। हद भऽ गेल अछि। लोकके शांति सँ जीअब कठनि भऽ गेल छै। बहु बेटीक ईज्जतपर पडि रहल अछि।
कृषक : (पुरुष-१ सँ) भाइ जी, ई विरोध ककरा विरुद्धमे अछि ?
पुरुष-१ : वात साफ छै सरकारक विरुद्धमे।
युवक : हम सभ जे जुलुश बहार कऽ रहल छी आखिर ककरा विरुद्धमे अजय सरकारक विरुद्धमे ने।
पुरुष-२ : ह यौ, बात त ठीके छै। ई महंगी, भ्रष्टाचार, शांति सुरक्षा, बेरोजगारी समस्या सभक हेतु सरकारे जिम्मेवार अछि।
कृषक : तखन त सभ समस्याक जडिमे सरकारे भेल ?
युवक : (उत्तेजित होइत) ताहुमे कोनो सन्देह ?
पुरुष-१ : त किएने हम सभ पहिने एकजुट भ' क' जडिएपर प्रहार करी ?
पुरुष-२ : (माथ डोलबैत) एहिस समस्याक ओजन बढबे करत।
युवक : आ सरकारोक कानपर माछीयो भिनभिएतै त जरुर !
कृषक : (तनैत) ठीके। हम सभ सामूहिक रुपे जुलुश बहार करी।
पुरुष-१ : विचार उत्तम अछि ! (कृषकस) की औ ?
कृषक : एह, एहुमे कोनो सोचवाक बात छै। जखन जडि एक्के अछि त ताहीपर प्रहार होएबाक चाही।
युवक : तखन आगा बढु (नारा लगबैत मंच पर घुम लगैछ) बेरोजगारी ? (तीनू एक्के संग) दूर करु !
युवक : अजय चोर !!
(तिनू एक्के संग) गद्दी छोर !!
युवक : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावात !!
युवक : भ्रष्टाचार !
तीनू : बन्द करु !!
युवक : अजय चोर !
तीनू : गद्दी छोर !
युवक : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावाद !
पुरुष-१ : महगी !
तीनू : नियन्त्रण करु !
पुरुष-१ : अजय चोर !
तीनू : गद्दी छोर !
पुरुष-१ : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावाद
पुरुष-२ : शान्ति सुरक्षा !
तीनू : कायम करु !
पुरुष-२ : अजय चोर !
तीनू : गद्दी छोर !
पुरुष-२ : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावाद !
अन्तिम नाराक संग मंच स हटि जाइछ।

अन्हार

प्रकाश फेर स सूत्रधार आ नटी पर पड' लगैछ। दुनुक शरीरमे हलचल शुरु होइछ।

सूत्रधार : (नटीसँ) हे, किछ सूझल ?

नटी : (दार्शनिक भावमे) हम एक दम साफ देखि रहल छी।

सूत्रधार : (प्रशन्न होइत उठैत)

रधिया देवी !

जिन्दावाद !

रधिया देवी !

जिन्दावाद !

नटी : (मुंह विभ्भुका) आहिरेबा ई नारा लगएबाक कोन तुक भेलै ?

सूत्रधार : प्रजातन्त्रमे पीतो लहरै छै त नारा लगओल जाइ छै आ मोनमे खुशीयो अबै छै तखनो नारा लगाओल जाइछै।

नटी : तखन ई नारा कोन अवसरक छै।

सूत्रधारा : अहाँक बुद्धि फुरएबाक प्रशन्नतापर।

नटी : दुत् ओहिना बनबैत रहै छी।

सूत्रधार : अच्छा, अच्छा, बाजु त की फुरएलए ?

नटी : एतेक रास जुलुश ककरा विरुद्धमे रहै ?

सूत्रधार : सरकारक विरुद्धमे। (नारा लगबैत सन....) अजय सरकार...।

नटी : (बात लोकैत) फेर नारा। (क्षणिक बिराम) तखन सभ समस्याक जडिमे सरकार भेल ?

सूत्रधार : सभक आक्रोश त ओम्हरे रहैक।

नटी : साफ नहि लगैए सभ स पैघ समस्या सरकारे छैक।

सूत्रधार : (जेना किछु बुझैत)। हँ, हमरो आब बात साफ साफ लागि रहल अछि।

नटी : तएँ, हम सभ अपन नाटकक हेतु सरकारेके पात्रमे राखी त कोन हर्ज ?

सूत्रधार : वेजाय त नहि, मुदा सरकार कोनो व्यक्ति त नहि होइछ जे मुख्य पात्रमे राखी।

नटी : हँ, ई समस्या भऽ सकैछ। एकटा एहन चरित्र खोजु जाहिमे सभ समस्या एक्के ठाम भेटि जाए।

सूत्रधार : (मोढापर लुद् सँ वैसैत) दुत्, फेर त खोजबाक समस्या रहिए गेल।

तखने कनेक दूर नाराक स्वर सुनि पडैछ-नेता जी, जिन्दाबाद !

नटी : भेटि गेल !

सूत्रधार : की भेटि गेल ?

नटी : पात्र।

सूत्रधार : (प्रशन्न होइत) हँऽ, के ?

नटी : नेता जी !

सूत्रधार : (साश्चर्य नेता जी ! क्षणिक विराम) वाह अद्भुत चरित्र।

नटी : आब भेल ने मोन हरियर !

सूत्रधार : अवश्य। नाटकक हेतु समस्या आ पात्र दुनु एक्के ठाम। आब देखू ने केहन नाटक हम तैयार करैछी।

नटी : कनेक समयोपर ध्यान देबै।

सूत्रधार : ओह, (घडी देखैत) वाप रे ! समय त समाप्त अछि। सुतबाक समय भऽ रहल छै आब !

नटी : (निश्चित भऽ मोढापर बैसैत) आब त अही सोचवै।

दूर सँ लग होइत आवाज-नेता जी......।

जिन्दाबाद !

(साकांक्ष भऽ अकानैत) लगैए नेताजी एम्हरे आबि रहल छथि ।

सूत्रधार : आबियो सकै छथि । वाजि कऽ गेल छलाह ।

नटी : तखन ?

सूत्रधार : हुनका अएवा सँ पूर्व घसकी ।

नटी : आ नाटक ?

सूत्रधार : आब त नहिए भेल । (दर्शक दिश)

आदरणीय दर्शक लोकनि, एतेक काल नाटकक आशामे हम सभ अपने सभके घुरिऔलहु तकरा लेल क्षमा करब ।

नटी : (उठैत फेर) कहिया हयत से कहि दिऔन ।

सूत्रधार : हँ, ज कि समस्या आ तकर उपयुक्त पात्र भेटिए गेल अछि, हम अगिला सप्ताह फेर अपने सभके नवका नाटकक सँग कष्ट देब । एखन शुभ रात्री । नटी सेहो हाथ जोडि दैछ ।

**अन्हार**

*********

# लोक-नाट्य :जट-जटिन

## नाट्य रूपान्तरण :

## रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"

**मंचपर प्रकाशक एकटा गोल घेरा डाँरमे नगाडा बन्हने नटपर पडैत छैक । ओ नगाडाके सुरतालमे बजबैत रहैत अछि । दोसर प्रकाशक घेरा दहिनकात प्रवेश करैत नटीपर पडैत अछि । ओकरासँग घेरा नटधरि अबैत अछि । आब दुनूके उपर प्रकाशक घेरा छै ।**

**नट–** (***नटीके देखि प्रसन्न होइत***)

अहधध पभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचभचमउययउयउया, केहन संयोग अछि ई, प्रिय अहाँके देखल,

नटिन– (*नृत्याभिमूख मुद्रा प्रदर्शित करैत*)

जट जटाधर व्यग्र बनल हो, पार्वती कोना बैसल ।

नट– धन्य प्रिय अहाँ सँग पुरै छी सदिखन हमर छी अँग

नटिन– जनम–जनमधरि एहिना प्रियतम छोडब अहाँके ने सँग ।

***नगाडापर फेरँस चोट पाडैत नटक हाथ चलैत अछि । रुकलाक बाद ।***

नटिन– रंगमंचपर किए उपस्थित मनमे की फुरल अछि,

आइ ककर उद्घाटन करबै, दर्शक खूब जूटल अछि ।

नट– मध्यकालके प्रेमी युगलके खिस्सा कहब महान ।

जकरा नामे पानि बरसै इन्द्रहुक झुकै कमान ।

नटिन– (*आश्चर्यक भाव व्यक्त करैत*)

नाम की थिक प्रेमी युगलके जनिक कीर्ति एहन अपार,

नट– जटा जटिनकेर गाथासँ प्रिय होइछ जगत उद्धार ।

नटिन– ई तऽ महिला मात्र करै छै, नाचि नाचिकऽबेंग कुरै छै,

नंगटिनी आँगन घैल फैकै छै, गारि सुनै छै, पानि मगै छै ।

नट– एह,अहाँ त ज्ञानी छिहे, साज बाज ओरिआउ नटिन,

कुटु बेंग उखरिमे धऽआ शुभारम्भ करू जट जटिन ।

***उखरिमे बेंग कुटबाक उपक्रम । तकराबाद महिलासभ दू दलमे बँटि जाइछ । जटबला समूहक महिलासभ माथमे आ डाँरमे गमछा बन्हने रहैछ । दुनू दल परम्परागत शैलीमे एक दोसरक गरामे बाँहि धएने आगाँ पाछाँ झुकैत चलैत गीतक पहिल मुखरा गबैत अछि । तकराबाद नव शैलीमे जाइत अछि ।***

गीत- १ महिला समूह

*हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता ।*

*पानी बिनू पड़ल अकाल हो राम ।*

*चौर सुखले, चाँचर सुखलै*

*खेती-बारी झारी सुखलै*

*सुखि गेलै बाबाके जिराते हो राम ।*

*सुखि गेलै भइयाके जिराते हो राम ॥*

*धोबियाके अँगनामे छापर-छुपर पनियाँ*

*चमराके आँगनमे छापर-छुपर पनियाँ*

*ओहिमे नहाइ पुजारी बभने हो राम ।*

*धोतियो ने भीजलै जनौओ ने भीजलै -२*

*रचि-रचि तिलक लगावै हो राम -२*

*भीजले तीतले हवेलिया ढुकलै -२*

*बहुओ लेलक लुलुआइये हो राम -२*

*राँडी मौगिया हरवा जोतै छै -२*

*पानीविनू पड़लै अकाले हो राम -२*

*दयो नहि लगइ छ हो इन्नर लोक*

*मयो नहि लगइ छ हो इन्नर लोक*

*पानीविनू पड़ल अकाले हो राम ।*

*हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता -२*

*पानीविनु पडल अकाले हो राम -२*

*निरसुके धीया-पूता माँड लाए कनइ छै*

*खुद्दी ललए कनइ छै, अन्न ललए कनइ छै*

*पानीबिनू पड़ल अकाले हो राम ।*

***(गीत १ समाप्त भेलाक बाद मंचपर अन्हार । प्रकाश अएलापर महिलासभ समूहमे नचैत गबैत ।)***

गीत - २ महिला समूह

*एगो छलै जट, एगो जटिनियाँ।*

*दुनूमे हो गेलइ परेमे हो राम ।*

*दुनूके विआह केना रचैवै बसेबै*

*हो गेलै माइ-बापके विरोधे हो राम ।*

***(नगाडा बजबैत एक दिशसँ नटक प्रवेश । दोसर दिशसँ नचैत नटिनक प्रवेश । बीचमे आबि ठमकि जाइछ । नगाडापर जोरसँ लकडी बजारि नट गबैत अछि ।)***

नट– एक्कै देश, एक्कै परगन्ना जट आ जटिन,

जट गामक सुधुआ मनसा दोसर तेहने नटीन ।

नटी– (*नृत्य रोकैत*)

की बजलहुँ अहाँ फेरसँ बाजू चुगली परोक्षे पीठ,

अहाँ पुरुषके इएह ऐब अछि सदिखन नारीपर दीठ ।

***रुसि जएबाक अभिनय***

नट– (*मनबैत*) जटक हएत विआह, प्रशन्न छी, हमर ने एहित मनसाय,

आयल वरियाती साज-वाज देखि जटिनक माय पछताए ।

नटी– पछतएबाक छै काज कोन,प्रेम छै उपर सबसँ

चलु मनाबी माय जटिनकेँ, शुभ-शुभ करी भवस

गीत-३ समूह

जटक पक्ष - हम अनलियै आजन-बाजन, आब करु विआह, -२

साँवरि गेरुली, कऽ दियौ जटाके बिआह -२

जटिन पक्ष - आगि लागो आजन-बाजन, नहि करबौ विआह, -२

साँवरि गेरुली, मोर गौरी रहि जइती कुमारि -२

जटक पक्ष - बज्जर खसौ हाथी घोडा, बज्जर खसौ बाजार -२

साँवरी गेरुली नहि करबौ जटिनसँ विआह

साँवरी गेरुली रहि जएतौ गौरी कुमारि ।

जटिनक पक्ष - कहाँ रे पएबै, कहाँ रे पएबै, डलबाके साज -२

सांवरी गेरुली मोर जटिन रहतै कुमारि -२

***अन्हारक बाद प्रकाश । प्रकाशक घेरा नटीनपर ।***

**नटी– चली भेली जटिन दैया,सासुरके बटियासँ**

**मनमामे उठल हिलोर हो रामा ।**

**अम्मा लगाबे छाती,बाबा परे खटियासँ**

**हिँचुकि हिँचुकि धीया रोबे हो रामा ।**

**नट – ओह लगैए अहाँ दगध छी,जटिन धीआ बियोगे**

**राज-काज एहिना चलै छै,अशांत ने होउ विछोहे ।**

**नट नटीन मंचपर नृत्य मुद्रामे एक चक्कर लगबैत अछि । आ फेर सँ स्थिर भऽ जाइत अछि । नट आगाँ बढैत बजैत अछि –**

नट– भेल विआह जटिन सासुर चललीह, सभकें आँखि नोरायल,

बाबा देहरीक शान ने भेटलै, लगले जटिन अकुलायल ।

गीत ४

जट - लबिकऽ चलिहैं गे जटिन लबिकऽ चलिहैं गे ।

जइसे लबे काँच करचिया वइसे लबिकऽ चलिहैं गे ॥

जटिन नहिये लबबौ रे जटा, नहिये लबबौ रे ।

हम तऽ बाबाके दुलारि धीया ऐँठिके चलबौ रे ।

जट लबिकऽ चलिहैं गे जटिन लबिकऽ चलिहैं गे ।

जइसे लबइ बैंतके छड़िया, वइसे लबिकऽ चलिहैं गे ॥

जटिन ऐँठिकैं चलबै रे जटा ऐँठिक चलबौ रे ।

हम तऽ बाबाके दुलारि धीया, तनिकऽ चलबौ रे ॥

जट डइनियाँ देखतौ, गुनमा फेकतौ, मारिये देतौ गे ।

आगे बाबाके समपतिया जटिन,के भोगतौ गे ॥

***अन्हार/प्रकाश । खाटपर जट जटिन सुतल ।***

गीत ५

*रामा रहे लागलै जटबा-जटिनियाँ हो ना ।*

*रामा कहियो काल होबे खन खनियाँ हो ना ॥*

*रामा एक दिन भोरुका कहनियाँ हो ना ।*

*रामा लड़इ लगलै जटबा-जटिनियाँ हो ना ॥*

***पुनः अनहार । प्रकाश । खाटपर जट सुतल । जटिन उठल***

***मुदा आँचर जटबाक हाथमे ।***

गीत ५ (दोसर भाग)

जटिन भोर भेलइ रे जटा भिनसरवा भेलइ रे

कोइली बोललै रे जटा कोइली बोललै रे

जटवा छाड़ि देही अँचरवा

हम तऽ अँगना बहारबै रे ॥

जट मैया बहारतै गे जटिनियाँ, बहिनियाँ बहारतै गे ।

जटिनी आजुके रोहिनियाँ हम तऽ पलँगवे गमैबे गे ॥......

जट    हमे तोरा पुछियौ गे जटिनीक
दिल से गे, जटिन परेम से गे ।
झुमका कहाँ हेरइले गे ?

जटिन   सारी राति रे जटवा, तोहरे बिछौनमा रे
जटवा तोहरे लगिचवा रे !
जटवा भिनुसरवामे तोहरे मैया चौरौलकौ रे ।.....

जटिन   टिकवा जब-जब मँगलियौ रे जटा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥
अरे वाली उमरिया रे जटबा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥

जट -   टिकवा जब-जब अनलियौ गे जटिन, पौतीमे कऽ धएले गे ।
तोहर वाली उमरिया गे जटिन, टिकवा काहे न पेन्हले गे ॥

जटिन - हँसुली जब-जब मंगलियौ रे जटा, हँसुली काहे ने लौले रे ।
हमर वाली समैया रे जटबा, हँसुली काहे न लौले रे ।

जट    हँसुली जब-जब अनलियौ गे जटिन, तक्खापर कऽ धएले गे
तोहर वाली समैया गे जटिन, हँसुली काहे न पेन्हले गे ।

***अन्हार । प्रकाश नटपर ।***

नट –   जट जटिनके वीचमे भैया खटपट बझल बेजोड
बाबाके दुलारी धीआ, मनबए जट पुरजोड ।

नटी –   मनसा सब होइछै एहिना, बात-बातपर झगरए
पत्नीके ने मोजर कहियो, अपने जीदपर रगरए ।
नैहरदिस बढल डेग कि, लबि-लबि हाथ जोरए
आँटा दालि केर भाओ बुझने, पुरुषार्थ, जीद सब छोडए ।

गीत ६

जटिन - धनमा कुटइते जटबा, मारलक मुसरबेके मार ।
सेहो विरोगवे रामा जाइ छियै नैहरवा

जट -   निम्मन-निम्मन टिकवा जे लैलिये जटिन ले
सेहो जटिनिया छोड़ि नैहरबा तोँ जाइ छे ।

जट -   चीनमा छिटलियौ गे जटिनियाँ चीनमा छिटलियौ ।

तू जाइ छै नैहरवा चीनमाके कटतै गे ?

जटिन - मैयो कटतौ रे जटबा बहिनियाँ कटतौ रे ।

अबरी रे समइया हम तऽ नैहरे गमैबै रे ॥

जट - घिउरा फड़लौ गे जटिन, झिगुनी फड़लौ गे,

तू चल जेबही नैहरवा, घिउराके बेचतौ गे ?

जटिन - मैयो बेचतौ रे जटबा, बहिनियाँ बेचतौ रे ।

अबरी रे समइया सखीसँग झूमर खेलबै रे ॥

***अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर पड़ैत ।***

नट– लाख मनौलक जिद्दी जटिन, नैहर डेग बढौलक,

नदीक धारमे पारक चिन्ता मलहवाके गोहरौलक ।

गीत ७

जटिन - भैया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार

थारी देबै एवा-खेवा लोटा देबौ इनाम

भैया मलहवा रे उतारि दही झिमनापुरके घाट

मलाह - नहि हम लेबौ एवा-खेवा, नहि लेबौ इनाम ।

बहिनी बटोहिनी गे, खोजिले गे दोसर घटवार ।

जटिन - खसी देबौ एवा-खेवा, पाठी देबौ इनाम ।

भइया मलहवा रे, उतारि दही झिमनापुरके घाट ।

मलाह - नहि लेबौ हम एवा-खेवा, नहि लेबौ इनाम ।

बहिनी बटोहनी गे, खोजि लेही दोसर घटवार ।

जटिन - बड़ दुखछल छी, नैहरा जाइ छी

जटा से खाइके मार ।

कल जोड़ैछी, गोर पड़ैछी, हमरा करि दिअ पार ।

भइया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार ।

मलाह - तोरा देखि कऽ माया लगै,

जिया फाटइ हमार ।

जे कइले से नकि नइ कइले,

चल करि दियौ पार ।

जटिन भइया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार ।

बहिनी बटोहनी गे, चल करि दियौ पार ।

***अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर पड़ैत ।***

नट– नटिन वियोगे छटपट जटवा, सभकिछु सुन्न लगैछै,

अपने घर छै काटऽ छुटल, पल-पल मन पडै छै ।

नटी– नारी घरके लक्ष्मी होइछै, प्रेम सद्भाव बटै छै

जटबासन घमंडी मनसा, एहिना धिघरी कटै छै ।

गीत ८

जट- हाथीपरके हौदा बिकाए गेल गे जटिन, तोरेबिनु

तोरेबिनु हमहुँ बेकल भेलौं गे जटिन, तोरेबिनु

तोरेबिनु महल उदास भेल गे जटिन, तोरेबिनु

तोरेबिनु अँगनामे दुभिया जनमिगेल, गे जटिन,

सेजियापर मकड़ा बिआय गेल गे जटिन, तोरेबिनु

***अन्हार पुनः प्रकाश । नटपर पड़ैत ।***

नट– रुसि कऽ भागलि जटिन प्रिय,जट वेकल बहुराएल,

एम्हर खोजए, ओम्हर खोजए, नाना भेष बनाएल ।

नटी– इहे होइछै मनसाके बानी, अपने करम पछताबे ।

घरबालीपर हुकुम चलाबे, लक्ष्मीके ठोकराबे ।

नट– ठीक कहै छी नटी हमर,अहाँ सदृश कत्तऽ पाएब,

जटबा छै अबोध प्रिय,अहाँ घर छोडि नै जाएब ।

गीत ९

जट सुन मोर जोगिया, सुन मोर भाइ

इहो नगरमे जटिन मोर आइल ?

सुन मोर भइया, सुन गे दाइ,

एहि नगरमे जटिन मोर आइल ?

मोसाफिर - सुन मोर जटबा, सुन मोर भाइ,

इहे नगरमे जटिन नहि आइल ।

***अन्हार प्रकाश***

गीत १०

जट - दही लेब ? दही लेब ? मिठगर दही लेब ?

गामक स्त्री - तोर केकर औँटल दूधवा ?

तोर केकर पौरल दहिया,

तोहर सड़ल गन्हाय छौ दहिया

तोहर खट्टा महकौ दहिया ।

सास-ससुरकँ औँटल दूधवा

जट - माय, सांची दूधके दहिया

माय, बड मीठ लागै दहिया,

ग्रामीण स्त्री - अगे नहि लेबौ, नहि लेबौ

तोहर कोइ ने पुछै छौ दहिया ।

सिपाही - हमहूँ तऽ छियै गुवालिन, मालिकके सिपाही

मारि डण्टा, फोड़िके कोहा, खा लेव दहि-दूधवा ।

जट - इहो मत जानिहे सिपाही असगर गुवालिन

मारि कोहा तोड़ब थुथना,

राति रहौं कुंजवन, दिन बेचौं दहिया,

घेघा सिपाहीके नइ देब दहिया

कोइ ले गे गहिकी बेची दहिया ।

***अन्हार प्रकाश***

गीत ११

जट      ससुरे भैसुरे मोर जाल बुनै ना

अकसर बलमुआ मोरा माछ मरैना ।

माछ ले हे, माछ ले हे, गहिकी बेटी,

माछ ले हे, माछ ले हे ॥

ग्रामीण स्त्री -    आहे कौने मछरिया केर गोढिन हे ?

जट      -      आहे रेहुआ मछरिया केर गोढिन हे ।

ग्रामीण स्त्री -    आहे गहुमके कै खूटे माछ देवए हे ?

जट      -      आहे, गेहुमाके तीन खूटे माछ देवए हे ।

ग्रामीण स्त्री -    तोर मछरी बनबै नइ जानियौ

धुए नइ जानियौ,

खबैयाके खियाबै नइ जानियौ

धीयापूता परबौधै नइ जानियौ

गोढिनियां गे ।

***अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर ।***

नट–    खोजि खोजिकऽ थाकल जटबा जटिनविनु मुरझाएल,

तखने नजरिपर अएलै जटिनिया, असली रुपमे आएल ।

नटी–    कि बुझलिऐ जटिन ओकरा हपसि कऽ धरतै ना ।

मनमे गरल दरद छै नटबा, दूर-दूर करतै ना ।

गीत १२

जटिन - दूर-दूर रे जटा । दूर रहिहें रे जटा

सड़ल चाउर रे जटा ।

राख छाउर रे जटा ।

सड़ल तीमन रे जटा ।

दूर रहिहें रे जटा । दूर रहिहें रे जटा ।

जट-   दूर-दूर गे जटिन। दूर रहिहैं गे जटिन।

सड़ल चाउर गे जटिन।

राख छाउर गे जटिन।

बसिया रोटी गे जटिन।

सड़ल तीमन गे जटिन। दूर रहिहैं गे जटिन।

चोटिया गुहइते चलि अबिहैं गे जटिन।

सेजिया सजैबते चलि अबिहैं गे जटिन

जटिन   जुलफी सम्हारैत चल अबिहैं रे जटा।

धोतिया पेन्हैत चल अबिहैं रे जटा।

***अन्हार। पुनः प्रकाश नट नटीपर***

***नगाडाक धुनपर कनेक काल दूनु नचैत***

नट– कहै छै जे एहिना होइ छै साँइ बौहके झगड़ा

बीचमे पडि कऽ गामक लोक अनेरे बनैए लबड़ा।

नटी– अपनो घर तऽ सएह हाल अछि,अनका कोन उपदेश

जटिनके दुलरुवा जटबा,आब चलल परदेश।

गीत १३

जट - मोरंग-मोरंग सुनियै गे जटिन,

मोरंग हमरा जाए दही गे जटिन।

मोरंग से हँसुली लऽ अएवौ गे जटिन

तोहरे पहिराए हम देखब गे जटिन।

जटिन   मोरंग-मोरंग सुनियौ हो जटा

मोरंग देस जनु जाहु हो जटा

मोरंगके पनियाँ कुपनियाँ छै हो जटा

लागि जएतौ कोढ़ करेज हो जटा।

उलटियो ने आबे देतौ हो जटा

पलटियो ने आबे देतौ हो जटा

रहि जाही रे जटा नैनाके हजूर ।

जट- तोहरे लए लेबौ जटिन मोरंग से टिकवा

ओहिमे झमकाइ तोरा देखव से जटिन

मोरंग हमरा जाए दही गे जटिन ।

मोरंग हमरा जाए दही गे जटिन ।

जटिन - अते जे कमैले जटा की भेलौ ना

सुनु मोर जटवा,

जटिनके मँगवा उदास लागे ना

जट - टिकवा जब जब लौलियौ गे जटिन

टिकवा काहे ने पेन्हले गे

जटनी गे सभामे ललचौले गे

टिकवाविनु ।

जटिन - जाहो ते जाहो रे जटबा, देस रे विदेस,

मोरंगके टिकवा लेने आबहु हो रा

*अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर ।*

नट– मान मनौबल कऽ कऽ जटबा गेलै मोरंग कमाए,

एम्हर बेटा भेलै बेमार,जटिनियाँ वैद्यसँ पुछए उपाय ।

नटी – साँच बात इहो छै प्रियतम्,पुरुषविन सुन्न लगैछै अँगना

विधि बनौलक जोडी तैस,नारी होइछ अपूर्ण विन सजना ॥

गीत १४

जटिन रघुदासके अंगा-टोपी, रघुदासकेँ अंगा-टोपी

तोहरे देबौ रे बैदा, तोहरे देबौ रे वैदा

रघुदासके दियौ न जिआय ।

वैद रघुदासके अंगा-टोपी, रघुदासके अंगा-टोपी

हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया

रघुदास तँ सडले गेन्हाय ।

जटिन रघुदासके हाथके बलिया, रघुदासके हाथके बलिया

तोहरे देबौ रे वैदा, तोहरे देबौ रे वैदा

रघुदासके दियौ ने जिआय ।

वैद रघुदासके हाथके बलिया, रघुदासके हाथके बलिया,

हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया

रघुदास त सड़ले गेन्हाय ।

***अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर ।***

नट– बेटवा भेलै चंगा, मनमे जटबा बसलै ना,

जटबाके वियोगे जटिनियाँ अहुरिया काटै ना ।

नटी– चललै पिया उदेश जटिनियाँ, दर-दर भटकै ना,हो रामा,दर.....

कोने पापे पिअबा बिछुड़लै कि दुनियाँ बिजुबन लागै ना,हो रामा,दर....।

गीत १४ क (थपल गेल)

जटिन - हे रे सोनरबा भाय, कही दही जटबाके उदेश

जहिया से गेलै निरदैया, नै कोनो संदेश

पल-पल काटे राति अन्हरिया,दिनो लगे भयाओन

नै चाही मंगटीका कँगना, पिअबा अपन सोहाओन ।

हे रे..........।

सोनार हे गे जटिनियाँ दाइ, छोड़ जटके आस,

गरबा जोखि-जोखि हँसुली पेन्हैबौ, चल हमरे साथ ।

जटिन - हे रे सोनरबा भाइ,रे अँगिया लगैबौ तोरे हँसुलिया

बजर खसैबौ तोरे साथ ।

रे मोर पटा पुरबे नोकरिया

रहबै पटेके आस ।

बरह बरस हम आँचर बान्हि रहबै

रहबै जटेके आस ।

रे तोरासँ सुन्नर हमरे जटबा

बटिया चलैत लचि जाए

रे तोरासँ सुन्नर हमरे बलमुआ

चन-सुरुज छपि जाए ।

***थाकि हारि कऽ जटिन अपन घर आबि जाइत अछि । ओसारापर ओगठि जटक स्मरण करैत हिँचुकि हिँचुकि कानऽ लगैछ ।***

गीत १५

जटिन जाहि बाटे पियबा गेलै, दुभिया जनमि गेलै

बटिया जोहइते वीजुवन लागल रे की । आहे मइया ।

पियवा मोरंग गेलै, हमरा से कहि गेलै, आहे दिदिया ।

फूल लागल कँगना लेने अइथिन हो राम ।

मांगेके टिकबा लेने अइथिन हो राम ।

रचि-रचि जटिनके पेन्हयथिन हो राम ।

जटबिनु लागे दुनियाँ अन्हारे हो राम

***बेटा सेहो घरसँ बाहर आबि मायसँगे हिँचुकऽ लगैछ । तखने दहिन कातसँ माथपर मोटरी लेने जटक प्रवेश । लगमे आबि घरबाली आ बेटाके एकटक देखऽ लगैछ । प्रकाशक घेरा दूनुपर फूट-फूट पडैत छैक । दुनू चरित्र स्थिर भऽ जाइछ । प्रकाशक घेराकसँग नट-नटिनक प्रवेश ।***

***(नट नगाडाके सुर तालमे बजबैछ । नटिन सुरतालपर नाचऽ लगैछ । नटके चारुकात गोल घेरामे नटिनक नृत्य )***

नटी बारह बरिसपर पिअबा अएलै दुअरिया हे

जटिनके खातिर ।

त्यागि देलकै मोंरंग नगरिया हे ।

जटिनके खातिर ।

नट - चलियौ ने आब नटिन अपन एकचरिया हे ।

जटिनके खातिर ।

चमकऽ दियौ मिलनके इजोरिया हे

जटिनके खातिर ।

***दूनु नचैत-नचैत मंचसँ बाहर चलि जाइछ । आब स्थिर चरित्र चलायमान भऽ उठैछ । ओम्हर प्रकाशक घेरामे जटिन अकानैत जटक लग अबैछ । खुशीसँ आँखि छलछला जाइछ । पयरपर झूकि प्रणाम करैछ । माथपरक मोटरी, छाता लऽ घरदिस बढि जाइछ । जट बेटाके छातीसँ सटा लैछ । जटिन पानि लऽ अबैत अछि, जट पएर पखारैछ । दूनु एक दोसराके आगाँ ठाढ़ भऽ नोरायल आंखिए एक दोसराके देखैत अछि ।***

***गीत नं. ५ क एक टूकडीक पुनरावृति होइछ ।***

गीत ५क पुनरावृति

जटिन - टिकबा जब-जब मँगलियौ रे जटा, टिकबा काहे ने लौले रे ॥

अरे वाली उमरिया रे जटबा, टिकबा काहे ने लौले रे ॥

जट - टिकबा जब-जब अनलियौ गे जटिन, पौतीमे कऽ धएले गे ।

तोहर वाली उमरिया गे जटिन, टिकवा काहे न पेन्हले गे ॥

*जट जेबीसँ लाल डिव्वा निकालैत अछि। ओकरा खोलि मँगटिका बहार कऽ जटिनकेँ पहिरा दैछ। दूनु नृत्य मुद्रामे आबि जाइछ।*

गीत १६

आरे बाली उमेरिया रे जटबा

टिकबा हम पहिरलौँ रे

टिकबा हम पहिरलौँ रे, रे जटबा

टिकबा हम पहिरलौँ रे

आरे बाली उमेरिया रे जटबा

टिकबा हम पहिरलौँ रे

***नचैत नचैत जटिन, जटक बाँहिमे आबि जाइत अछि। दूनु फ्रिज भऽ जाइछ।***

**अन्हार**

vvv

# राजा सलहेस

## दृश्य १

**मंत्रपर इजोत क्रमशः अबैत अछि। एक कातसँ नट आ नटिनक भेषमे सलहेस आ सतबतीक प्रवेश। काँख तर सिरकी, माथपर मोटरी आ एक हाथमे मोहन भैसाके डोरिअबैत मंचपर अबैत अछि। एक ठाम रुकि चारुकात किछु देखैत नट नटीसँ कहैत छैक** - सतवती, इहे ठाम नीक है। एतै लगाउ सिरकी। मोकामा आबि गेली।

नटीन - (प्रशन्न होइत) ठीके कहै छी। एम्हरे कतौ लगााउ।

**दुनू समान सभ निचां धऽ, भैंसाके एकटा गाछक जड़िमे बान्हि दैत अछि। सिरकी तनैत अछि। समान सैंतैत अछि आ निचाँ पटिआ बिछा गपसप कर लगैत अछि।**

सलहेस - आब चूहडमलके केना पकडबै ?

सतवती - 'अहाँ चिन्ता नै करु सामी ! हम ओइ चोरबाके चैनस रह नै देबै। जे हमर सोहागके अनाहक बदनाम कैने है।'

**(सलहेस चुपचाप अपन पत्निदिश तकैत रहैत अछि।)**

हम तैयार भऽ रहल छी। कनीक मोकामा नगरियामे देखै छीऐ, चोरक सरदार कत्त है।

**सतवती सिरकी तरमे पैसि जाइत अछि। सलहेस उठि कऽ टहल गलैछ।**

## दृश्य - २

**चूहड़मलके भवन। गद्दीपर बैसल चूहड़सँगे किछु साथीसभ गपसप करैत।**

एकटा साथी - सरदार, आइ फूलबारीमे एकटा नटिन आएल है, से की कहु, कहल ने जाइअ।

चूहड़ - रे बाज ने, की कहै छे ?

साथी - गजब के रुप है, जवानी है।

चूहड़ - (सम्हरि कऽ दैखैत) रे ठीके ? एहन सुन्नर है ?

दोसर साथी - सुन्नरे है। विजली है विजली। दारुके चिखना है सरदार !

**चूहड़मल कोनो कल्पनामे डुबि जाइत अछि।**

पहिलुका साथी - सरदार, की सोच लगलिऐ ?

चूहड़ - (चौकि क) एह, हम त फूलबारी चलि गेल छलीअ। सुन, जेना होतै, तेना मना ओकरा !

दोसर साथी - इह, ओहिना मानत ? नटिन सभ बड़ नखरा करैत रहै छै।

चूहड़ - (उत्तेजित भऽ कऽ) रे सार ! की कमी है हमरा। तहुमे राज पकड़ियाके महलमे जे हाथ मारने छिऐ, ओहे गीरमहार दऽ देबै। जेजे गहना चाही सभ द' देबै। आब ?

साथी सभ - बात त ठीक है। अहाँ के के हाथ पकड़त। बात त बनि सकै है। लेकिन ओ त जएतै के ?

चूहड़ - (सोचमे पड़ैत) बात त ठीक कहै छे। जएतै के ?

**तखने एकटा नोकर बाहरसँ आबि खबर करै छै** - सरदार ! एकटा नटिनीयाँ गोहना गोद आएल है। से मलिकाइनके कहि दिऐ ?

**नटिनियाँके नाम सुनिते सभके कान खड़ा भऽ जाइ छै। एक दोसरके मुँह देख' लगैछ।**

साथीसभ - सरदार, लगैअ ओहे त ने है।

चूहड़ - जो,जो जल्दी देख कऽ आ।

**साथी बाहर जाइत अछि आ तुरत घूरिकऽ अबैत अछि।**

साथी - हँ, सरदार उहे नटिनीयाँ है।

चूहड़ - (नोकरसँ) जो बजा आन।

**नोकर बाहर जाइत अछि आ नटिनियाँके लऽ कऽ अबैत अछि। नटिनियाँके देखैत चूहड़मल अवाक् भऽ जाइछ। देहयष्टि निहार' लगैछ। बड़ी कालधरि ठाढ़ रहला पर नटिनियाँ पुछैछै** - सरकार, अपने बजैलिऐ अ !

चूहड़ - (जेना नीन्नसँ उठल हो) ऐं, हँ। हमही बजलिऔ अ !

नटनियाँ - त कहु कत गोदना गोदि दू !

चूहड़ - हम कत गोदायब गे ! जनानी सभ गोदैतौ ने !

नटनियाँ - नै, सरकार कही त हम अहुँके गोदि सकै छी !

**नटिनियाँक हाओ-भाओ आ बोली-बानीसँ चूहड़ा प्रभावित होइत रहैछ।**

चलल जाओ, कत्त चली ?

चूहड़ - दूत्। हम की गोदायब। ओना तों कहै छे त तोरासँगे हम चलि सकै छी।

साथी सभ - सरदारसँगे जएबे त मालामाल भऽ जएबे। सोचि ले !

नटिनियाँ - हमर कामे की। जत्त गोदौता ओतहि गोदि देबै।

साथी सभ - तखन सरदार, नटिनियाँसँगे जइयौ ! सौदा बेजाए नै है।

**चूहड़मल, नटिनियाँ दिश तकैत अछि। चूहड़मलके ललचाएल नजरिके सतवर्ती बूझि जाइत अछि। ईशालासँ अपना पाछ्रा आबके लेल कहैत बिदा भऽ जाइत अछि। चूहड़ल सेहो पाछ्रा-पाछ्रा बिदा भऽ जाइछ।**

## दृश्य -३

**फूलबारीमे सिरकीके आगाँ सलहेस कत्तासँ बाँसके छोट-छोट बत्ती बना रहल अछि। तखने सतवतीके चूहड़सँगे अबैत देखैत अछि। बिन देखल जकाँ कऽ कऽ बाँस आ बत्ती लऽ कऽ दोसरकात चलि जाइछ।**

**सतबती सिरकीके आगाँ चूहड़के बैसके लेल आसन दैत छैक। अपने भीतर चलि जाइत अछि। अबैत अछि त हाथमे पानिके गिलास होइछै। चूहड़के पीअला दै छै।**

चूहड़ - एह, अहाँसँगे रहि कऽ पानि पीएब। किछु दोसर पीआउ ?

नटिनियाँ - हमरा लग इहे है। हमर मरदबा अपना ला रखने है, देब तँ मारत।

चूहड़ - के मारत, जान लऽ लेबै हम ओकरा। लाउ, उहे लाउ !

**नटिनियाँ भितर जाइत अछि। बोतल लबैत अछि आ गिलासमे ढारि कऽ चूहड़के हाथमे दैत छैक** - लेल जाओ !

**चूहड़ बड़ आवेशसँ गिलास लैत अछि आ मुँहमे लगा सरासर पीबी मुग्ध होइत बजैत अछि** - हम दारु त पहिनहु पीबै छली। एहन सुअदगर कहाँ लागल कहियो ? अहाँ धन्य छी ?

नटिनियाँ - धन्य त हम छी हजुर ! अपने सन सदरदारके दर्शन भेल। आ अइ गरीबखानामे चरण देलिऐ।

**बातचीतकसँगे दारु ढारैत जा रहल अछि नटिनियाँ।**

अपनेके राजमे छी। केहुना गुजर करै छी।

चूहड़ - कुहुना गुजर के की मतलब ? की चाही तोरा ? चल, हमरे महलमे। ओतै रहि हे।

नटिनियाँ - नै सरकार। मरद है अपन। केना रहबै। दुखम-सुखम त साथ रही पड़तै।

चूहड़ - त, कह एखने सारके हाजतमे ध' दैत छिऐ।

नटिनियाँ - नै, नै सरकार। ई अनर्थ नै कएल जाओ। हम त छी किने।

चूहड़ - (बात के पकड़ैत) तों छें त ठीक छै। चल सिरकीमे...।

नटिनियाँ - अखन्ते, सरकार !

चूहड़ - त कखनू ! बुढ़बा कत्त गेलौ ?

नटिनियाँ - दूर जो, बुढ़बा मुँहझौसा कतो जाउ। कहली त, हम त छीने !

चूहड़ - तैस त कहै छियौ, चल भीतर।

**नटिनियाँ कनेक मुँह कोचिअबैत अछि।**

चूहड़ - बुझिलियौ, तोरा किछु चाही। त ले।

**डाँरमे भीतरसँ गमछाके खोलैत अछि। ओहि मेसं एकटा बढ़का बटुआ निकालैत अछि। बटुआमेसँ चमचम चमकैत चन्द्रहार बहार कऽ नटिनियाँकें दैत छैक। नटिनियाँकें आँखि चमकि उठैत छैक।**

नटिनियाँ - सरकारके जय हो

चूहड़ - एक्केटामे जय। अखनु घरमे त आरो है। राख, लेने अबै छी।

नटिनिया-सरकार, सिरकीमे ..........।

चूहड़- (बातकें कटैत) नै, नै। पहिने आब तोरा गहनेस लाद दे। तब निचैनस सिरकीमे होतै।

नटिनियाँ - ठीक छै महाराज ! हम एही सिरकीमे सरकारके रस्ता तकैत रहै छी।

**डोलैत सम्हरैत चूहड़ मंचसँ बाहर भऽ जाइछ।**

## दृश्य -४

**फूलबारीमे सिरकी लग सलहेस आ सतवती बातचीत करैत।**

सतवती - सामी, आब तैयार रहु। उ समान लऽ कऽ आएत कि पकड़ पड़त।

सलहेस - हम तैयार छी। हँ, तरुआरि नीकालु।

सतवती - ओहो कम बलिष्ठ नै है। से सम्हरि कऽ !

सलहेस - हमरा पर भरोस नै है।

सतवती - बिन भरोसे अखनु तक जिलिऐ !

**ताबत चूहड़मल देखि पड़ैत अछि। कान्ह पर पाछांमे मोटरी लटकौने, दहिन हाथमे तरुआरि लेने झूमैत अबैत। सलहेस सिरकीके कातमे चलि जाइछ।**

**नटिनियाँ आगाँ बढ़ि स्वागत करैंत** - अबियौ सरकार। बेचैन भऽ गेल रही पैरा ताकैत-तकैत।

चूहड-( निहाल होइत)- आबि गेली किने ! (पीठ परसं मोटरी उतारैत) लीअ, राजकुमारी चन्द्रावतीके सभ गहना सभ। आब अहीं राजकुमारी हम्मर।

**नटिनियाँ गहनाके मोटरी लऽ सिरकीमे धर' जाइत अछि। पाछां-पाछां चूहड़ सिरकीमे प्रवशे करैत नटिनियाँकें भरि पाँज क पकड़ैत अछि। नटिनियाँ मोटरी धरैत पाछा मुँहे चूहड़के धकेलि दैत छैक। चूहड़ धरफडा क चितंगे खसि पडैछ। चूहड़ एकबेर त अबवक भऽ जाइछ। फेर रोषसँ उठैत अछि आ तरबारसँ नटिनियाँपर प्रहार कर लगैछ पाछासँ सलहेस अपन रुपमे बहार भऽ तलवारके अपन तलवारसँ रोकि लैछ। सलहेसके देखिते चूहड़ अबाक भऽ जाइछ। चेहरापर भय दौड़ि जाइछ। मुदा बंच'मे लेल लड़ब जरुरी बूझि तलवार उनटा कऽ सलहेसपर प्रहार करैछ। दुनूक बीच घमासान युद्ध शुरु भऽ जाइछ। एकबेर चूहड़मलक तलवार उछटि कऽ फेका जाइछ आ सलहेस अपन तलवार ओकर छातीसँ सटा दैछ। फेर अपन तलवारके सेहो फेकि मल्लयुद्धके लेल ललकारैछ। दुनूक बीच मल्लयुद्ध शुरु भऽ जाइछ। अन्तमे चूहड़ हारि मानि लैछ। सलहेस आ सतवती चूहड़के रसासँ बन्हैत अछि आ भैंसाके गरदनिमे रसा बाँन्हि राज पकड़िया दिश चलि पड़ैछ।**

## दृश्य - ५

**राजपकड़ियाकें राजसिंहासनपर राजा कुलेश्वर बैसल। दरबार लागल। दरवान खबर करैछ** - सरकार, दरबज्जापर सलहेस आएल है।

राजाक हुकुम होइछ - जल्दी बजाउ।

**सलहेस आ सतवती चूहड़कें बन्हने प्रवेश करैछ।**

सतवती - (आगाँ बढ़ि) सरकार, राजकुमारी चन्द्रावतीके गहना लेल जाओ। आ अपराधी चोर सरदार चूहड़मलके सेहो। हम अपन वचन निभैली आब अपने हमर कागज द क उचित न्याय कएल जाओ।

**राजा कुलेशर गहनाकें पोटरी, आ चूहड़मलकें देखैत अछि। चूहड़मल बिना पुछने वक' लगैत अछि** - हमर प्रेमके ठोकरा कऽ सलहेसके प्रेममे पड़ि राजकुमारी चन्द्रा हमरा अपमान कएलक, पहरेदारीसँ हटैलक। हम तकरे बदला लेबके लेल मोकामासँ पकड़िया तक सैन्ह खुनि कऽ धनमाल चोरी कइली, ठीके छै सरकार। जे सजाय भेटो।

राजा कुलेश्वर - (उठि कऽ सलहेल लग आबि) हम गलती कैलहुँ। अहाँ सन वीर, पराक्रमी आ जनताके सेवा कर बलाके काल कोठरीमे देलहुँ। हमरा क्षमा करु !

सलहेस - महाराज, हम सभ अहाँके प्रजा छी। भुलचुक सभसँ होइ छै। धन्यवाद देबाके हो त हमर पत्नी सतवतीके दिऔ, जे हमर लाख दुःख देलोपर अपन सोहागके रक्षाके लेल प्रण कैलक आ चूहड़के पकड़लक।

सतवती - ई की कहल प्रिय, ई त हमर धर्म अछि।

सलहेस - जीवनभरि अनेके वियोगे, रने-रने बौअएल हुँ। अपन धर्मपत्नीके कहियो मोजर नै देलिऐ। लज्जित त हम छी।

राजा कुलेश्वर - सलहेस ! आब अहाँके कतौ जाएके काम नै है। (सौंसे सभासदके सुनबैत) सुनै जाउ मंत्रीगण, राजगुरु ! सलहेसके वीरता, पराक्रम, परोपकारी धर्मसँ प्रभावित भऽ हम पकड़ियागढ नरेश राजा कुलेश्वर आइएस अपन राजके महिसौथा विर्ता सलहेसके दैत ओकर सरदार बनबैत छी आ ओकरा 'राजाजी'के पदबी सेहो प्रदान करैत छी।

सौंसे दरबारी - राजाजी सलहेस के जय !
राजा कुलेश्वर महाराजके जय !!

**सलहेस डबडबाएल आँखिए अपन पत्नि सतवती दिश तकैत अछि। दुनू लग अबैत अछि। सलहेस वाम हाथसँ पत्निकें पाछ्रसँ वाम बाँहि पकड़ि मंचक आगाँ आबि स्थीर भऽ जाइछ।**

**अन्हार**

# आ बौधु बाजि उठल

**पात्र-स्थिति**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | **बौधु-(उमेर) ३५ वर्ष** | - | **चाहक दोकानदार।** |
| २. | **पुरुष- १ (उमेर ४५ वर्ष)** | - | **गामक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व।** |
| ३. | **पुरुष - २ (उमेर ४५ वर्ष)** | - | **गा.वि.स.क अध्यक्ष।** |
| ४. | **पुरुष - ३ (उमेर ४० वर्ष)** | - | **गामक कुटिल व्यक्तित्व।** |
| ५. | **पुरुष - ४ (उमेर ५० वर्ष)** | - | **गामक भलमानस व्यक्तित्व।** |
| ६. | **रुपचन्द (उमेर ३६ वर्ष)** | - | **गामक कुटिल व्यक्तितव।** |
| ७. | **छोटे (उमेर १० वर्ष)** | - | **बौधुक बेटा।** |
| ८. | **महिला (उमेर ३० वर्ष)** | - | **बौधुक पत्नी।** |
| ९ | **गोराइत (उमेर ४० वर्ष)** | - | **गा.वि.स.क पिएन।** |

**दृश्य - १**

**(गामक चौक। चौक पर एकटा चाहक दोकान। तीन कातसँ बेंचसभ धयल। दूटा खुरसी, कठघराक एकचारीक भितर राखल। बौधु भगत चाहक पानी गरम करैत। बेंच पर एक-दू गोटे चाहक चुस्की लैत। ताबत् पुरुष १ आ' पुरुष २ क प्रवेश।)**

**पुरुष १ : की रे बौधुआ ! चाह-ताह छौ कि ?**

**बौधु : जी मालिक ! बैसल जाआ ! (बेरा-बेरी स भितर धयल खुरसी बाहर आनि लगा दैछ। दुनू चाह पीब' बला पीबिक' चलि जाइछ।)**

**पुरुष २ : बौधु ! की छै गामके हाल-चाल ?**

बौधु : (केतलीसँ दुध ढारैत) हजुर ! अपने गामक परधान छिऐ। सब बात बुइझते छिऐ। हम की जनबै हजुर !
पुरुष १ : तैयो तोरा दोकान पर त सब रंगके लोक अबैछौ ने। बजैत होतौ बात सब।
बौधु : मालिक, अइअ त समय काट' बला सभ रहै छै। ओकर बात पर धीआन देल जाए त' सब काम चौपट भ' जएतै।

(दुनूके चाह बढबैछ।)

पुरुष २ : (चाह लैत) ठीके कहै हे गोधिआँ। अहुँ धीआपुताबला बात पुछै छिऐ। रे अइठाम त सब रंगके लोक अबै है। सबके बारेमे सब रंग बजै है। एना जे सबके बात ई कह' लगौ त' एकर रोजी रोटी चलतै ?
बौधु : (लजाइत सन) ई त अपने सभके कृपा है सरकार !

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश)

पुरुष ३ : (दुनूके देखैत) एह, दुनू मालिक एक्केठाम !
पुरुष १ : की बात छौ। बड हकासल-पिआसल बुझाइ छे।
पुरुष ३ : बाते ओएह है, हजुर। आइ कयक दिनसँ पछोड धएने छी। छौ-पाँच टुटबे ने करै है।
पुरुष १ : आब की टुटतौ ? कहि देने छियौ। तोरा नै होतौ। पहिने भागेसरके कहल जा चुकल छै। ओकरा होतै।
पुरुष ३ : ई त अन्याय होतै। दिन-राति खटै छी हम। चुनाव होइ कि पंचैती। गाममें चीत भरै छी हम आ डिलरशीप लेब' बेरमें भागेसरके भेटतै ! की प्रधान जी ?
पुरुष २ : हम की कहियौ ? गोधिआँ जे कहतौ सेहे होतौ।
पुरुष ३ : त महाजन ! हमरा नहिएँ होतै।
पुरुष १ : तों बराबरि भोजके बेरमें कुम्हर रोपैत अएले ह। तोरा कहि देलियौ नै होतौ। मूड खराब नै कर। (पुरुष २ सँ) चलु गोधिआँ।

(दुनूक प्रस्थान)

पुरुष ३ : देखलही बौधु ! बडका सबके ताल।
बोधु : हम की देखियौ।
पुरुष ३ : केनाक' हमरा निरैस देलक। अच्छा ठीक है। फेर अबै है चुनाव। हमरो नाम हरिश्चन्दर है।

## अन्हार

## दृश्य २

(बौधुक चाहक दोकान। भिनसरक समय। बाट ध' गौंआसभ अपन-अपन काज करैत जाइत। चाह बनबैत बौधु। एकटा सात-आठ वर्षक बच्चा एम्हर-ओम्हर क सहयोग करैत।)
बौधु : (बच्चासँ) रे छोटे। देखही त' चिनी हौ कि नै ?
छोटे : ठीक है।
बौधु : कनीक गिलास सबके नीक नाँहित धोले।
(छौंडा गिलाससभके गरम पानीसँ बगलमे धोअ' लगैत अछि। ताबत् पुरुष ३क प्रवेश। बेंचपर बैसि जाइत अछि।) पुरुष ३ सँ) की हौ हरिश्चन्दर आइ भोरे भोर केना दोकान पर ?
पुरुष ३ : त कह ने नै आब' ला। नै अएबौ।
बोधु : (नेहोरा करैत) राम, राम ! गहिंकी त भगवान् होइ है। भोरक पहिलका गहिंकी त आओर लक्षनमान !
पुरुष ३ : अच्छा बौधु ! बनाले तोहुँ। जकर हाथ कमजोर होइ-है, सब ओकरे पर लागल रहै है।
बौधु : छोड' भाइ। चाह बनबियौ ?
पुरुष ३ : ई बात तोरा शुरुएमे बुझ' नै चाही ?
बौधु : तों हमर पहिलके गहिंकी छा, से......।
पुरुष ३ : हाँ, हाँ बुझलियौ। ई चाह उधारी नै रहतै।
(बौधु चाह छान' लगैछ। ओहि बाटे जाइत पुरुष ४ के हाँक पाड़ि बजा लैछ पुरुष ३) हौ रामधन ! आबह, एक कप भ' जाइ।
पुरुष ४ : हौ, हमरा जल्दी हबे। प्रधान निकलि जाएत।
पुरुष ३ : हौ बुझिलियौ। अखुन तोरै पर ढरल हौ परधान। जे जेना दूहि ला।
पुरुष ४ : (बेंच पर बैसैत) देखह हरिश्चन्दर। इहे त खुबी है अयोधी चौधरी में। "ने माधोके लेना ने उधोके देना।" तैस आइ भरि गाममें सब मानै है।
पुरुष ३ : (बौधुसँ) एकटा चाह आरो बना दही। (पुरुष ४ सँ) हूँ, तो सब कैला नै कहबहो। हमरा सबके लेल त....।
पुरुष ४ : नै, ई हमरे बात नै। आइ गाममें एक्कोटा मुद्दा-मामिला अड्डा-अदालतमे है ?
पूरुष ३ : से त कम है।

पुरुष ४ : गाममे शान्ति है, लोक अपन-अपन काम करैअ' । ई शान्ति, प्रेम ककरा खातिर छै ? इहे अजोधीके खातिर की ने ?
पुरुष ३ : इहे तोहर गेंगिऐ रहै छह । हौ गाममें ओतेक विकास नहियों भेलै त ककरो हानियो त नहिए कैलकै । सबके समान दृष्टिसँ देखै है । की हौ बौधु ?
बौधु : (गिलास बढबैत) जी, अपने कहिते छिऐ त' ।
पुरुष ४ : देखिहो, अगिलो चुनावमे उहे होतै प्रधान ।
पुरुष ३ : आब हद भ' गेलो । हौ फेरु प्रधानके बात नै कर' । गाम प्रधान होब' बला सँ सुन्न नै भ' गेल है ।
पुरुष ४ : (कनेक रोषसँ) देखह बौधु ! ई केहन आगि लगब' बला बात बजैअ' । हौ के है अयोधीके विरोधमे टिक' बला ।
पुरुष ३ : (उठैत) देखह रामधन । समय आब' दहक । देखबे करबहक की !

(दुनू कपक पाइ बौधुके दैत एक कात विदाह भ' जाइछ । पुरुष ४ ओकरा जाइत एकटक देखैत रहैछ ।)

पुरुष ४ : बौधु ! हम ई की सुनै छी । एकरा कल्ला नै अलगै छलै । से लगैए ई कोनो अन्हेर करत ।
बोधु : भगवान् बचबथुन अइ गाम के ।

## अन्हार

## दृश्य ३

(बौधुक चाहक दोकान । अपरान्हक समय । छोटे आ' ओकर माय दोकानपर । महिलाक उमेर ३५-३६ वर्षसँ उपर नहि । नीक देहयष्टि ।

बाट ध'क' पुरुष ३ जाइत । दोकान पर बौधुके नहि देखि दोकान दिश सहटि जाइत अछि । ओकरा देखि महिला घोघ कने तानि लैछ ।)

पुरुष ३ : (बेंचके कनेक अपना दिश घिचैत) की रे छोटे । बाप नै हौ ?
छोटे : बजार गेल है ।
पुरुष ३ : कैला रै । ओकरा बुझल नै है गाममे बड़का पंचायत है । कय गामके पंच सब जुटतै चाह त खुबे विकेतौ ।
छोटे : ताहीला त चाहपती, चिनी लाब' गेल है । कनी खैनी, गुटका आ' बिस्कुट सिकरेट सेहो लौतै ।
पुरुष ३ : एह, तब त अपनो फैदे है । चाहके संग-संग बिस्कुट । (कनी बिलमि) हँ, एकटा चाह बनाब' कही मायके ।

(महिला चाह बनब' लगैछ । स्टोबमें हवा दैत काल बुझाइछै जेना तेल कम हो । छोटेके बजा क' किछु कहै छै । छोटे डिब्बा आ' पाइ ल' क' दोकान दिश जाइत अछि ।)

(कनेक सहटि क') हे रघुनाथपुरीवाली । साउस मानै छह की ? कहाँदन राति बड झगड़ा कैलको । (महिला किछु ने बजैछ । गिलास धोअैत रहैछ ।) नै, कुछो होअ' त बाज । आइए पंचैतीमे राखि देबै । बौधु शुद्ध बुद्ध हओ । किछु ने बजतो ।

महिला : (गर जाँति) सब ठीके है ।
पुरुष ३ : डरे कहै छह त निडर भ'क' कह' । हम ठाढ छियो किने । बुढियाके केस ध' क' पंचायतमें ल' अएवै ।
महिला : बस करथुन । हमर घरके बात है । हमहीं सब समेट लेबै ।
पुरुष : ३ सेहे । हम सब कथीला छिऐ । मौका पड़तै त तोरा खातिर देखल जएतै ।
महिला : (बेटा गेल बाट दिश ताकि) मोचरुवा, मरि गेलै कत्त ?
पुरुष ३ : कैला धीआपुताके गारि पढैत छहो । अबिते होतै की ? (कनेक विलमि) रघुनाथपुरवाली, हे कनीक सलाई दा त, बीड़ी धड़वै छी ।

(महिला संकोच स आगां बढैत अछि आ' पुरुष ३ क हाथ में सलाई दैत छैक । पुरुष ३ सलाई ल'क' बीड़ी धरबैत अछि । आ सलाई दैत काल महिलाक हाथ दबा दैत छैक । महिला झटकिक' हाथ अलग क' लैत अछि ।)

महिला : (रोषसँ) केकरो बहु-बेटीके एना नै करके चाही ।
पुरुष ३ : गहिंकी सँगे एना रोषसँ बातो ने करके चाही कीने ।
महिला : मार बढनी एहन गहिंकी के । अबै है छोटे के बाप त हम कहै छिऐ ।
पुरुष ३ : जा, जा, बौधुआ हमरा की क' लेत । अड्ड-खाना हमही धांगी आ' दोसरमे चौक परक सार्वजनिक जमीनमे ई दोकान । एक्के इशारा पर उठि जएतौ ।

(महिला कनेक डेराइत अछि । ताबत् छाटे अबैछै । महिला तीन चारि चमेटा लगबै छै ।)

महिला : जुअनढाहा, कत्त' मरि गेल छलेह' । जत' जाएत खेलमें लागि जाएत ।
छोटे : दोकान पर भीड़ रहै । हम अपने ल' लितिऐ । दीतै तब ने अबितिऐ ।

(स्टोबमें टीप लगा तेल ढारैछ । हबर-हबर हवा द' चाह बनबैछ । एम्हर पुरुष ३ बीड़ी सोटैत रहैछ । ताबत् गा.वि.स.क पिएन रीझन मंडलक प्रवेश ।)

रीभ्फन : रघुनाथपुरवाली एक गिलास हमरो दा ।

(आ' दोसर बेंच पर बैसि जाइत अछि ।)

पुरुष ३ : हं, हं रीभ्फनाके बिस्कुटो दही रे छोटे । परधाने आ' एकरे त चलती है । जगहके भाडामें चाह बिस्कुट । की रे रीभ्फन ?

रीभ्फन : देखू हरिश्चन्दर जी ! हम सब अपन टेंटके पाइस चाह पीबै छी । खैराती नै ।

पुरुष ३ : तैयो, तोरा सबपर त रघुनाथपुरबाली मेहरबान छौहे – जतेक कचर ।

(पुरुष ३ उठैत अछि आ एक दिश विदा भ' जाइछ ।)

रीभ्फ्न : एह, केहन-केहन लोक है गाममें ।

महिला : सेहे देखथुन । जे मनमे अबै है बजै है ।

(चाह बनाक' रीभ्फनके दैत अछि ।)

कहाँदुन बजै है, ई, जे आब दोसरके जीतैतै परधानमे । बाप रे, गामके भुजि देतै ।

रीभ्फन : (चुस्की लैत) रे, के कहैछौ रघुनाथपुरवाली ! जहिया तक परधान आ रामअसीस बाबू एक है, कोनो माइके लाल किछो नै क' सकतै ।

(चाह समाप्त करैत अछि । पाइ दैत छैक आ ओत' स विदा भ' जाइत अछि । महिला आ' छोटे चाहक सामग्री सभ ठीक कर' लगैत अछि ।)

## अन्हार

## दृश्य ४

(बौधुक चाहक दोकान । दोकानमें गुटका, खैनीसभ टाँगल । टेबुल पर पाउरोटी । कठघरामे बिस्कुट, सिकरेट, बीड़ीसभ ताहियाक' धएल ।

भिनसर ८-९ क अमल । किछु गोटे चाह पीबैत । ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश । एक नजरि दोकान पर दैत अछि । एक गोटेके बैसल देखि प्रसन्न भ' ओम्हर सहटि जाइछ ।

पुरष ३ : अरे रुपचन भाइ । तोरा त भरिगाम खोजि लेलियौ, एत्त' छे ।

रुपचन्द : बड़ी काल भेल । चाहो पीली, हम जाइ छी ।

पुरुष ३ : नै अन्हेर नै कर नै । तोरासँ बतिआएके है ।

(चारु भर चाकुआइत अछि । चाह पीब' बला उठि क' चलि जाइछ ।)

हँ, आब फैलस बतिआएब । (बौधु, कनीक करगर दू कप बना ।

(बौधु मुँह बिजुका चाह बनब' लगैछ ।)

त भाइ हम सब आब गाममे नै रहु ।

रुपचन्द : की भेलौ से ?

पुरुष ३ : रे खाधिके डिलरशीप लेब चाहली – प्रधान नै देलक । सडकमे माटि पर'ला उपभोक्ता बनलै, तैमे नै रखलक । मासटरीमें एकगोटेक घुसिआब' चाहलिऐ नै भेल । आब हम सब खेतके दुबही चिबाउ ।

रुपचन्द : ई त ठीक छै भाइ । जहिआसँ रामअसीस आ अयोधी मिललैअ, हमरा तोरा सनके गुंजाइश गाममे नै हौ ।

पुरुष ३ः त हम हिम्मत हारि जाउ ।

रुपचन्द : तोरा सन लोक हिम्मत केना हारत । लेकिन दूनू के.....।

पुरुष ४ : की दुनूके-दुनूके रटैछे । कोनो जोगाड त सोच पडतै ।

(ताबत् बौधु चाह दुनू के हाथमे दैत छैक ।)

रुपचन्द : दुनू राम-सुग्रीवके मित्रता है बौआ । टस स मस नै होतौ ।

पुरुष ३ : (किछु सोचैत) बात त कठिन छै । मुदा कलयुगमे राम-सुग्रीवके दोस्ती कतेक दिन ?

रुपचन्द : (साश्चर्य) माने ?

पुरुष ३ : माने माफ हौ । दुनूके बीच फूट आन' पडतौ । गंगा-जमुना अलग होतौ तबही काम बनतौ । की बौधु ?

बौधु : (रोषसँ) एह, हमरा कोनो मतलब हय । अहाँसब बड़कालोक बड़का बात ।

पुरुष ३ : ई जमीन जे खैरातमे पौने छे – साँच बजिते छीन लेतौ ने ।

बौधु : हमरा सबके बीचमे नै पारु, जे कर' के हो अपन करु । हम किछु कहै छी !

रुपचन्द : किछु कहबे त' जएबो करबे की ? खिआल रखिहे (पुरुष ३ स) त भाइ, की पलान हौ ।

पुरुष ३ : अगिला चुनावमे सोच' पड़तौ ।

(ताबत् रामअसीसक प्रवेश । ओकरा देखि दुनू कनेक सकपकाइत अछि । फेर ठीकसँ बैसि जाइछ । बौधु भित्तर स खुरसी निकालि बाहरमे लगा दैत छैक ।)

बोधु : बैठल जाओ मालिक ।

पुरष ३ आ रुपचन्द : (एक्केसँग) परनाम मालिक ।
पुरुष १ : परनाम ! की बात है हरिश्चन्दर । आइ बैठार जमल है ।
पुरुष ३ : जी ओहिना । अहींके बारेमें सोचै छी हम सब ।
पुरुष १ : तोरो सबके नीक बात फुराइ हौ ?
पुरुष ३ : एह, मालिक, हमसव एतेक त अबूझ नै ने छी ।

रुपचन्दके इशारा करैछ । रुपचन्द जेबी स खैनी आ चून बहार क' लगब लगैछ । ओम्हर बौधु चाह बना पुरुष १ के बढा दैत छैक ।)
पुरुष १ : की सोचै छले ?
पुरुष ३ : इहे जे अइबेर अहींके परधानमे खडा होब' के चाही ।
पुरुष १ : (रोषसँ) गलत बात छै । गोधिआं छैहे त हमरा बारेमे ई केना सोचि लेलही ?
रुपचन्द : अजोधीबाबू अइ बेर त भेबे कैलखिन्ह । दोसरबेर अपनेके द' देथिन्ह त कोन अपराध भ' जएतै ।
पुरुष ३ : आ' अपन-पराय के चिन्हुके मौका भेटै है ।
पुरुष १ : नै, ई नै भ' सकै है । गोधिआं नीक जकाँ चलबै है । आ रायो सल्लाह त हमरे लै छै ।
पुरुष ३ : आ भोटो त अहींके जाइहै किने ! कतेक है अयोधीबाबूके । १५-२० घर, सय डेढ सय भोट । हजार भोटस जितै है - के देहै भोट ?
रुपचन्द : आ' पाँचलाखके जे रुपैआ अबैहै - तैस अपन सहयोगीके पाल' के मौको त भेटै है ।
पुरुष १ : रुपैयाँ त गामेके विकासमे जाइहै ने ।
पुरुष ३ : लेकिन पाइ जाइ है अपन आदमीके हाथे । अजोधीबाबूके भाइ, भतिजा, सार बनल है ठिकदार, ओहे उपभोक्तामे ओहे इसकुलमे, ओहे बोरिंगमे आ' ओहे चाउर बाँटमे ।
रुपचन्द : है एक्कोटा खांटी अपनेके आदमी ?
पुरुष १ : ओहो त हमरे आदमी है किने ।
पुरुष ३ : इहे भलमनसाहतके त फैदा उठौने है अजोधीबाबू । काम अपन आ नाम अहाँके ।
पुरुष १ : देख, ई फुटानीबला बात नै बाज । उ जे करै ठीके करै है ।
पुरुष ३ : त बिलटाओल जाए अपन बाल-बच्चाके । अपन सहयोगी सबके । कैला हमहुँ सब सोचब ककरो लेल ( रुपचन्दसँ) चल रुपचन्द ! अइ गामके यहे रीति है । जकरा लेल कनैछी तकरा आँखिमे लोरे ने ।

(दुनू उठैत अछि । ओम्हर बौधुक मुँह बनैत-बिगडैत छैक । मोनमें जेना कोनो बात औंना रहल होइ, बाज' नै चाहैअ । पुरुष १ सेहो उठैत अछि । जेबीसँ पाइ निकालि बौधुके दैत छैक आ' गुम्मसुम्म चल जाइत अछि । ओकरा जाइते पुरुष ३ आ रुपचन्द जोर स ठठाक' हँसि दैछ ।)

### अन्हार

## दृश्य ५

(बौधुक चाहक दोकान । अपरान्ह ३-४ क समय । गा.वि.स. अध्यक्ष पुरुष २ क प्रवेश । बौधु हरबराक' खुरसी बहार करैछ । कान्ह पर धयल गामछासँ ओकरा पोछैत छैक आ कनेक आगाँ बढि अध्यक्षके बैसबाक इशारा करैछ । प्रमुख बैसैत छथि । बौधु स्टोबमे हवा भरैत अछि । केतली चढा दैत छैक । छोटेके गिलास साफ करबाक लेल कहैत छैक ।)
पुरुष २ : बौधु, केहन चलै छौ दोकान ?
बोधु : पेट भरैछी मालिक ।
पुरुष २ : आइ तोरो दोकानके चर्चा उठल रहौ पंचैतीमे ।
बोधु : (हाथ बारैत) जी ?
पुरुष २ : हँ, एक गोटे उठौने रहौ - ई जमीन तोरा किए देल गेल छौ से । (बौधु चुप्प रहैत अछि, चाह बनब' लगैछ ।) सार कतेक कपटी लोक भ' गेलै आइकाल्हि ।
बोधु : अपनेक आशामे छिऐ ने मालिक ।
पुरुष २ : रे जा धरि हम छी, के छुतौ तोरा । देख लेबै हम । खाली आइ कनीक गोधिआँ नै रहै ।

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश ।)

पुरुष ३ : (पुरुष २ सँ) परनाम मालिक !
पुरुष २ : की रे, आइ ककरा माथ हाथ देलही ।
पूरुष ३ : जी केकरा देबै । (कनेक बिलमि) आइ त मुनरा साफ बाँचि गेल मालिक ।
पुरुष २ : सेहे त । तोरे सबके चलती भ' गेलौ ।
पुरुष ३ : जी ?

पुरुष २ : जेना ओ पबितराके पुतहुके हाथ-पात कैलकै हम एतेक सस्ता नै पट' दितिऐ ।

(पुरुष ३ मात्र माथ डोलबैत अछि ।)

कह त चौरी-चांचर भरि गामके बौह-बेटी खेत-पथार जाइ है । एना हात-पात करतै ।

पुरुष ३ : तैयो त....।

पुरुष २ : सेहे त कहलियौ, बँचि गेलौ । गोधिआँ नै आयल रहे तैस । (ताबत् चाह हाथमें दैछ बौधु ।)

पुरुष ३ : (चारुभर चकुआइत) मालिक आब गोधिआँ अएबो ने करत ।

पुरुष २ : (हाथ रोकि) की माने ?

पुरुष ३ : मुनराके माथ पर ककर हाथ छै बूझल हय ?

पुरुष २ : (किछु ने बुझल सन) रे तों एना हर फेर कैला करै छे । साफ बता ने ।

पुरुष ३ : मालिक, रामअसीस बाबू सेहो अगिला चुनावमे खडा होत । से आब ओ आदमी बनब' लागल है ।

(पुरुष २, एक्के बेर चिहुँकि क' ठाढ भ' जाइछ । पुरुष ३ दिश एना क' देख लगैछ जेना ओकरा काँचे चिबा जाएत । पुरुष ३ सकपका जाइत अछि । फेर पुरुष २, आगाँ बढि रहल लगैछ ।)

बौधु : (हाथ जोडैत) मालिक, थीर भ'क' बैसल जाओ ने । सब ठीक भ' जएतै ।

पुरुष ३ : बैसियौ मालिक । जे साँच बात रहे से कहि देली ।

(पुरुष ३ जाए लगैत अछि ।)

पुरुष २ : (पुनः खुरसी पर बैसैत) रे हरिश्चन्दर ! रे ई की बजले ?

पुरुष ३ : आँखि बइठे मालिक । रामअसीस मालिक आदमी बनब'मे लागि गेल है । गाममे एक कान दू कान भ' गेल है ।

पुरुष २ : हम छिऐ त ओहे है किने ।

पुरुष ३ : ई त' अहाँ बुझै छिऐ ने । ओहो बुझे तब ने ।

पुरुष २ : उ नै बुझ्झतै त हमरा लेल राति दिन एक क' दितै ?

पुरुष ३ : भ' सकैअ बुझने होय जे हमरे बले जितैअ गोधिआँ त हमहीं कैला नै.....।

पुरुष २ : नै तों फोर' चाहै छे । ई नै भ' सकैछै ।

पुरुष ३ : हम त देखलिऐ राति खतवे टोलमे घुमैत । हुनका दरबज्जा पर लोकके अबरजाही सेहो बैढ गेल है ।

(पुरुष ३ गुम्म अछि । किछु सोचबाक मुद्रामे देखल जाइछ । ताबत् रुपचन्दक प्रवेश ।)

हे देखियौ, रुपचन्द सेहो आबि गेल । की रे रामअसीस मालिकके कोनो खबरि ?

रुपचन्द : मालिक ! हम त अखनु अपना आँखिसँ गघुलीमें मुनराके रामअसीस मालिकसँ कनफुसकी करैत देखलिऐ अ' ।

(पुरुष २ उद्विग्नतासँ छटपटाइछ, टहलब बन्द नै होइछ । ताबत् बौधु एकटा चाह ल' क फेर पुरुष २ के दैत छैक ।)

बौधु : (चाह बढबैत) मालिक, शांत भेल जाओ । लेल जाओ चाह ।

(पुरुष २ गुम्हरिक' बौधु पर तकैत अछि । आ छोटे चाह ल'क' घूरि जाइछ । पुरुष २ तेजीसँ प्रस्थान क' जाइछ ।)

पुरुष ३ : रुपचन्द । आइ बौधुके चाहसँ जी नै भरतै । चल भठ्ठी दिश ।

(दुनूके हँसैत प्रस्थान । बौधु माथपर हाथ ध' ठामहि टूलपर बैसि जाइछ ।)

## अन्हार

## दृश्य-६

(बौधुक दोकान । ७-८ बजे भिनसरक समय । बौधु चाहक दोकानके सरिअवैत । तावत् पुरुष ४ क प्रवेश ।)

पुरुष ४ : बौधु, आब अइ गाममे रहब मुश्किल भ' गेलौ ।

(बौधु हाथ रोकि जिज्ञासासँ' देख लगैछ ।)

जे कहियो नई सुनने रहिऐ से बात सब होब' लागल है ।

बौधु : की भेलै काका ।

पुरुष ४ : की होतै रे । अधकारी टोल आ चौधरी टोलमे कराम कराम भ' रहल है ।

(बौधुके मुँह खुजले के खुजले रहि जाइछ ।)

अनर्थ भ' जएतै बौधु ।

बोधु : रामअसीस मालिक आ अयोधी मालिक कत' है ?

पुरुष ४ : सेहे त' लोकके अचरज लगै है । अपन-अपन टोलके सम्हार' बला सब कत' है ?

बौधु : माने दुन् गोधिआं नै है ?
पुरुष ४ : रे रहौ कि नै रहौ। बिना दुन्के जानकारीके ई होतै ?
बौधु : आखिर आगि लगाइए देलकै चण्डलवा सभ।
पुरुष ४ : के लगा देलकै रे !
बौधु : (जेना सम्हरि गेल हो) नै आखिर कोइ त' दुन् भर लगौने-बझौने होतै किने।
पुरुष ४ : से हे। अन्हेर भ' गेलै आब। गाममे बेटी-पुतहु सुरक्षित नै रहत। खेत पथार लुटि लेतै दिन देखारे। दुन्के फोरनिहार सेहे चाहैत होत।

(बौधुसँ) ला, एकटा चाह।

(बौधु चाह छान' लगैछ। मुदा ओकर ध्यान कतौ दूर छै। चाह टेबुल पर छिडिआए लगैछ। ई देखि ओकर वेटा छोटे टोकि दैछ।)

छोटे : बाउ हौ ! चाह हेराइ छो।
बौधु : (चेहाक') अएँ ! (फेर सम्हरि क' चाह छानि पुरुष ४ के दैछ।) आब हमरा सब सनके के देखतै ?

(आ लद द' स्टूल पर बैसि जाइछ। गुम्म सुम्म। जाधरि पुरुष ४ चाह पीबैछ ओ एक शब्द नै बजैछ। अनुहारक व्यथासँ ओकर पिड़ाके बूझल जा सकैछ। ओकर बेटा छोटे, बापक रुप देखि सकदम्म भेल एक कात बैसल अछि। पुरुष ४ चाह पीबि गिलास नीचाँ ध' दैछ। आ' जेबीसँ पाई निकालि बौधुके दैछ। बौधु यंत्रमानव जकाँ पाइ ल' टिनहा बक्सामे ध' पुनः यंत्रस्थ भ' जाइछ।

बौधु : (कनेक कालक बाद) रे छोटे।
छोटे : जी !
बौधु : समट सभ। आइ दोकान बन्द रहतै।

(छोटे किछु नहि बुझि कनेक काल जेना अकबक ठाढ रहैछ।)

सुनलही नै, दोकान बन्द रहतै। धर गिलास सभ।

(आ अपनो स्टोबके बन्द क' दैछ। ताबत् महिला हाथमें डेकची भरि दूध लेने अबैछै। दोकानक अवस्था देखि ओ ठामहि डेकची ल' ठाढ भ' जाइछ।)

महिला : (कनेक काल स्थिति गमि) रे छोटे, की भेलौ रे ? (छोटे किछु ने बजैछ।) मर, एना कैला कैने है। सब चिज बुझाएल है।
बौधु : (गंभीर होइत) आइ दोकान ने खुजतै दूध लेने जाओ घरे।
महिला : (दूधके कठघरामे रखैत) से कथीला ! की भेलैअ ? कोई कुछो कहलकैअ की ?
बौधु : नै, हमरा कोइ कुछो नै कहलक। ओहिना, आइ नै काम कर' के मन होइअ'।
महिला : मर, धीयापुता की खएतै ?
बौधु : एकदिन ने कमएने धीयापुता मरि नै जएतै।
महिला : दुत् मरो दुश्मनके धीयापुता। भोरे भोर एना कैला बजै है ?
बौधु : देख रघुनाथपुरवाली। आब हमरा सबके रोजी रोटी एत्त' नै चलतौ।
महिला : अएँ, कैला ?
बौधु : सुनलही नै, चौधरी टोल आ' अधकारी टोलमे मारि बजर' बला है।
महिला : गे दाई गे दाई ! मुंहझौंसा आगि लगाइए देलक।
बौधु : से हे त मुख बात है रघुनाथपुरबाली। हम जनै छिऐ, लेकिन नै बाजि सकै छिऐ।

(महिला आश्चर्यसँ पति दिश तकैछ।)

हँ छोटेके माए, हम जनै छिऐ अइ आगि लगब' बलाके। पेटके खातिर चुप छी।

महिला : पेटसँ अइ बातके की मतलब ?
बौधु : मतलब है, खुब मतलब है। देखौ, अइअ' सब किसिमके लोक अबै है। रंग-बिरंगके बात बजै है। आ हम पेटके खातिर सब बातके घोटने रहै छी।

(महिला चुप अछि। गौरसँ सुनैत रहैत अछि।)

दोकान सार्वजनिक होइ है। कोनो बात बाजि दू त' कोइ नै आएत। कहत बात आउट करैअ'। इहे कहौ की की करु हम।

(बौधुके छटपटाहट देखि पत्नी सेहो विचलित भ' जाइछ।)

महिला : यदि एकरा किछु बजने दुन् टोलमे मारि पीट रोकल जा सकै है। त' आब चुप नइँ रहौक।
बौधु : माने, एकर बिचार है बाल-बच्चाके विलटा दू। पेट पर लात मारि दू।
महिला : जै गाछक जरिएमे घून लागल जाइत हो, तकर फलके आशा क'क' की ?
बौधु : माने ?

महिला : जे अजोधी मालिक पर सान रहै, तकरे पर ई सब वार है त आब पेट पर ओहुना लात लगबे करतै ।
(बौधु उठि क' टहल लगैछ ।)
हम त कहै छिऐ, बात सल्ट' बला है त नइँ चुकौ ।
बौधु : (विश्वासपूर्वक) ठीक छै । देखल जएतै ।

## अन्हार

## दृश्य ७

(बौधुक चाहक दोकान । दोकान पर महिला आ' छोटे । सभ चिज यथावत् । पुरुष ४ क प्रवेश ।)
पुरुष ४ : (बौधुके हल्ला करैत) बौधु, रे बौधु !
(महिला छोटेके इशारा करैछ ।)
छोटे : नै है बाउ !
पुरुष ४ : (लग जा) कत्त गेलौ ?
छोटे : बड़का मालिक ओत्त' !
पुरुष ४ : बापरे, ई छौंडा आगिमें पाक' कैला गेलैअ' । कनिआँ, नै रोकलहो ?
महिला : ई नै जइते त आरो अन्हेर भ' जइतै कका ।
पुरुष ४ : (आश्चर्यसँ) की बात रहै से ?
महिला : दुनू मालिकके बीचमे आगि लगब' बलाके नाम कह' गेलैअ' ।
पुरुष ४ : त सब छार-भार एकरे पर पड़तै ।
महिला : गामके इज्जत आ सुख-शान्तिसँ उपर हमरा सबके सुख नै है कका । गामे नइँ रहत त हमसब कत्त रहब !
(हिचुक' लगैछ ।)
पुरुष ४ : (आँखि भरि जाइछ) तों किए कनै छह । जै गाममे बौधुसन बेटा आ तोरा सन पुतहु रहतै, गामके किछो नै होतै । आब हमरो विश्वास भ' गेल ।
(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश । ठोढ पर कुटिल मुस्कान । ओकरा देखि महिला मुँह बिजुका लैछ ।)
पुरुष ३ : (अपनेसँ एकटा बेंचके ससारि बैसैत) की हो गेनाई ! टोलमे आगि लागल छौ आ तौं एम्हर मजा लैछ ।
(पुरुष ४ दाँत पीसि क' रहि जाइत अछि ।)
जैबा, छोडएबहो झगडा । प्रधानके हनुमान छहो तो सब की ने !
पुरुष ४ : रे रावणो बेसी दिन नै बाँचि सकल ।
पुरुष ३ : तकरा लेल रामोके जनम' पड़तै किने हो (ठठाक' हँसि दैछ) । बेचारा गोधिआं (छोटेसँ) ला रे छोटे, एक कडक चाह ।
पुरुष ४ : हँसिले, कहिओ तोरो सबपर जमाना हँसतौ ।
पुरुष ३ : ई जमाना हँस' लाइक रहतै तखन ने हँसत हो । (फेर ठहाका)
(ताबत् हाहायल-फुहायल रुपचन्दक प्रवेश ।)
रुपचन्द : भाइ, तोरे तकैत अबै छियौ । गजब भ' गेलौ ।
पुरुष ३ : की भेलौ ?
रुपचन्द : बात उनटि गेलै । दुन गोधिआँके हमरा सबके चालि बुझ' में आबि गेलै । झगडा शान्त भ' गेल है । आ' लोक सभ तोरा-हमरा तकैत एम्हरे आबि रहल हौ ।
(पुरुष ३ नर्भस भ' जाइछ । उठिक' ठाढ भ' जाइछ । अनुहार पर डर पसरल देखल जा सकैछ । कनेक काल अकमकाइत अछि, फेर एक दिश भाग' लगैछ ।)
महिला : चाह नै पीथिन ?
(दुनू भागि जाइछ । पुरुष ४ क हँसी ।)
अन्हारक संग एकटा अन्तराल
पृष्ठभूमिमे मार सारके, वा जाइ हौ, पकड ! खल्ला घींचले !
अगिलेसबा सभ ! बाजत दिन भरि झूठ, नाम हरिशचन्दर !
(पुनः मंच पर प्रकाश ! दृश्य पूर्ववत् । पुरुष ४ बैसल ।
चाहक चुस्की लैत । महिला, छोटेक अनुहार पर प्रसन्नता । ताबत्
एक कातसँ रामअसीस आ' बौधु अबैछ । बौधु पुरुष ३ के पकडने
रहैछ । दोसर दिशसँ अजोधी आ गोराइत अबैछ । गोराइत
रुपचन्दके पकडने रहैछ । दुनू गोटे मंचक बीचमे आबि दोकानक
बगलमे ठोंठ पकडि दुनू के धकेलि दैछ ।)

बौधु : बोल सार ! ई खेल के कयने रहे !
पुरुष ३ : हम, हमहीं गाम भार' चाहै छली । दुनूके फोड़ चाहै छली । हमरा माफी देल जाओ प्रधानजी ! गलती भ' गेल ।
गोराइत : आ' तोरा की होतौ रुपचन !
रुपचन्द : दुहाइ माइ–बाप ! बचाओल जाए ।
पुरुष २ : गोधिआं, आइ दण्डक निर्धारण अहाँ करबै । कहु की दण्ड देल जाए एहि दुनू चण्डालके ?
पुरुष १ : नै गोधिआँ, वास्तवमे दण्ड देबाक अधिकारी आइ बौधु हय । जँ बौधु आइ अपन मुँह नै खोलैत त गाममे अन्हेर भ' जइतै ।
पुरुष २ : बौधु !
बौधु : मालिक ।
पुरुष २ : बाज ! एहि सार सबके की कएल जाए ?
बौधु : छोट मुँह नमहर बात । हम त अनकर ऐंठ धो क' गुजर कर' बला लोक छी मालिक । दण्ड देवके आँट कत्तसँ करबै ।
पुरुष १ : लेकिन प्रधान कहै छौ । बल्कि सौंसे गाम तोरा संग छौ बौधु । बाज निडर भ' क' ।

(बौधु गुम्म अछि । जेना किछु सोचि रहल हो । कनेक कालक बाद कल जोड़ि पुरुष २ क आगाँ ठाढ भ' जाइछ ।)

बौधु : मालिक, जदि हमरा सन लोकके अपने सब एतेक इज्जत देलियैअ' त हमर दूटा बात मानि लेल जाओ ।
पुरुष २ : बाज ने , की कह' चाहै छे ?
बौधु : सरकार ! एहि दुनू पापी के माफ क' दिऔ !
पुरुष १ आ पुरुष २ : (दुनू एक्केबेर) माफ !
बौधु : हँ, मालिक । आ दुनूके समितिके काममे सेहो लगा दियौ । पेट भरल रहतै त मनो स्वछ रहतै । इहो एकरा सबके दण्ड है ।

(पुरुष ३ आ रुपचन्द आश्चर्यसँ भरल आँखिए बौधुके देखैत अछि ।)

पुरुष २ : (आँखि डबडबा) बौधु, हमरा सबके ई गर्व नै होबाक चाही जे तोहुँ अही गामक सन्तान छे !
बौधु : (भरल आँखिए) मालिक ई त अपने बडका लोकक बडप्पन है । हम त चरणके धूल छिऐ सरकार ।

(सभक आँखिमें प्रेम आ प्रसन्नताक नोर भरल छैक ।)

अन्हार / पटाक्षेप

šÜÜ

# सूली पर इजोत

**मंचपर अन्हार । प्रकाशक घेरा मंचपर प्रवेश करैत एकटा अधवयसू पर पड़ैत अछि । पएजामा, कुर्ता, काँखतर झोडा लटकल । मुदा चिंतित सन । पृष्टभूमिमे संगीतक ध्वनि मंचक बीचमे अबैत । ओ अधबयसू ठमकि जाइत अछि । किछु गुनधुन करैत लगैत अछि । मुदा एना जे किछु सोचि रहल हो आ" तकरा माथ झटकि खारिज कए दैत हो । कनेक काल ई कम चलैत रहैत अछि ।**

**अधवयसू मंचक आगू भाग दिश ससरि जाइछ । हाओभाव एना जे ओ किछु बाजय चाहैत हो, लोककें किछु सुनबय चाहैत हो ।**

**अधवयसू : (दर्शक दीर्घा दिस देखि) बड़ बौअएलहुँ रने-बने । कहाँ भेटल जीवन हमरा । कहाँदन जीवन कुरुप होइछ, पाखण्ड होइछ, धोखा होइछ । ठकैत अछि लोक, जँ सएह तँ किए मारिकाटि, युद्ध-सन्धि, छीना झपटी ! कहु किए ई छीना झपटी ? जीबाक लेल ने ! (स्वर तेज भए जाइछ)**

**पृष्टभूमिमे एकटा आवाज -**

अहाँ बाजी, भूकी अथवा चिचिआ कए संसार माथ पर उठाली कोनो फर्क नै पडतै, अहाँ इन्कलाब लाबि नहि सकैछी ।
अधवयसू : (चौंकि) के अछि ? ककर हिम्मत भेलैए जे हमर पुरुषार्थकेँ ललकारैत अछि ।
ओएह अवाज -
गति वैह हैत जे भेल रहै कहियो
जीविते सूलीपर चढा देल गेल कोनो ईशाकेँ !
मनुक्खकेँ मनुक्खेटा भ" क९ रहबाक हेतु
कहब, अपराध भ" गेल अछि ।
तेँ हम विश्वस्त छी -
अहाँ कोनो तरहक बदलाओ लाबि नहि सकैछी ?
अधवयसू : (विचलित होइत) प्रश्न उठैछ -
तखन जड़तामे जीवाक अर्थ कोन ?
स्वर पूर्ववत् -
जिनगीक तेहने शब्दक अर्थ देबाक परिणति थिक
इन्कलाब - एकटा बदलाओ, एकटा नव बाटक अनुसन्धान ।
मुदा सामाजिक जड़ताकेँ तोड़बाक हेतु बढ़ैत
किछु जोड़ा पैरक धमधमाहटि
कानमे तूर ठूसि मस्त निम्नमे सूतल
किंवा आराम करैत एहि युगकेँ
कोनो असरि नहि पहुँचा सकैछै ।
अधवयसू : हम मानैत छी -
कोनो नवीनताक पहिल किरिनकेँ
जाड़ मासक भोर जकाँ
छातीसँ सटौने गर्माहटक अनुभूतिक
अपन फूट आनन्द होइछ,
आ तएँ मुट्ठीभरि किरिनक धाहीक बलपर
गर्म दिनक कल्पना सोनितमे
प्रवाह अनैत छैक
आ इन्कलाबक नारा कोनो नव क्रान्तिकेँ
सूत्र-पातक हेतु पृष्टभूमि बनि कए ठाढ भए जाइछ ।
पृष्टभूमि स्वर -
बरू इएह सूत्रपात करबाक सूत्र
अहाँक चिचिऔनीकेँ अर्थ दैत अछि
अहाँक मनुष्यताक रक्षा करैत अछि ।
नहि तँ, कनेक सोचिऔ ?
हरि सकबै गाममे जुआन बेटीक पीड़ा भोगैत
कोनो बापक दर्द ?
घरखर्चीक जोगाड़मे घरवालीक सौदा करैत पतिक मजबूरी ?
सत्य तँ ई थिक बन्धु !
बेनग्न समाजक किरदानी
मान्यता प्राप्त कए चुकल अछि
बालात्कार, हत्या किंवा चोरी डकैती
संस्थागत भए गेल अछि ।
तखन अहाँ ककरा लेल चिचिआएब ?
जाति, धर्म, भाषा, भेषक नामपर
खण्ड, खण्ड भए अपन सतीत्वक सौदा करैत
कोनो नगर कन्याक हेतु, से
ककरा पक्षमे अवाज उठएबाक अछि ?

भ्रष्टाचार, घूस, अत्याचार किंवा
मानव अधिकारक खुलेआम होइत उल्लंघन हेतु ?
वेरोजगारी, सोर्स अथवा घर बैसल
दरमाहा उठएबामे चसकल हाकिम सभक हेतु ?
ककरा हेतु ?
की अहाँकें लगैए-सूली चढि मसीहा बनि जाए ।
नहि बन्धु नहि !
अहाँकें सूलीपर चढ़ा आत्महत्या प्रमाणित कए देल जाएत !

अधवयसू : तखन ?

पृष्टभूमिक स्वर -
मुट्ठी भरि किरिनक बलपर
विराट अन्हारसँ लडबाक हेतु
अनुगुंजित अहँक इन्कलाबक नारा
अन्हारमे भेतिआ कए दम तोडि देत !
आ" ओ मुट्ठीभरि किरिन बेताल जकाँ
सूली पर जा टंगा जाएत ।
आइ जरूरी छै ओहन इन्कलाबक
जे सूली पर टांगल मुट्ठीभरि इजोतकें उतारि
सगरो संसारमे छिड़िआ दैक,
खूजि जाइक लोकक आँखि
देखि सकैक अन्हारमे ताण्डव नाच करैत अपन छायाकें
बूझि सकैक जिनगीक अर्थ
छुटिआ सकै,-मनुष्यता आ" नृशंसताक भेद ।

अधवयसू : हम लाएब जिनगीकें । हम जरूर लाएब !

पृष्टभूमिक स्वर -
तें एखन मात्र आँखि चाही
आ" चाही हिम्मत आ" विश्वास
लोकमे जिनगी बाँटि सकबाक ऊहि
आ" तकरा लेल उतारय पड़त
सूली पर टांगल इजोतकें ।

पृष्टभूमिमे "उतार पडत सूली पर टांगल इजोतकें" बेर-बेर प्रतिध्वनि होइछ ।
संगीतक झंकार बढ़ैत चल जाइछ आ" एकाएक बन्द भए जाइछ । संगीत बन्न होइते मंचपर इजोत पसरि जाइछ ।

अधवयसू : हँ, हम लाएब ग" इजोतकें । जे जीवन एतेक
सुन्दर आ" आकर्षक हो तकरा पएबाले किछु
कएल जा सकैछ । हम लाएब, जरूर लाएब !
(अधवयसू जखन चलए लगैछ । मंचपर फेरसँ
अन्हार होबय लगैत छैक । संगीत फेर सँ
शुरू होइछ, मुदा डेराओन । अधवयसूक ।
डेग ठमकि जाइछ । प्रकाशक गोल घेरामे
ओकर चेहरा पर वेचेनी स्पष्ट देखि पड़ैछ ।

अधवयसू : (आश्चर्यसँ) अएं, आब की भेल ?

एकटा प्रकाशक घेरा दोसर कोनमे पड़ैत छैक । एकटा मुखौटाधारी ठाढ़ अछि । पैघ-पैघ आँखि, लपलपाइत जीह । विभत्स पहिरन । अधवयसू एकटक ओमहर भय आ" जिज्ञाशासँ देखैत अछि । हिम्मत कए ओकरा पूछैत छैक - रे, तों के छें ?

मुखौटाक मुद्रा आर भयानक भए जाइछ ।

"बाज ने, के छें तों ? हमरा जल्दी अछि आ" तों बाट छेकि ठाढ़ भ" गेलें । की छौ तोरा मन मे ?

मुखौटाबाला बजैत अछि - हम जीवन छी ।
अधवयसू : कत्तक जीवन, घर कत्त छौ आ एत्त राकस जकाँ आगाँमे ठाढ़ किए छें ?
मुखौटावला : कत्तक जीवन, हम सभक जीवन छी । जीबैत लोकक जिनगी !
अधवयसू : (एक बेर रूप रंग निहारैत) माने.....।
मुखौटावला : (बातके लोकैत) हँ, हमही छी तों, तों सभ । सभक आत्मामे वास कएनिहार जीवन छी हम । (अधवयसू गुम्म भए जाइछ । ओकर मुख मुद्रा एना भए रहल छै जेना ओकरा मुखौटाक बात पर विश्वास नहि भए रहल हो ।)
हमरा बूझल अछि-तों गुनधुन कए रहल छें । हम जे कहैत छी ओ सांच थिक अथवा मिथ्या । रे बूड़िबक हम यथार्थ छी, सत्य छी-इएह रूप छै जीवनक ।
अधवयसू : नहि, ई नहि भ" सकैछ । एहन विद्रूप रूप
जीवनक नहि भ" सकैछ ।
मुखौटाबला : तँ भाए, खोजैत रह-सुहनगर आ" ललितगर
जीवन । कहिओ ने भेटतौ ।
अधवयसू : हमरा नहि ठक । तो कोनो मायावी लगैत छे ।
हमर उद्देश्कें छेकबाक हेतु भ्रम सृजन कए
रहल छें । हमर यात्राकें भंग करए चाहैत छें ।
मुखौटाबाला : (जोरसँ ठहक्का मारैत) जो, तों सभदिन
बुड़िबके रहि गेलें । तएँ ने आइधरि कतौ तोरा
ठौर नहि भेटलौ । तों सहज, सुन्दर आ" आकर्षक
जीवनक खोजमे रहलें आ स्वयंकें बेर-बेर
मारेत रहलें । जो, फेरसँ मर ।
अधवयसू : जो, जो बुझलियौ जए बेर हम जिनगीक लग
पहुँचैत छी, एहिना भोतिअएबाक प्रयास कएल
जाइछ । हमरा मोनपर जे छाप पड़ल अछि, तों
हटा नहि सकै छें - किन्नहु नहि ।
अधबयसू दूनू हाथ कानपर राखि आँखि
मूनि चिचिआ उठैछ-किन्नहु नहि । ताबत
प्रकाशक गोल घेरा गायब भए जाइछ ।
आ" पूर्ण प्रकाश मंच पर छिड़िआ जाइछ ।
मंचपर मात्र अधवयसू अपनाकें पबैत अछि-
एसकर ।
अधवयसू : (दीर्घ साँस लैत) ओह, कोना क" भरमा देने
छल मखौटा । जीवन कतौ एतेक विद्रूप होइक ।
देह सीहरा देने छल चण्डलबा । जे देखल,
सरिपहुँ विकृत छल, विखण्डन छल, भ्रमजाल
छल । जीवन तँ जीबाक लालसा उत्पन्न करैछ ।
ओकरा ताकय तँ पड़त । से कत्त ताकल
जाए-कोम्हर अछि हमर जिनगी-हमर इजोत !
मंचपर एकटा ४०-४५ वर्षक स्वेतवस्त्रधारी
युवकक प्रवेश होइछ । हाथमे दीप लेने ।
पहिरन स्वेत धोती, स्वेत कुर्ता आ स्वेत चादर
अधवयसूकें कनेक विचित्र सन लगैत छै ओ व्यक्ति । पृष्टभूमिमे संगीतक
शांत रससँ पूर्ण ध्वनि आबि रहल छैक ।
अधवयसू : (आगाँ बढि) श्रीमान् अपने कत्तसँ आबि रहल छी ?
पुरुष -१ : हम मृत्यु भुवनसँ बाहरक लोक नहि छी ।
अधवयसू : (ओकर उत्तरसँ कनेक खौंझाइत) से तँ हमहुँ
देखिए रहल छी । मुदा कोनो ठेकान तँ हैत ने !
पुरुष - १ : किएने, खूब अछि । हम आत्मा छी ।

अधवयसू : (फेरसँ आश्चर्य चकित होइत) आत्मा ?
पुरुष -१ : हँ यौ, हम आत्मा छी ।
अधवयसू : तखन ई दीप बारि की ताकि रहल छी ?
पुरुष - १ : इजोत !
संगीतक एकटा झंकार । अधवयसू हतप्रभ
सन भए जाइछ । अवाक् मुहबौने ।
अहाँ, एना आश्चर्यमे किए पड़ि गेलहुँ, की
हमरा बात पर विश्वास नहि भेल अछि ?
अधवयसू : (समहरि) नहि, से बात नहि छैक । हम एहि
लेल सोचमे पडि गेलहुँ-अहूँ के इजोते चाही !
पुरुष - १ : हँ, यौ । देखू ने कत्त ने कत्त हेरा गेल अछि ।
हम तकरे खोजमे वर्षहुसँ भटकि रहल छी ।
(कनेक चुप्पी) आ अहाँ ?
अधवयसू : हमहु तकरे खोजमे छी ।
आब चौकबाक वारी पुरष-पहिलक छलैक
पुरुष - १ : अहूँ कें ?
अधवयसू : हँ, हम कैक वर्षसँ जीवन खोजि रहल छी ।
हमरा नहि बूझल छल जीवन आ" इजोत एक्के
वस्तु छैक । तें कनेक बेसी भटकय पडल अछि ।
पुरुष - १ : तँ की आब बूझि गेलिऐ जीवन कत्त अछि, से ?
अधवयसू : हँ, जखन ई बूझि गेलहुँ जे इजोते जीवन छै तँ
इहो बात आब फरिछा गेल अछि ।
पुरुष - १ : की फरिछा गेल ?
अधवयसू : (दर्शनिक मुद्रामे) इजोत सूली पर टंगायल छैक ।
पुरुष -१ : सूली पर
अधवयसू : हँ, सूली पर
पुरुष - १ : सूली कत्त छै ?
अधवयसू : सएह ने बूझल अछि ।
पुरुष - १ : तखन, एतेक बुझियो क" बेकार भ" गेल ने !
अधवयसू : नहि बेकार किए हैत । जा धरि इजोत नहि, ता
धरि धुकधुकी नहि । ओकरा खोजय तँ पडतै ।
पुरुष - १ : कत्त खोजब ?
अधवयसू : चाहे जत्त खोजय पडैक । हँ, बरू ताबत स्थिर
सँ सोची थाकिओ गेल छी । आऊ अइ चबूतरा
पर कनेक बैसल जाए ।
दुनू गोटे सहटि गाछतरक चबूतरापर बैसैत अछि ।
अधवयसू : भाए, जीवन, इजोत आ" आत्माक कोन सम्बन्ध ?
पुरुष - १ : साफ सम्बन्ध छैक । इजोते जीवन छैक, आत्माक
धुकधुकी छैक । हमर भटकबाक मुक्तिए ताही
जीवनमे अछि । हमरा नव जीवन तखने भेटत ।
अधवयसू : तखन ई दीपकक कोन प्रयोजन ?
पुरुष - १ : जत सभतरि अन्हारक साम्राज्य हो, अपनो बाट
देखाइत नहि हो, ओत्त कोनो वस्तुकें तकबाक
हेतु प्रकाश तँ चाही, से ई दीप हमरा बाट
देखबैत अछि-लक्ष्य धरि पहुँचबाक हेतु ।
अधवयसू : मुदा हम तँ बड सहज बुझने छलिऐ जीवनकें पएबाक बाट ।
पुरुष - १ : तें ने अहाँ वर्षहुसँ भोतिआ रहल छी, ने स्वयं
कतौ ठौर ध" सकलौं आ" ने अपन सखा-सन्तानकें ।

अधवयसू : (आश्चर्यसँ) ई बात अहाँकें कोना बूझल अछि ?
पुरुष - १ : मनुक्खक उदास चेहरा देखि हम ओकर व्यथा - कथा बूझि लैत छी ।
अधवयसू : तखन तँ आरो बात.....।
पुरुष - १ : हँ, प्रत्येक सुखान्त क्षण आँगामे अबितो अहाँ लेल अबूह बनैत गेल अछि । खण्ड-खण्डमे प्राप्त अहाँक सुख-जीवनक यथार्थमे दम तोडि रहल अछि आ" तें अहाँ भटकि रहल छी इजोतक लेल ।

अधवयसूक आँखि डबडबा जाइत छैक । ओ गमछासँ आँखिमे भरि आएल नोरक बुन्नकें पोछैत अछि ।

'दुर मरदे ! तों तँ कमजोर मनुक्ख जकाँ हारि गेल लगैत छह जखन इजोतक पता तोरा बूझल छह तँ अवश्य खोजि निकालबह ने !

अधवयसू कृतज्ञता भरल आँखिसँ पुरुष-१ दिश तकैत अछि । संगीत कारुणिक भए गेल रहैछ । ओ पुरुष -१क हाथ पकडि़ उठैत अछि । पीठ पर हाथ धए आगाँ बढबाक उपक्रम करैत अछि कि पुरुष-२ क प्रवेश होइत अछि । देखिते ई दूनू ठमकि जाइछ पुरुष - २ ठेंठ धोती, गोलगला, माथमे गमछा बन्हने कान्ह पर हर-पालो, हाथमे बढका पैना । धरफराइत ओही बाटे जाइत । ओकरो नजरि दूदू गोटे पर पडि जाइत छैक । ओहो ठमकि जाइछ ।

अधवयसू : (टोकैत) भाए साहेब ! कनेक सूनितहुँ तँ.....।
पुरुष - २ : (बाट कटैत) बाट छोडू । हम जल्दीमे छी ।
अधवयसू : एतेक जल्दी जएबाक प्रयोजन की ? अपने के छी ?
पुरुष - २ : (अगुता कए) हम कृषक छी । आ" अन्हारसँ औनायल, इजोतक हेतु भागल जा रहल छी ।

दूनू गाटे अवाक् रहि जाइछ । एक्के बेर दूनूक मुहसँ बहराइत छैक-इजोतक हेतु !

पुरुष - २ : हँ यौ ! मुदा अहाँ सभ एना चौकलहुँ किए ?
पुरुष - १ : तकर साफ कारण अछि - हमरहु सभ इजोतेक खोजमे छी ।
पुरुष - २ : हमरा कोनो आश्चर्य नहि भेल । जखन सौंसे विश्वमे अन्हारक साम्राज्य हो, मुखौटाक ताण्डव नृत्य होइत हो, इजोत खोजनिहारक कमी नहि अछि । मुदा अहाँ दूनू बुत्ते इजोत ताकल नहि दैत ।

दूनू कनेक उदास भए जाइछ ।

एक गोटे छी - सुन्दर आ आकर्षक जीवनक अनुसन्धाता । तकर खोजमे लागल छी । दोसर डिबिआ ल" इजोत तकै छी । दूनू दिन कटैत, वर्ष बितबैत अपनाकें मारैत । बूझल अछि - इजोत कत्त छैक ?

दूनूमे उत्साहक संचार होइछ

एक्के संग : बूझल अछि !
पुरुष - २ : (आश्चर्य) बूझल अछि, अहाँ सभकें ?
अधवयसू : हँ, हमरा बूझल अछि ।
पुरुष - २ : कत्त अछि ?

दूनू एक दोसराक मुह ताकय लगैछ । भाव

एहन सन जे कही कि नहि ।
कहू-कहू निश्चिन्त रहू, हम अहाँ सभ पहिने
दौडि कए ओत्त नहि पहुँचब ।

अधवयसू : सूली पर टाँगल अछि इजोत । (जोर सँ ठहाका मारि हँसैत अछि) तँ की

पुरुष - २ : अहाँक बाँहिमे ताकत नहि अछि जे ओत्तसँ
उतारि लए जाएब ।

दूनू : (आश्चर्य सँ) हमर कथन पर अहाँक कोनो
आश्चर्य नहि । की हम गलत कहलहुँ अछि ?

पुरुष - २ : नहि, अहाँ सत्य कहैत छी ।

दूनू : एकर माने अहाँ जनैत छी जे इजोत कत्त छैक ?

पुरुष - २ : नीक जकाँ, अपन सभ समानक संग ओतए
हम लाब" चललहुँ अछि । अहाँ सभ जकाँ हावामे खोजय नहि ।

अधवयसू : ओह !

पुरुष - १ : हँ, एकटा बात आर बूझि लिअ ! हमरा इहो
बूझल अछि, ओ सूली कत्त छैक ।

दूनू : (फेर आश्चर्य मिश्रित प्रशन्नतासँ कुदैत) कत्त
छै, सेहो बूझल अछि ?

पुरुष - २ : हँ, यौ । तें ने भागल जा रहल छी । कतौ फेर
ने कोनो चण्डलबा ओत्तहु स ओकरा हरि लैक ।

पुरुष - १ : के अछि एहन ?

पुरुष - २ : अन्हारक राजा करिया मसान । हरने अछि
इजोतकेँ । सूलीपर एखने बन्हने मात्र छैक ।
ओकर योजना खतरनाक छै ।

अधवयसू : की छै ओकर योजना ?

पुरुष - २ : सूली पर ठोकल इजोतके हाथ पैरमे काँटी
ठोकि टाँकि देतैक आ नीचा उतारबाक सभ
संभावना समाप्त कए देतै ।

अधवयसू : धरती पर जे छै, से ?

पुरुष - २ : ओत्त ओकरे नामक मुखौटा सभ अछि । विद्रूप विभत्स !

अधवयसू : (आश्चर्यसँ) मुखौटा सभ ! अर्थात् इएह जीवन छै एतुक्का !
(ओकरा आगाँ पहिलुका मुखौटाबाला दृश्य
नाचि उठैछ । प्रकाशकेँ गुम्म कए, पुनः
ताहि दृशयकेँ देखाओल जा सकैछ । फलैश बैक जकाँ)

पुरुष - २ : ओ सभ भ्रम थिक । असली तँ वर्षहु सँ सूली
पर टंगाएल अछि । हम ओकरा उतारय चललहुँ अछि ।

पुरुष - १ : ओकरा उतारबै कोनो ?

पुरुष - २ : ई हर-पालो देखैत छिऐ । आ" ई पैना ?

पुरुष - १ : हँ, देखै छिऐ । मुदा एकरा सभकेँ इजोतक
उतारनाइसँ कोन मतलब ?

पुरुष - २ : ई सभ मेहनत, बुद्धि आ लगनशीलताक सम्पति
अछि । एकरे प्रयोग सँ हम उतारबै इजोतकेँ ।

अधवयसू : नहि बुझलिऐ किछु ।

पुरुष - २ : बुझबो कोना करबै । जिनगी प्राप्त करबाक
लेल ओकर विद्रपतासँ पहिने लडय पडत ।
सएह जोगाड़ अहाँ सभकेँ संग नहि अछि ।

अधवयसू : हम आओर नर्भस भेल जा रहल छी ।

पुरुष - २ : हँ सुनू । हर आ पालो सिढ़ीक दुनू ठाठ हैत ।
बडका पैना पौदान । आ पालो मे जे बान्हल

**अछि ताहि जौर सँ पौदान बान्हल जाएत । ऐना**
**क" चहरि पहुँचि जाएब इजोत धरि ।**
**दूनू मुग्ध भए पुरुष - २ क इलम सुनैत अछि ।**

**दूनू** : **(एकके संग) की हमहूँ सभ चलि सकैत छी ?**

**पुरुष - २** : **लगैए, अहूँ सभ आब इजोत धरि पहुँचि सकबाक हिम्मति जुटा लेने छी । चलू ।**

**तीनू आगा बढ़ैत अछि आ एक दू डेग चललापर फ्रिज भए जाइछ ।**

***क्रमशः अन्हार मंचपर पसरि जाइत ।***

ॐ

# हम घूरि अएलहुं मीत

## दृश्य १

**पक्की मकान । आंगनमे दूटा कूर्सि राखल । वगैंचामे गेना फूल फूलायल । बाहरस पुरुष-२क प्रवेश ।**

पुरुष - २ : काकी, काकी ?

**महिला घरस बाहर होइछ ।**

महिला :- चन्दर, आबि गेलही ! बौआ केना हौ ?

चन्दर :- जी, काकी । बड़ नीक जकां है वहिन । नेहमान खुब मानै छथिन्ह । एकोटा चीजमे हाथ नै लगब दै छथिन । सासु-ननद सेहो देखलिऐ आगा-पाछा करैत ।

महिला :- भगवान समांग देथुन । बौआ बड़ दुलारे-प्यारे पोसल छलै । डर होइछल-केना क ससुरामे बसतै ।

**तावत घरमे पुरुष - १ क आगमन ।**

पुरुष - १ :- की वातचीत होइछै काकी - भतिजामे ।

चन्दर :- प्रणाम काका !

पुरुष -१ :- नीके रह । कखनु अएले ?

चन्दर : जी एखने अइलीअ ।

**पुरुष कुर्सिके घीचिकऽ बैसि जाइछ**

महिला :- चन्दर बौआके गामस आयल ह । कहैअ बौआ नीके जकां है ।

पुरुष :- ठीके रहतै की । हं, डर त हमरो होइछल । ई रामेसर एना ने दुलार क क वीगाड़ि देने छलै जे सासु-ससुरलग नीक जकां बसतै कि नै हमरो डर लागल रहैअ ।

महिला :- एह, से कहांदन सभ केओ बौआके बड़े मानैत छै । (फेर चन्दरस) चन्दर, हं विदागरी दा की कहलखुन समधी ?

चन्दर :- नै मानैत छलखिन । कहैत छलखिन एहि बेर आम खूब फरल है । कयटोक छै । एत्त रहतै त मन भरि कऽ खएथिन ।

पुरुष :- से त छैहे । एहि माने मे समधी ठकि उपर छथि ।

महिला :- तखन ?

चन्दर :- हम बड़ कहलिऐ त हारि पाछि कऽ अगिला मंगलके दिन देलखीन अछि ।

महिला :- सुनलिऐ, बौआ मंगल दिन अओतै । अहां त पटना जाएव कहने रहिऐ । आब नै भेल । वेटीके छोडि क' केना जएबै ।

पुरुष :- ठीक छै, नै जएबै ।

महिला :- चन्दर, बौआ किछु कहबो कहलकौ ?

चन्दर :- हँ, काकी । आब बेरमे लगमे बजा कऽ बहिन जोर दऽ कऽ वाजल छली-भैया, मायके कहि देबै हम आएब त मीत बाउके लेल दालिबला बगिया बना क' लेने अएबै ।

पुरुष :- देखलिऐ, रधियाके माय । ई बेटी हमर है कि रामेसरके । जखन देखु मीतवाउ, मीतबाउ । सनेसो लै तै त मीतवाउ लेल । हम जेना कोइ नै छिऐ ।

**मुंह लटका लैछ ।**

महिला :- हे से नै कहू हमर बेटीके । अहांके हमरोस बेसी मानैअ । ओ त मीतजीके कोरामे गुंहमुत कऽ कऽ जुआन भेल छै । अपनोस बेसी माया पौलक ओ ।मीतजीके बगिया नीको लगै छे से बौआके बुझल छै । से.....।

**भावुक भऽ जाइछ महिला ।**

पुरुष :- ठीक छै, हम ओहिना कहल अछि । हमरा आ मीत मे अन्तरे की छै । हमरा कहियो लागल जे ओकर वाप-दादा कहियो पहाड़स तराईमे आबि बसल रहै आ ओ वास्तवमे नेपाली बाज बला पहाडी अछि ।

महिला :- दुत, मीतजी आब पहाडी केना रहल, ओत खांटी मधेशी अछि, अपन समांग जकां । मरन-हरन, शादी-विआह, नीक-वेजाय, भेल-गेलमे अपनो समांगस पहिने आंगन मे ठाढ रह' बला मीतजी एक्के घरक लोक भऽ गेल छथि ।

पुरुष :- (किछु मोन पड़ैत) लाउ त मोबाइल । मीतके कनेक ई सुखद सूचना कऽ दिऔ जे ओकर बेटी अगिला मंगलके अबै छैक ।

**पत्नि घरमे जा मोबाइल लबैअ । पुरुष - १ मोबाइलमे नम्वर लगा कानस लगबै छैक । ई कम दू-चारि बेर करैत अछि । भाव एहन जे फोन लागि नै रहल छैक ।**

उह, हद भऽ गेल । ई मोबाइल त कखनो काल जानके जंजाले भऽ गेल बुझाइए । कहियो नेटवर्क नै, सम्पर्क नै त कखनो की-की बजैत रहैअ ओइमे के मौगिया । (पत्निस) हे, लिअ धरु एकरा । हम पैदले जा कऽ मीतके घरेमे ई शुभ समाचार देने अबैछी ।

महिला :- हे, कनीक थम्हू। जखन जएबे करैछी त मीत अंगनामे खाली नै जाउ। हम अबैछी।

**पत्नि घरमे जाइत छथि। कनेक कालक बाद टिफिनमे किछु लेने अबैत छथि।**

ई, खीर छै। जोगा कऽ रखने छलिऐ। वहिनपाके दऽ देबै।

**पुरुष-१ एक बेर टिफिन पर आएक बेर पत्निक अनुहार पर नजरि फेंकैत अछि। ठोढ़मे मुस्कि आबि जाइत छैक। टिफिन लऽ जएबाक उपकम करैछ।**

**अन्हार**

## दृश्य - २

**मकान पूर्ववत्। अपरान्ह ४ वजेक समय। कुर्सि यथावत् राखल। मात्र स्थिति बदलल। पुरुष-१ थाकल-थाकल सन, माथ परक घाम पोछैत आंगनमे अबैत अछि। हाथमहक टिफिन चौकीपर धऽ कुर्सि पर धम्मस खसि पड़ैत अछि।**

**आंगनमे किछु आवाज सुनि पत्नि घरसं वहराइछ। अस्त-व्यस्त पतिके देखि चिन्तित भऽ जाइछ।**

पत्नि - की भेल राधाके बाबू! ई टिफिनो संगेमे अछि ?

पुरुष - १ गुम्म अछि। आंखि मुनने पड़ल अछि।

पत्नि : सुनै नै छिऐ, की भेलै ? अहां एना किए कैने छी ?

पुरुष - १ :- रधिआके माय, की कहू। हमर सभ किछु उजड़ि गेल।

पत्नि : हे, भगवान ! की भेलै ?

पुरुष - १ : मीत हमरा सभके छोड़ि जा रहल है।

पत्नि : कतौ जएबो अएबो ने करौ। हमरा त जीउए उड़ा देने छली अहां।

पुरुष - १ : नै रधियाके माय, ई जाए-आब बला जएनाई नै है। एतस सभ किछु बेचि बाचि कऽ आनठाम जा रहल है।

पत्नि - : (चौंकि) आन ठाम ! पुछलिऐ नै, कैला जाइ छथिन से।

पुरुष - १ : भेटैत तखन ने पुछितिऐ। हटौडाबाली आ मीत दुनू वजार मे गेल छल कोनो बेगरते। उत दुरे पर जानकी भेटल छल - उहे हुनकर मकान कीनि लेने छलै। सभ वात कहलक।

पत्नि - : घरो वेचि देलखिन !

पुरुष - १ : से कौड़ी के भाओ ! की भेलै मीतके जे हमरो नै कहलक आ चुपेचापे भागल जा रहल है।

पत्नि - : अहां किछु कहलिऐ नै !

पुरुष - १ : भेल जे नहिए कहिऐ किछु। कुछ वात होतै जे मीत विना खबरे जाए चाहै छथि। मुदा मन नै मानलक। जानकीके कहलिऐ जे कहि दिहो मीत आएल छलौ !

पत्नि : लगैअ। मीतजी अहांस भेंट कर अओताह ?!

पुरुष - १ : की कहु । पसे पलटि गेल छै । एक कौर अन्न विन पुछने मुंहमे नै धर' बला मीत एतेक भारी निर्णय केना असगरिए कऽ लेलखिन्ह ।

पत्नि : नै, जरुर किछु भारी बात छै । एक बेर देखबै फेर...।

पुरुष - १ : (कनेक रोषस) इहे अहां जनानी सभके वलधिंगरो रहैअ । जखन वुझैछीऐ किछु बात छै आ मीत हमरास भेंट नै चाहैअ त फेर जाएके कोन माने !

**पत्नि चुप्प भऽ जाइत छथि । आकासपर मेघ लाग लागल छै । कखनो-कखनो लौका सेहो चमकि जाइत अछि । कनेक कालक चुप्पी वाद ।**

मुदा नै जानि कैला । हमरा लगैअ मीत हमरास जरुर भेटत । ई, हमर मनके वहम सेहो भऽ सकैअ ।

**पत्नि किछु बजैत नै अछि । चौकी पर सहटि कऽ बैसि रहैत अछि । तखने हहाइत-फुहाइत रामेश्वरक प्रवेश । पुरुष - १ मीतके देखियो कऽ अनदेखा कऽ दैछ । रामेश्वर आगांमे ठाढ़ भऽ जाइछ । तैयो पुरुष - १ गुम्म अछि । पत्नि ईशारास कुर्सि पर बैसबाक आग्रह करैत अछि । रामेश्वर नै मे माथ डोला दैत छैक ।**

रामेश्वर - मीत, हमरा वुझल अछि अहां पीतायल छी । लेकिन हम की करु ! हम त धरती आ आकाशक विच त्रिशंकु जकां लटकल छी मीत । ने एम्हरे आवि सकैछी ने ओम्हरे जा सकैछी । अहांक पीत वाजिब अछि । लेकिन हमर मजवुरी....।

पुरुष-१ : (उठैत) हम मानलहुं अहांके मजबुरी छल । मुदा एतेक भारी निर्णय कऽ लेलहुं आ हमरा खबरि तक नै ।

रामेश्वर - ई ठीके कठिन निर्णय छल । आ ई अहांस सल्लाहस होब बला छलैहो नै । इएहटा एहन निर्णय रहय जकरा हमरा अपने कर' पड़ल ।

पुरुष-१ : की रहै मजबुरी जे मीतके मीतसं फराक राखि देलकै !

रामेश्वर : रहै मीत । एम्हर किछु दिनस जाहि तरहें पहाड़ी मूलके लोक सभके धम्की, चन्दा, अपहरण भऽ रहल छैक । जानस मारि देबाक चिट्ठी आ फोन आबि रहल छलैक ताहिमे हमर पत्नि आ वेटा अगुता गेल, डेरा गेलै । ओ सप्पत धऽ देलकै, मीत वाउके किछु नै कहक, चुपचाप चल एत्तस ।

पुरुष - १ : हम मानै छी - एखन तराईमे संगठनके नामपर पाइ असूली के अभियान चलल छै । गोली-गठाके भण्डार छै । वैसले मौजमस्ती भेटै छै - कमएबाक काजे कोन ! पहिने मुक्तिके नाम पर आब मस्तीके नाम पर...। आइ पहाड़ी कहि क । काल्हि मधेशी, माड़बाड़ी, साहु-महाजन एकर कोप भाजन बनत । जकर कोनो लक्ष्य नै ओकर कोन भरोस ।

रामेश्वर : जिनगी एत्त विता देने छी । वाप-दादा एत्तहि जनमलाह, एत्तहि मरलाह । हम सभ पहाडी भऽ गेली..। ई धरती पर उवजैत सोनसन धानक बालीमे हमरा सभक कोनो मेहनत नै...।

पुरुष-१ : जत्त मानवीय सम्वेदना कठोर भऽ जाइछ, मात्र उगाही एक मात्र उद्देश्य होइछ, ओत्त जाति वा व्यक्ति गौन भऽ जाइछ । आइ खतरा एही वातके छै । एहने खतराके अपना लेल उपयोग कऽ राजनीतिके मजवूत करैत अछि नेता सभ....। समाज आ देशक हबिगत एही दुआरे एहन छै । कत्त छै सम्विधान, कत्त छै शान्ति, कत्त गेलै आदमीके आदमी भऽकऽ जीवाक अधिकार !

रामेश्वर : मीत, अहीं कहु एहनमे हमकी करितहुं । उछन्नर कऽ देने छल । एक राति त हेटौडाबालीके उठा कऽ लऽ जएबाक धमकी तक दऽ देलकै । ओ डेरा गेलीह आ हमरा जाएके निर्णय कर' पड़ल ।

पुरुष - १ : ठीक छै, अहां मानसिक तनावमे जीलहुं । मुदा अहां त पहाडी नै छी मीत । ई त वुझाब पड़तै । अहीं हिम्मत हारि देबै त समाजमे बहुतो पुरान वासिन्दा सभ छथि, जे गहना छथिन समाजके, सभ उजड़ि जएतै । अहां नहि जाउ, रुकि जाउ ।

रामेश्वर : नै, मीत नै । हम अहांसं चोरा कऽ भेंट आयल छी । जखन जानकी कहलक जे मीत आएल छल, हम विचलित भऽ गेलहु । सवुरके सभ वान्ह टुटि गेल आ तगेदाके वहन्ना बना एत्त आबि गेल छी । हेटैडा वाली त सप्पत धऽ देने छल अहांस नहि भेटबाक लेल ।

पुरुष - १ : हम वुझै छी हुनक व्यथा ।

रामेश्वर : ओ वजैत छलीह, जखने ई मीतस भेटतै, नरभस भऽ जएतै, सभ गड़बड़ भऽ जएतै ।

पुरुष - १ : से त हम कहैछी, जाउ भौजीयो सभके लेने अबियौ हमरे ओत्त । एत्तहि रहु । देखै छीऐ, ककर मजाल छै अहांके छुबि लैए ।

रामेश्वर - नै मीत, हमरा जाए दीअ । हटौडाबाली वस स्टैण्ड चलि गेल अछि । छातीपर पाथर राखि कऽ ई निर्णय कैने छी । इएहटा अहांक आग्रह अछि जे हम मानि नै सकब...।

पत्नि : अपन वेटि राधोके एक नजरि नै देखथिन्ह ! रामेश्वर चलैत-चलैत रुकि जाइत अछि ।

रामेश्वर - हमरा कमजोर करबाक प्रयास नै करथुन । वेटीस हमर माफी कहि देथिन । हम केना क ओकर मुह देखि सकबै । मीत, आब नै । बस छुटके  समय भऽ गेलै । कहल सुनल माफ करब ।

**रामेश्वर तेजीस आगनसं नीकलि जाइत अछि । एम्हर पति-पत्निक आंखिमे नोर डबडबा जाइत छैक । मेघ गरज लगैछ । लौकाक संग पानि पड़ब प्रारंभ भऽ जाइछ ।**

**अन्हार**

## दृश्य - ३

**पुर्ववत पक्की घर । गर्मिक समय । इजोरिया राति । आंगनमे चौकी पर पुरुष-१ सुतल । प्रकाशक मद्धिम घेरा पुरुष-१ पर पड़ैत । फोंफ कटबाक स्वर । पृष्टभूमिमे एकटा गीतक बोल अभरैत छै-अपना किशोरी जीक` चरण दबैबै हे, हम मिथिलेमे रहबै, सागपात मुरी मुरी दिवस गमएबै हे मिथिलेमे रहबै....। गीतक बोल बेर-बेर प्रतिध्वनित होइछ । पुरुष-१क कछमछी स्पष्ट देखल जा सकैछ । स्थिति एहन जेना कोनो सपना देखैत हो । पुरुष-१ के नीन्न उचटि जाइछ । जोरसं चिचिया उठैछ - 'मीत !' घामे पसीने नहा जाइछ । चारु भर तकैत अछि । उठि कऽ बेसब्रीसं टहल लगैछ घरस पत्नि धरफराइत आंगनमे अबैत छथि । पतिके व्यग्र भऽ टहलैत देखि लगमे जा पुछैत अछि ।**

पत्नि - अएं, की भेल ! जोरसं किए चिचिअलहुं ।

पुरुष - १ : की कहु रधियाके माय । पहिने पानि आनु । घेंटमे पानिक बुन्न जाएत तखने गरा खुजत ।

**पत्नि घरमे पैसैत छथि आ कनेक कालमेलोटामे पानि लेने बहराइत अछि । लोटा पुरुष - १ क आगां बढा दैत छैक । पुरुष-१ लोटा लऽ ठाढ़े ठाढ़ सौंसे लोटाक पानि पीबि जाइत अछि । खाली लोटा पत्नि दिश बढ़ा  गमछासं मुंह पोछैत फेरसं चौकीपर बैसि जाइत अछि । पत्नि सेहो बगलमे बैसि जिज्ञाशास पुरुष-१क अनुहार दिश तकैत अछि ।**

पुरुष - १ : (किछु आश्वस्त होइत) रधिया माय । मीत मोन पडि गेल । वुझायल जेना मीत एत्तहि कतौ पहिने जकां संगे गीत गबैत आबि रहल अछि ।

पत्नि -१ (गंभीर भऽ) उएह गीत ने जे अहां दुनू गोटे मीलि कऽ बरोबरि गबैत रहैत छली-मिथिलेमे रहबै ।

पुरुष - १ : हं, रधिया माय, इएह गीत । केना बइमनमा हमरा जिनगी भरि संगे रहबाक वचन दैयो कऽ संग छोड़ि देलक । वेटी-रोटी सभमे एक दोसरक साथ ।

पत्नि - हमसभ कहां आन वुझलिऐ हुनका । जतेक अहांके अधिकार एहिघरपर, बालबच्चा पर अछि, ततबे त हुनको रहैन कि ने ।

पुरुष - १ : सएह त । जखन रधिया इस्कूल जाएमे हनछीन करए त केना कऽ अपने दुलारि, कन्हापर लादि कऽ इस्कूल पहुंचबै । हम भले विजनीस, वेपारके लेल गामे-गाम बौआइ । मीत घरके सभ भार उठा लैक ।

(हिंचुक' लगैछ)

पत्नि - वात त ठीकें छै रधियाके बाबू । लेकिन जे हमरा सभके छोडि क' चलि गेल, से चलि गेल । कहां भेलै एतेक रोकैअ रुकि जाइ ।

पूरुष - १ : कएक पुश्ताक सम्बन्ध केना एक्के रातिमे मीत तोड़ि देलकै ।

पत्नि : हं, सेत भेलै ।

पुरुष - १ : मधेश आन्दोलनमे हमरे संगे मीत सडक पर उतरल रहय । जोर-जोरस नारा लगब'मे हमरा साथ दिअए ।

पत्नि :- हम देखने नै रहिऐ कहुं ।

पुरुष - १ : मीतके दुख एहि बातके नै जे ओकरा पहड़िया कहै । ओकरा दुख जे ओ आब पहड़िया केना भऽ गेल । कएक पुस्ता तराईमे विता देने रहै, एहि ठामके रीति रिवाजमे मीलि गेल । चौविसो घंटा घरमे मैथिली बजै छल, फेर पहड़िया केना भऽ गेल !

पत्नि - हेटौडा बाली त एहन निछक्क मैथिली बजै जे हमरो लाज भ जाए । केहन वहिनपा रहै हमर ।

पुरुष - १ : सएह देखूने । रधियाके विआहमे हम-अहां किछु वुझलिऐ । जेना पहिल सन्तानके विआह रहै, मन आउल-पाओल करैत । सभ मीते सम्हारलक ने ।

पत्नि - भतखईमे एक रत्ती दही कमि गेलै आ समधी मड़बा पर सं उठि गेलखिन्ह त केना कऽ रामेश्वर बाबू हाथ जोड़ि-जोड़ि कऽ मनौने रहथिन्ह । अहां त नुका गेल रही....।

(दुनूक हल्लुक हंसी सुनि पड़ैछ )

पुरुष ( १ : हं, आ रधियाके विदाई काल...। हमरा आंखिमे नोर त आएल रहै, लेकिन भोकासी पाड़ि कऽ कनै मीत..। पालने-पोसने, दुलारने रहै ने...।

(पुनः आवाज फंसल जाइत छै)

पत्नि - हे, आब सुति रहु । जतेक मोन पड़त ततबे दुख हयत । फेर भोरे पटना सेहो जाएके है ने ।

पुरुष - १ : सुतके मन त हमरो होइअ । लेकिन मीतके विना एक्को रत्ती नीक नै लगैअ रधियाके माय । की करु !

पत्नि :- कहुना मन जांति कऽ सुति रहु । हुनका जाहीके छलनि, चलि गेलाह । जहियास गेलाह, अहांक हालत एहने अछि ।

पुरुष - १ : की गेलाह । औन-पौन दाममे घर-कराडी वेचि कऽ राता-रात पड़ा गेलाह ।

पत्नि : छोड़ू, ओ एसकरे त नई ने पड़एलाह । बहुतो लोक एत्त सं हेटौडा, काठमाण्डू भागि गेल अछि । ओहिना कतौ एना छोड़ि कऽ नहि जाइए ने ।

पुरुष - १ : हं सेत मीतो के बेर-बेर धमकी, अपहरण कऽ लेबौ, धीआपूताके उठा लेबौ, चन्दा दे, इ दे, उ दे... । बड़ सतौने रहै कहांदन ।

पत्नि : तखन, की करितथिन्ह । अपनो त सएह ने कहै छलाह ।

पुरुष १ : हे, एकटा बात छै । मीतके जाएके मन नै रहै । हटौडा वाली डेरा गेल रहै । लोक धमाधम घर वेचि कऽ जाए लगलै त ओहो जीद कऽ देलकै । तै स मीत हमरा छोडि कऽ चलि गेल..।

**सुतबाक हेतु पुनः खाटपर ओंघरा जाइत अछि । पत्नि घरमे चल जाइत अछि । पुरुष १क फोंक काटब शुरु भऽ जाइछ ।**

**अन्हार**

# दृश्य - ४

**प्रकाश । मकानपूर्ववत । भिनसरबा । चिड़ैचुनुमनक चहचहाहट । आंगनमे मधुर लालिमा पसरल । पुरुष - १ एखनो धरि सुतले । पुनः गीतक बोल पृष्भूमिमे अभरैत छैक - अपना किशोरीजीके चरण दबएबै हम, मिथिलेमे रहबै...। फेरस पुरुष-१ चौकि उठैत अछि । खाट पर बैसि चारुकात तकैत अछि । जोरसं पत्नि के सोर पाड़ैत छैक ।**

पुरुष - १ : हे सुनैछी ।

**पत्निक उत्तर नहि अवैछ ।**

(कनेक जोरसं) रधिआक माय, कत्त छी । जल्दी आउ !

**पत्नि कनेक तेजीस आंगनमे प्रवेश करैछ । स्थितिक आकलन करबाक प्रयास करैछ ।**

हे, हम त फेर मीतके आवाज सुनलहुं । हम आब एक्को क्षण एत्त नै रहब ।

पत्नि - कहलहुं नै, मनथीर कर' पड़त । आइ कतेक दिनस एहने ताल अछि ।

पुरुष - १ : की थीर करब । जखने आंखि लगैए, मीतक आबाज माथमे घनक' लगैए - हम मिथिलेमे रहब । की खाक रहब । सभ किछु छोडि कऽ त चलि गेलहुं ।

पत्नि - (किछु अकानैत) आबाज त एखनो आबि रहल अछि ।

पुरुष - १ : (चौंकि) अए, ठीके ई त मीतेके आवाज अछि । अहुं सुनलिऐ नै, ई केना भऽ सकैछै । (किछु सोचि) जं ई नै भऽ सकैछै त हम एखन जागल छी । जागलमे कोन सपना ।

**पुरुष-१ व्याकुल भऽ जाइछ ।**

रधिआके माय। हमर मीत घुरि आएल लगैए।

पत्नि - अहां राति सुति नै सकल छी आ हिक मीतेपर टंगा गेल है। से अनको गायल गीतके मीतेके स्वर वुझ' लागल छी।

पुरुष - १ : नै, नै, ई मीते के स्वर छल।

पत्नि - हम पानि आनि दैत छी। कुरा करु, गछुली पोखरि भऽ आउ। मन ठंढा जाएत तखन पटनो जएबाक अछि।

**पत्नि घरमे पैस चाहैत अछि कि उएह स्वर पुनः अभरैत छैक - हम मिथिलेमे रहबै। पत्नि उनटे पयर घुरि जाइत अछि। कखनो अपन घरबलाके आ कखनो खुजल दरबज्जादिश ताक' लगैत अछि। दरबज्जास हाथमे सुटकेस लेने रामेश्वरक प्रवेश होइछ। दुनू पति-पत्नि आश्चर्य आ हर्ष विभोर नेत्रैं रामेश्वरके देखैत छैक। रामेश्वर सुटकेस राखि वांहि पसारि पुरुष-१ के छातीसं सटा हिंचुक' लगैछ। दुनूक हिंचुकब स्पष्ट सुनाई पड़ैछ। पत्नि आंखिमे आएल नोरके आंचरसं पोछैत घरमे चलजाइत अछि आ हाथमे भरल पानि लोटा लेने अबैत अछि।**

पत्नि - भेलै, आबो त गाला छोड़ू। पयर धोब' दिऔन।

**दुनू किछु क्षणक बाद फराक होइत अछि।**

रामेश्वर - (भरल आंखिए) मीत, हम घुरि अएलहुं।

पुरुष - १ : हमरा विश्वास छल, हमर मीत हमरा धोखा नै देत। ओ जरुर घूरत। रधियाक माय, देखलिऐ, हम कही ने !

रामेश्वर - हमही नहि ज्योतिके माइयो छथि। ककरो आंखिमे नीन्न कहां होइ। दिन राति राधा, वहिनपा...।

पत्नि - अए, कहा छथिन्ह वहिनपा।

रामेश्वर - संकोचे वाहर ठाढ़ छथि। कहैत छलीह हमरे जीदे अहांके मीत छोड़ पड़ल। की कहैत हयताह।

पुरुष - १ : रधिआक माय, जाउ जल्दी हुनका लबियौन।

**पत्नी झटकारि क आगनस बहराइत अछि।**

हुनका नै वूझल छै - ई घर, आंगन हमर सभवाल-वच्चा हुनक ऋणी छन्हि। संकोच कथीके। जेहन समय रहै-केओ विचलित भऽ सकैत छल।

(रामेश्वरस) आउ मीत, बैसु एत्त।

रामेश्वर - (वैसैत) एखन बैसबे करब। रहबाक जोगाडो त करबाक अछि।

पुरुष - १ जोगाड़ होइत रहतै। ई घर अहींक अछि। हम दू परानी। गामक दोहटा। किछु दिन गामो पर रहि सकैछी। मीत, अहां घूरि अइलिऐ हमरा लेल सभ किछु भेटि गेल अछि।

रामेश्वर - हं, हमर जेठका बेटा कहैत छल, बाबूजी जाइ त छी। फेर कतौ धम्की, त्रास, चन्दा अथवा दुरव्यवहार करत त। हम कहलिऐ-बाउ, अपन मायक कोरमे जिनगी वितएबाक बचन हम खएने छी। हमर धरतीक सम्वन्ध ककरो धम्की, त्रास बन्दुकसं नै टुटि सकैत छै। केओ अपन घर-आंगन स कतौ

पड़एतै । हम ठकि हड़बरा गेल रही मीत । हम किशोरीजीके सेवास वंचित हयबाक पाप माथपर उठा लेने रही । (भावुक भऽ जाइछ)

**तावत पत्नि ज्योतिक मायके पांजरमे पंजियौने आंगनमे प्रवेश करैछ । हाथ जोड़ि पुरुष - १ के नमस्कार करैछ । पुरुष-१ उठि कऽ अहलादपूर्वक खटिआपर बैसबैत छैक ।**

पुरुष - १ : सांच बात छै - संक्रमणक किछु समयमे परिवर्तनक गलत अर्थ लगा किछु गोटे अपना लेल तकर उपयोग कएलक अछि । लड़ाई व्यक्ति स नहि, नेपालक शासकीय सत्तास छै जे एक्केटा नेपालमे नेपालीक पहिचानके बांटिकऽ देखैत रहल । चोट ओत्त हयबाक चाहैत छलै । जे से, आब अहां दुनू हाथमुंह धोउ, फ्रेश होउ । हमहुं फ्रेश होइछी । आ आब दुनू मीत मिल कऽ फेर सं दरबज्जा पर जमैत छी - अपना किशोरीजीके चरण दबएबै हे, मिथिलेमे रहबै, साग पात मुरि मुरि समय गमएबै हे मिथिलेमे रहबै...... ।

**'दुनू गोटे ई गीत गबैत गबैत मंचक आगां आबि जाइछ ।**

**मंच अन्हार भऽ जाइछ ।**

## <u>पटाक्षेप</u>